रूस की बाबा यागा–1

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Roos Ki Baba Yaga (Baba Yaga of Russia)
Cover Page picture : Hut of Baba Yaga
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Russia

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

रूस की बाबा यागा 7

1 बाबा यागा का जन्म 9

2 अक्लमन्द वासिलीसा और बाबा यागा 17

3 सुन्दर वासिलीसा 36

4 जादुई हंसिनी 56

5 फ़ैनिस्ट बाज़ 64

6 मेंढकी राजकुमारी 81

7 ज़ारेवना मेंढकी 97

8 मार्या मोरेवना 112

9 पाताल की ज़ारेवनाज़ 137

10 बाबा यागा और ज़मोरीशैक 171

11 राजकुमार डेनियल के हुक्म से 179

12 शूफ़िल फ़िल्यूष्का 190

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

रूस की बाबा यागा

बाबा यागा रूस देश की लोक कथाओं का एक बहुत ही मुख्य चरित्र है। यह दुनियॉ की कई लोक कथाओं के कई मुख्य चरित्रों से बहुत ही अलग और एक अजीब ही तरह का चरित्र है। बाबा यागा एक जादूगरनी है। वह अक्सर लोगों के लिये बुरी है और लोग उससे बहुत डरते हैं पर कुछ कहानियों में वह कुछ लोगों की सहायता भी करती है।

इसकी टॉगें हड्डियों की है और इसके दॉत लोहे के हैं। यह एक झोंपड़ी में रहती है। इसकी झोंपड़ी एक बहुत बड़े मुर्गे की टॉगों के ऊपर खड़ी है। उसके चारों ओर एक चहारदीवारी है जिसमें बारह खम्भे लगे हैं जिनमें से ग्यारह खम्भों पर आदमियों की खोपड़ियॉ लगी हुई हैं। यह झोंपड़ी उस कम्पाउंड में चलती फिरती भी है। रात को उन खम्भों में रोशनी जल जाती है और उस रोशनी से उन खोपड़ियों की ऑखें चमकने लगती हैं। उसी से उसके घर में रोशनी होती है।

उस चहारदीवारी में एक दरवाजा है जिसके खम्भे एक मरे हुए आदमी की टॉगों के हैं। उस दरवाजे के कुंडे मरे हुए आदमी की बॉहों के हैं। और उस दरवाजे के ताले मरे हुए आदमी के दॉतों के हैं। यह दरवाजा किसी को अन्दर नहीं आने देता।

दरवाजे के अलावा इसका यह घर और भी कई चीज़ों से सुरक्षित है। इसके घर के कम्पाउंड में बिर्च का एक पेड़ खड़ा है जो किसी भी आने वाले की ऑखें निकालने के लिये हमेशा तैयार रहता है। इसके पास एक कुत्ता है जो हर आने वाले को फाड़ खाने के लिये तैयार रहता है। इसके ऑगन में एक बिल्ली रहती है जो हर आने वाले को खरोंचने के लिये तैयार रहती है।

इसकी सवारी भी अजीब है। यह इधर उधर जाने के लिये एक ओखली का इस्तेमाल करती है। जब यह उसमें बैठ कर उड़ती है तो इसके हाथों में एक मूसल रहता है और यह अपने पीछे के रास्ते को झाड़ू से साफ करती जाती है ताकि इसके जाने के रास्ते के सब निशान मिट जायें। यह अपने शिकार को ओखली में बिठा कर हवा में उड़ा देती है और फिर मूसल ले कर उसका पीछा करती है। इसके लोहे के दॉत हैं जिनसे यह फिर उनको खा जाती है। तो ऐसी है बाबा यागा।

इसकी कहानियॉ बहुत सारी हैं और बहुत ही मजेदार हैं। आज इस पुस्तक में हम इसी की कुछ लोक कथाऐं हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं।

हमें विश्वास है कि रूस की ये लोक कथाऐं तुम लोगों को बहुत पसन्द आयेंगी और आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में ये लोक कथाऐं भी अपना स्थान बना पायेंगी।

1 बाबा यागा का जन्म[1]

स्लैविक लोगों[2] की दंत कथाओं में बाबा यागा या तो एक जंगली स्त्री है या फिर एक राक्षसी है जो जादू जानती है। रूस की लोक कथाओं में इसकी बहुत सारी कथाऐं मिल जाती हैं।

उसकी ये कथाऐं शायद उत्तरी रूस और फ़िनलैंड के जंगलों में रहने वालों से आयी हैं जो वहॉ बहुत सालों पहले रहते थे। वहॉ यागा नाम की पत्थर की मूर्तियॉ पायी जाती हैं। रूस के सिपाही लोग जो वहॉ आते थे वे उनको सुनहरी बाबा[3] कर कर पुकारते थे।

अक्सर इन मूर्तियों की अपनी झोंपड़ियॉ होती थीं और पेड़ों के तनों पर बनी होती थीं जिनके अन्दर लोगों द्वारा चढ़ायी गयी भेंटें रखी रहती थीं। ये वहॉ के उन्हीं लोगों की देवी की मूर्तियॉ होती थीं जा उनसे सलाह मॉगने आते थे।

इस देवी को यह ताकत भी थी कि वह यह निश्चय कर सके कि लोगों के साथ क्या होना है जैसे कि बाबा यागा को भी यह ताकत मिली हुई है।

---

[1] Origin of Baba Yaga – Taken from the Web Site : http://myths.e2bn.org/mythsandlegends/origins117-baba-yaga-and-vasilisa-the-fair.html

[2] Modern Slavic people are classified into West Slavs (chiefly Poles, Czechs and Slovaks), East Slavs (chiefly Russians, Belarusians, and Ukrainians), and South Slavs (chiefly Serbs, Croats, Bosniaks, ethnic Macedonians, Slovenes, and Montenegrins of the Former Yugoslavia as well as Bulgarians).

[3] Golden Baba. Baba in Russian language is a woman who is of marriageable age.

वहाँ की भाषा में "बाबा" का मतलब है कोई ऐसी स्त्री जो शादी के लायक बड़ी हो। पर ज़्यादातर सब कथाओं में इसको डरावनी, जंगली, भयानक रूप से आदमी को खाने वाली भूखी बूढ़ी जादूगरनी[4] के रूप में दिखाया जाता है। इसकी "वासिलीसा और बाबा यागा"[5] की कथा सबसे ज़्यादा मशहूर और लोकप्रिय कहानी है।

बाबा यागा के इन कथाओं में होने की वजह

बाबा यागा किसी भी आदमी की किस्मत हो सकती है। जब कोई उसकी झोंपड़ी में घुसता है तो वहाँ उसका जीना या मरना इस बात पर निर्भर करता है कि वह वहाँ क्या कहता या क्या करता है।

कुछ का कहना है कि इन लोक कथाओं में बाबा यागा की अक्लमन्दी का अक्सर बुरा पहलू ही दिखाते हैं।[6] इसके अलावा इन कथाओं में भी यह केवल बदसूरत जादूगरनी ही नहीं है बल्कि इसके पास ऐसी ताकत है जिससे लोगों को डरना ही चाहिये और डर कर इसकी इज़्ज़त करनी ही चाहिये।

बहुत सारी पुरानी कथाओं में बूढ़ी स्त्रियाँ अक्लमन्द होती थीं और अपने समाज और जाति की परम्पराओं की रखवालिनें होती थीं

[4] Translated for the word "Witch"

[5] Read this folktale in this book. This is the first folktale given here.

[6] It means that somebody uses his or her wisdom for some bad purpose.

क्योंकि अब उनको अपने बच्चे तो पालने नहीं होते थे सो वे सारे समुदाय की मॉ बन जाती थीं।

यह माना जाता था कि ये बूढ़ी स्त्रियॉ जन्म और मृत्यु के रहस्यों को बहुत अच्छी तरह समझती थीं। ये रोगों को ठीक करती थीं और इसी लिये मरते हुए लोगों की देखभाल भी करती थीं। कभी कभी इनके पास ज़िन्दा करने की और मारने की ताकत भी होती थी। जादूगरनी का मतलब होता है "अक्लमन्द"।

बाद में **12**वीं सदी से जब लोगों को बुरी चीज़ों[7] को हटाने के लिये जादू में विश्वास हो गया तो लोग इन अक्लमन्द स्त्रियों के दी हुई दवाओं ओर सलाहों से डरने लगे और इनसे नफरत करने लगे।

बहुत सारे लोगों को मार डाला गया और इन जादूगरनियों और अक्लमन्द स्त्रियों के बारे में लोगों के विचार बदल गये। अब ये स्त्रियॉ डरावनी, बदसूरत, बुरी, बुरा जादू डालने वाली हो गयी थीं जैसे कि आजकल की कथाओं में दिखायी जातीं हैं।

हालॉकि बाबा यागा को एक डरावनी बूढ़ी जादूगरनी की तरह से ही दिखाया जाता है फिर भी वह एक बहुत ही मजेदार चतुर और ताकतवर स्त्री है। वह अक्सर बेरहम है पर कभी कभी दयावान स्त्री भी बन जाती है।

[7] Translated for the word "Evil"

वह अभी भी अपनी पुरानी दंत कथाओं जैसी अक्लमन्द और आज की जादू और परियों की लोक कथाओं की जादूगरनी के बीच की जैसी है।

बाबा यागा का घर

और दूसरी जादूगरनियों की तरह से बाबा यागा भी उड़ सकती है पर वह उनकी तरह से झाड़ू इस्तेमाल नहीं करती बल्कि अपने उड़ने के लिये वह एक बहुत ही बड़ी ओखली में बैठती है जिसमें जब वह बैठती है तो उसके घुटने करीब करीब उसकी ठोड़ी से छू जाते हैं। उसमें बैठ कर वह जंगल के इस पार से उस पार तक या फिर उसके ऊपर बहुत तेज़ उड़ जाती है।

उस ओखली को चलाने के लिये उसके दॉये हाथ में मूसल रहता है। जब वह उड़ती है तो अपने पीछे का रास्ता साफ करने के लिये वह चॉदी के बिर्च के पेड़ की झाड़ू इस्तेमाल करती है। उसको वह अपने बॉये हाथ में रखती है।

जहॉ भी वह होती है वहॉ बहुत तेज़ हवा चलती है, पेड़ बहुत ज़ोर से हिलते हैं और पत्तियॉ हवा में उड़ने लगती हैं।

उसका घर बिर्च के पेड़ों के जंगल में काफी अन्दर जा कर है और वह जगह भी ढूँढनी बहुत मुश्किल है जब तक कि कोई जादू का धागा या पंख या फिर गुड़िया उसके घर का रास्ता न दिखाये।

उसकी झोंपड़ी की भी अपनी एक शक्ल है। वह एक बहुत बड़े मुर्गे की टॉगों पर खड़ी हुई है और इधर उधर चल फिर सकती है। उसकी खिड़कियॉ उसकी ऑखों का काम करती हैं। उसका ताला दॉतों से भरा हुआ है।

उसकी झोंपड़ी के चारों तरफ बाड़ लगी हुई है जिसमें लट्ठे लगे हुए हैं। ये लट्ठे आदमियों की हड्डियों के बने हुए हैं। उनके ऊपर आदमियों की खोपड़ियॉ रखी हुई हैं जिनकी ऑखों के गड्ढों में आग जलती है जिससे सारे जंगल में रोशनी होती रहती है।

अक्सर भूखे कुत्ते, बुरे नीच मुर्गे या हंस या काली बिल्लियॉ उसकी झोंपड़ी की रक्षा करते रहते हैं।

उसकी झोंपड़ी वहीं खड़ी खड़ी भी घूम सकती है और जंगल में भी इधर उधर आ जा सकती है। वह ऐसी आवाज करती है जिसको सुन कर लोगों का खून जम जाता है।

ज़्यादातर लोग जो उसके घर जाते हैं वहॉ से वापस नहीं आते क्योंकि बाबा यागा पहले उनको नहलाती है फिर खाना खिलाती है और फिर एक बहुत बड़ी कलछी के ऊपर रख कर उनको ओवन[8] में रख देती है।

[8] An oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance, and most commonly used for cooking. Kilns and furnaces are special-purpose ovens, used in pottery and metalworking, respectively.

इसकी बहुत सारी कहानियों में इसके घर जाने वाले लोगों की किस्मत उनके अपने हाथों में होती है कि वे इसके साथ कैसे बर्ताव करते हैं।

इसके यहॉ आया हुआ मेहमान इसके ओवन में आ भी सकता है और नहीं भी आ सकता है यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह मेहमान उसकी उस कलछी पर किस तरीके से बैठता है जिस कलछी से यह उसको ओवन में रखती है।

हालॉकि बाबा यागा दस आदमियों के खाने के बराबर खाना खाती है पर फिर भी वह बहुत ही दुबली पतली है जैसे हड्डियों का ढॉचा। उसकी नाक बहुत लम्बी और मुड़ी हुई है।

लोग बाबा यागा की सहायता मॉगते ही क्यों हैं?

यह सुनने में तो कुछ अजीब सा लगता है कि कोई क्यों तो बाबा यागा को ढूँढेगा और कोई क्यों उसकी झोंपड़ी में जायेगा और कोई क्यों उसकी सहायता मॉगेगा।

यह सब इसलिये होता है क्योंकि बाबा यागा बहुत अक्लमन्द है और बहुत चतुर है। वह सब कुछ जानती है और सब कुछ देख सकती है। वह उन सबके साथ पूरा सच बोलती है जो उससे पूछने की हिम्मत रखते हैं।

वह प्रकृति के पॉचों तत्वों[9] पर राज करती है। उसके वफादार नौकर हैं सफेद घुड़सवार, लाल घुड़सवार और काला घुड़सवार। वह उनको "मेरी सुबह" "मेरे सूरज" और "मेरी अँधेरी रात" कह कर बुलाती है। क्योंकि ये तीनों सुबह, दिन और रात को अपने कब्जे में रखते हैं।

कुछ उसके और भी दोस्त हैं जो उसके बड़े गहरे दोस्त हैं – एक तो तीन बिना शरीर वाले हाथों के जोड़े हैं जो अचानक ही प्रगट हो कर उसका कहा मानते हैं। दूसरा उसका एक चरवाहा है और तीसरा उसका जादूगर कोशचेव है जिसको मौत नहीं आती[10]।

कभी कभी कोई लड़की या लड़का उसकी झोंपड़ी में अक्ल या ज्ञान या सत्य या सहायता की खोज में आ जाता है तो बाबा यागा उसको या तो सलाह दे कर या हथियार दे कर या उनके कामों को आसान बना कर उनकी सहायता करती है।

बाबा यागा वासिलीसा की सहायता उसको रोशनी दे कर करती है क्योंकि वह अपने डर का सामना करती है और अपने अन्दर की आवाज यानी गुड़िया की आवाज सुनती है। यह गुड़िया वासिलीसा

[9] Nature's five elemrnts – Eart, Air, water, Fire and Ether

[10] Koshchev, or Koschei, or Koshchey is a Slovac folktales character. Koschev, means skeleton, is an archetypal male antagonist, described mainly in Polish, Russian, Ukranian and Czeck folktales as a very old and ugly-looking man. He is also known as "Koschei, the Deathless". Vitali Vitaliev describes him in his book "Granny Yaga" (or Baba Yaga) as a tall, although in excellent health, but still extremely and almost inhumanly thin.

की अन्दर की आवाज भी है और उसकी मॉ का आशीर्वाद भी है। वह उसको बच्चे से बड़े होने में सहायता करती है।

और दूसरी लोक कथाओं की तरह से इस कहानी से भी एक सबक मिलता है – अगर तुम अच्छे हो और अक्लमन्द हो अपने बड़ों की बात सुनते हो और अपने अन्दर की बात सुनते हो तो तुमको उसका इनाम जरूर मिलेगा।

पर अगर तुम बेरहम हो और किसी पर दया नहीं करते जैसे कि वासिलीसा की सौतेली मॉ और उसकी बेटियॉ थीं तो तुम जल जाओगे।

2 अक्लमन्द वासिलीसा और बाबा यागा[11]

यह कहानी बाबा यागा की बहुत सारी लोकप्रिय कहानियों में से एक बहुत ही प्रसिद्ध कहानी है।

एक बार एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया पत्नी अपनी बेटी वासिलीसा[12] के साथ रहते थे। एक बार वह बुढ़िया बहुत बीमार पड़ी तो एक दिन उसने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "बेटी मैं बहुत जल्दी ही मरने वाली हूँ इसलिये जो मैं कहती हूँ तू उसको ध्यान से सुन।"

इसके बाद उसने अपनी चादर के नीचे से एक छोटी सी गुड़िया निकाली और उसे वासिलीसा को देते हुए कहा — "देख तू इस गुड़िया को रख और इसकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करना और किसी और को इसके बारे में बताना नहीं।

जब तुझे किसी चीज़ की जरूरत पड़े तो इस गुड़िया को कुछ खाना देना और उससे सलाह माँगना। यह तुझे बतायेगी कि तुझे क्या करना है।"

इसके बाद माँ ने अपनी बेटी को प्यार से चूमा और आँखें बन्द कर ली। उसने अपनी आखिरी साँस ले ली थी।

---

[11] Vasilissa the Wise and Baba Yaga – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[12] Vasilissa, or Vasilisa

काफी समय तक तो बूढ़े ने अपनी पत्नी का दुख मनाया पर फिर दूसरी शादी कर ली। उसकी दूसरी पत्नी एक विधवा थी और उसकी अपनी दो बेटियॉ थीं। उसकी दोनों बेटियॉ बहुत ही बुरी थीं। उनको खुश करना बहुत मुश्किल काम था।

वासिलीसा इतनी सुन्दर थी कि उसकी दोनों सौतेली बहिनें उससे बहुत जलती थीं। वे और उनकी मॉ तीनों उसको हमेशा ही सताती रहती थीं। वे उससे सुबह से शाम तक काम कराती रहती थीं और फिर भी उसको डॉटती रहती थीं।

वह हमेशा यह चाहती थीं कि हवा से उसका चेहरा खराब हो जाये या फिर धूप में सख्त हो जाये या फिर बारिश में काला पड़ जाये।

पर फिर भी वासिलीसा उन सबके ये ताने चुपचाप सहती रहती और अपना सारा काम समय पर पूरा कर लेती। उसकी सौतेली बहिनें क्योंकि कोई काम नहीं करती थीं वे बहुत मोटी और बदसूरत होती जा रही थीं जब कि वह दिन ब दिन ही नहीं बल्कि हर घंटे सुन्दर और सुन्दर होती जा रही थी।

उसकी गुड़िया उसकी जब तब बहुत सहायता करती। रोज सुबह वासिलीसा गाय का दूध दुहती और उस गुड़िया को देती और कहती —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूॅ

और रात को जब सब सो जाते तो वह अपना दरवाजा बन्द कर लेती और गुड़िया को अपनी बॉहों में झुलाती। वह उसको अपने खाने में से बचा हुआ खाना खिलाती और फिर गाती —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूँ

फिर वह उस गुड़िया से कहती कि वह कितनी दुखी थी। कैसे उसकी सौतेली मॉ और सौतेली बहिनें उसको हमेशा डॉटती रहतीं। वह गुड़िया पहले तो खाती पीती फिर उसको तसल्ली देती और उसका रोज का काम भी करा देती।

जब वासिलीसा छाया में बैठ कर अपने बालों में फूल गूँधती तो वह गुड़िया उसकी फूलों की क्यारियॉ साफ कर देती। उसकी रसोईघर में आग जला देती। उसके घर के फर्श झाड़ बुहार देती। उसका नाश्ता बना देती। और वह भी सब पलक झपकते ही।

यही नहीं बल्कि वह गुड़िया उसको कुछ ऐसी पत्तियॉ भी देती जिनको लगाने से उसकी खाल सूरज की धूप, हवा और बारिश से बची रहे। इससे वह और ज़्यादा सुन्दर होती जा रही थी।

एक दिन पतझड़ के मौसम में वासिलीसा का पिता बाजार गया। उसको वहॉ कई दिन तक रहना था। उस रात जब अँधेरा हो गया तो बहुत ज़ोर की बारिश पड़ने लगी। बारिश की बूंदें खिड़कियों पर ज़ोर ज़ोर से पड़ रही थी। हवा भी बहुत तेज़ बह

रही थी। वह हवा गुफाओं में जा कर बहुत तेज़ आवाज कर रही थी।

सौतेली मॉ ने तीनों लड़कियों को एक एक काम सौंपा। सबसे बड़ी वाली लड़की को उसने कढ़ाई का काम दिया। दूसरी बेटी को उसने मोजा बुनने का काम दिया और वासिलीसा को उसने सूत कातने का काम दिया।

जहॉ वे तीनों लड़कियॉ बैठी बैठी अपना काम कर रही थीं वहॉ उनकी मॉ ने कोने में केवल एक बिर्च के पेड़ की शाख जलती छोड़ दी और सोने चली गयी। कुछ देर तक तो वह शाख जलती रही पर फिर अचानक वह बुझ गयी।

दोनों सौतेली बहिनें चिल्लायीं — "अब हम क्या करें। चारों तरफ तो अॅधेरा ही अॅधेरा है और हमको अपना काम खत्म करना है। किसी को तो रोशनी लानी ही पड़ेगी।"

सबसे बड़ी बेटी बोली — "मैं तो बाबा यागा के घर जा नहीं रही।"

दूसरी बेटी बोली — "मैं भी उसके घर नहीं जा रही।"

तो दोनों एक साथ बोलीं — "तब तो वासिलीसा को ही उसके घर जाना पड़ेगा और उसके घर से रोशनी लानी पड़ेगी।"

ऐसा कह कर उन दोनों ने अपनी सौतेली बहिन को बाबा यागा के घर से रोशनी लाने के लिये धक्का दे कर बाहर निकाल दिया।

बेचारी वासिलीसा पहले तो जानवरों के बाड़े में गयी वहॉ उसने कुछ खाने के टुकड़े अपनी गुड़िया को खिलाये और बोली —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूॅ

और फिर उसने उसको बताया कि उसकी सौतेली बहिनों ने उसको बाबा यागा के घर जा कर रोशनी लाने को कहा है। वह चुड़ैल जादूगरनी तो उसको यकीनन खा ही जायेगी।

उस छोटी गुड़िया ने अपना खाना शान्ति से चुपचाप खाया। खाना खाने के बाद उसकी दोनों ऑखें दो चमकीली जलती हुई मोमबत्ती की तरह से चमकने लगीं।

वह बोली — "डरो नहीं वासिलीसा। तुम मुझे अपने पास ही रखो और बेधड़क हो कर तुम बाबा यागा के पास जाओ। बाबा यागा तुमको कोई नुकसान नहीं पहुॅचा सकती।"

वासिलीसा ने गुड़िया को अपनी जेब में रखा और अॅधेरे जंगल की तरफ चल दी। वहॉ उसके चारों तरफ के पेड़ ऊॅचे ऊॅचे खड़े हो गये। अब आसमान में न तो चॉद और न ही तारे दिखायी दे रहे थे।

अचानक पता नहीं कहॉ से एक घुड़सवार वहॉ से गुजरा। उस घुड़सवार का मुॅह बिल्कुल सफेद था। उसका शाल[13] भी सफेद था। उसका घोड़ा भी सफेद था और

[13] Translated for the word "Cloak". A fashionable rich or plain cloth worn over the dress to cover or to keep oneself warm. It may be short up to the waist or long up to the ankle. See its picture above.

उसकी लगाम भी सफेद थी जो अँधेरे जंगल में उजली उजली चमक रही थी।

जैसे ही वह वहाँ से वह गुजरा तो सुबह की रोशनी पेड़ों से छन छन कर आने लगी और वासिलीसा उस रोशनी में चलती चली गयी।

तभी एक दूसरा घुड़सवार अपना घोड़ा दौड़ाता आया। उसका चेहरा लाल था। उसका शाल भी लाल था। उसका घोड़ा भी लाल था और उसके घोड़े की लाल लगाम उस सुबह की रोशनी में लाली फैला रही थी।

जैसे ही वह लाल चेहरे वाला घुड़सवार वहाँ से गुजरा तो लाल लाल सूरज निकल आया और उसकी गर्म गर्म किरनें वासिलीसा के चेहरे को छूने लगीं। वे किरनें उसके बालों पर पड़ी ओस की बूँदों को सुखाने लगीं।

वासिलीसा बिना आराम किये जंगल में सारा दिन चलती रही। शाम तक चलते चलते वह जंगल में एक खुली जगह में आ गयी।

उस खुली जगह के बीच में मुर्गी के पंजों पर लकड़ी की एक झोंपड़ी खड़ी थी। उस झोंपड़ी के चारों तरफ एक चहारदीवारी लगी हुई थी जिस पर आदमियों की खोपड़ियाँ सजी हुई थीं।

उस चहारदीवारी में एक दरवाजा था जिसके डंडे एक मरे हुए आदमी की टॉगों के थे। उस दरवाजे के कुंडे मरे हुए आदमी की बॉहों के थे और उस दरवाजे के ताले मरे हुए आदमी के दॉतों के थे।

इस सबको देख कर वासिलीसा तो वहॉ डर के मारे बिल्कुल ही बिना हिले डुले जमीन से चिपकी खड़ी रह गयी।

तभी एक तीसरा घुड़सवार वहॉ अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ आया। उसका चेहरा काला था। उसका शाल भी काला था। उसका घोड़ा भी काला था और उसके घोड़े की लगाम भी काली ही थी।

जैसे ही वह वहॉ आया तो वह अपने घोड़े से उतरा और उन खोपड़ियों की अँधेरी ऑखें जो उस झोंपड़ी की चहारदीवारी पर लगी थीं आग की तरह चमकने लगीं। इससे वहॉ खुली जगह में दिन की तरह रोशनी हो गयी।

यह देख कर वासिलीसा कॉपने लगी। इनको देख कर तो वह इतनी डर गयी कि हिल भी नहीं पा रही थी। पर इससे ज़्यादा बुरा हाल तो उसका अभी होने वाला था।

जल्दी ही उसने महसूस किया कि हवा कॉप रही थी और उसके पैरों के नीचे जमीन हिल रही थी। बाबा यागा जंगल में अपनी ओखली में बैठी, उसको अपने मूसल से

उड़ाती और झाड़ू से अपने पीछे के निशान मिटाती उड़ती चली आ रही थी।

झोंपड़ी के दरवाजे पर आ कर वह रुकी, और वहाँ उसने अपनी नुकीली नाक उस लड़की की तरफ कर के हवा में कुछ सूँघा और बोली — "फू फ़ी फ़ो फुम। मुझे एक रूसी के खून की खुशबू आ रही है। तुम कौन हो?"

लड़की बोली — "मैं वासिलीसा हूँ। मेरी बहिनों ने मुझे यहाँ रोशनी लाने के लिये भेजा है।"

वह जादूगरनी चिल्लायी — "आहा वासिलीसा। मैं तुम्हारी सौतेली माँ को बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। तो तुमको रोशनी चाहिये। इसके लिये तुमको यहाँ ठहर कर मेरे लिये पहले कुछ काम करना पड़ेगा। उसके बाद हम देखेंगे।" फिर वह अपने दरवाजे की तरफ मुड़ी और बोली —

ओ मेरे मजबूत कुंडे खुल जा, खुल जा मेरे चौड़े दरवाजे खुल जा

दरवाजा तुरन्त ही खुल गया। दरवाजा खुलते ही बाबा यागा अपनी ओखली में बैठी अन्दर चली गयी। वासिलीसा उसके पीछे पीछे थी। जैसे ही दोनों उस दरवाजे के अन्दर घुसीं तो वह दरवाजा अपने आप फिर से वैसे ही कस कर बन्द हो गया।

अन्दर पहुँचते ही उस जादूगरनी का बागीचा था जिसमें एक बिर्च का पेड़[14] खड़ा हुआ था। वह बिर्च का पेड़ वासिलीसा की ऑखें निकालने के लिये नीचे की तरफ झुका तो जादूगरनी चिल्लायी — "उसको छोड़ दे। मैं बाबा यागा उसको यहॉ ले कर आयी हूँ।"

पेड़ ने उसको छोड़ दिया। वे आगे चले तो झोंपड़ी के दरवाजे पर एक बहुत ही भयानक कुत्ता लेटा हुआ था वह उस लड़की को देख कर उसको काटने दौड़ा।

जादूगरनी वहॉ भी चिल्लायी — "ओ कुत्ते, उसको छोड़ दे। मैं बाबा यागा उसको यहॉ ले कर आयी हूँ।"

यह सुन कर कुत्ते ने भी उसको छोड़ दिया। दोनों घर में अन्दर घुसीं तो अन्दर एक काली बिल्ली वासिलीसा को खरोंचने के लिये दौड़ी।

जादूगरनी उससे भी चिल्ला कर बोली — "छोड़ दे उसको, ओ बिल्ली। मैं बाबा यागा उसको यहॉ ले कर आयी हूँ।"

फिर वह वासिलीसा से बोली — "तुम देख रही हो न वासिलीसा? तुम मुझसे ऐसे ही नहीं बच सकतीं। मेरी बिल्ली तुमको खरोंच लेगी। मेरा कुत्ता तुमको काट लेगा। मेरा बिर्च का पेड़ तुम्हारी ऑखें निकाल लेगा और मेरा दरवाजा तो तुमको अन्दर ही नहीं आने देगा।"

[14] Birch tree is normally a tall tree. See its picture above.

अन्दर जा कर बाबा यागा पत्थर के बने एक चूल्हे पर जा कर लेट गयी और अपने रसोईघर से चिल्ला कर बोली — "आ ओ लड़की, मेरा खाना ले आ।"

तभी एक काली ऑखों वाली नौकरानी वहॉ उसका खाना ले कर आयी। उसका वह खाना दस लोगों के खाने के बराबर था —

एक बालटी भर कर गाय का मॉस था
दस लोटे भर कर दूध था, एक भुना हुआ सूअर था
बीस मुर्गे थे और चालीस बतखें थीं
दो बैल के मॉस की पाई थीं और चीज़ थी
साइडर और घर की बनी शराब थी
एक बैरल बीयर थी और एक बालटी क्वास थी

बाबा यागा ने वह सब खाना बड़े लालची ढंग से खाया और वासिलीसा के खाने के लिये तो केवल हड्डियॉ ही बचीं। खाना खा कर जादूगरनी सोने चल दी।

चलते चलते वह वासिलीसा से बोली — "देखो यह अनाज का थैला ले जाओ और इसमें से अनाज के दाने बीन लो। इसके भूसे में अनाज का कोई दाना नहीं रहना चाहिये। जब तक मैं सो कर उठती हूँ तब तक तुम इस काम को खत्म कर लो नहीं तो मैं तुमको खा जाऊँगी।"

कह कर उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और खर्राटे मारने लगी। उसके खर्राटों की आवाज से आस पास की सब लकड़ियॉ भी हिलने लगीं।

बेचारी वासिलीसा ने डबल रोटी का एक टुकड़ा उठा कर गुड़िया के सामने रखा और उसकी सलाह मॉगी।

गुड़िया ने चुपचाप वह डबल रोटी का टुकड़ा खाया और बोली — "तुम डरो मत। तुम अपनी प्रार्थना कहो और सोने जाओ। सुबह शाम से ज़्यादा अक्लमन्द होती है।"

वासिलीसा यह सुन कर सोने चली गयी। जैसे ही वह लड़की सो गयी उस छोटी गुड़िया ने अपनी साफ आवाज में पुकारा —

कबूतरों चिड़ियों चैटफिन्च काइट[15] आज की रात तुम्हारे लिये बहुत काम है
ओ मेरी पंखों वाली दोस्तों तुम्हारे काम पर सुन्दर वासिलीसा की ज़िन्दगी निर्भर है।

गुड़िया की पुकार सुन कर बहुत सारी चिड़ियें झुंड में उड़ती हुई वहॉ आ गयीं – इतनी सारी चिड़ियें कि उन्हें ऑखें भी नहीं देख सकतीं थीं और उन्हें जबान भी नहीं गिन सकती थी।

उन सबने उस भूसे में से अनाज के सारे दाने बीन दिये। फिर उन्होंने उन दानों को थैले में भर दिया और भूसे को डिब्बे में डाल दिया। इस तरह उन्होंने रात खत्म होने से पहले पहले सारा काम खत्म कर दिया।

[15] They all are different kinds of birds

जैसे ही वे चिड़ियॉ अपना काम खत्म कर के चुकीं तो एक बार फिर से वह सफेद घोड़े वाला घुड़सवार आ कर गुजर गया और एक नयी सुबह हो गयी।

जब बाबा यागा सुबह सो कर उठी तो उसको तो विश्वास ही नहीं हुआ कि उसका सारा काम खत्म हो चुका था।

बाबा यागा फिर बोली — "देखो मैं बाहर जा रही हूँ। तुम वह सफेद लोभिया[16] और पोस्त के बीजों[17] का थैला उठा लो और उनको अलग अलग कर लो। अगर यह काम मेरे लौटने तक नहीं हुआ तो मैं तुमको अपने शाम के खाने में भून कर खा जाऊँगी।"

यह कह कर उसने दरवाजा खोला और ज़ोर से सीटी बजायी। उसकी ओखली और मूसल तुरन्त ही वहॉ आ गये। वह अपनी ओखली के अन्दर बैठी और पल भर में ही अपने घर के कम्पाउंड में से बाहर निकल कर पेड़ों के ऊपर उड़ने लगी।

उसके जाने के बाद वह लाल रंग वाला घुड़सवार वहॉ आया और लाल रंग का सूरज आसमान में निकल आया।

वासिलीसा ने फिर डबल रोटी का एक टुकड़ा उठा कर गुड़िया को खिलाया और उससे सहायता मॉगी। जल्दी ही गुड़िया ने अपनी साफ आवाज में कहा —

[16] Translated for the words "Black-eyed Peas" See its picture above.
[17] Translated for the words "Poppy Seeds".

मेरे पास आओ ओ घर और मैदान के चूहो
ये बीज चुन दो वरना यह बेचारी मर जायेगी

यह सुनते ही बहुत सारे चूहे दौड़ते हुए वहॉ आ गये – इतने सारे कि उन सबको न तो ऑखें देख सकती थीं और न ज़बान बता सकती थी। उन्होंने दिन खत्म होने से पहले पहले ही अपना सारा काम खत्म कर दिया।

जब वे अपना काम खत्म कर रहे थे तभी काले रंग का एक घुड़सवार वहॉ से गुजरा और रात होने लगी। चहारदीवारी पर लगी हुई खोपड़ियों की ऑखें आग की तरह से जगमगाने लगीं, पेड़ सनसना कर हिलने लगे और उनकी पत्तियॉ हिलने लगीं।

बाबा यागा वापस आ रही थी। उसने पूछा — "क्या तुमने वह सब कर लिया जो मैं तुमसे कह कर गयी थी?"

"जी दादी मॉ। सब कर लिया।"

उसका सारा काम खत्म देख कर बाबा यागा तो बहुत गुस्सा हो गयी क्योंकि इसकी तो उसको बिल्कुल भी आशा नहीं थी पर वह कुछ कर भी नहीं सकती थी क्योंकि उसका सारा काम तो खत्म हो गया था।

वह बोली — "ठीक है तुम जा कर सो जाओ अब मैं खाना खाऊॅगी।"

वासिलीसा अँगीठी के पीछे फटे कपड़ों पर लेट गयी। वह वहाँ लेटी लेटी बाबा यागा और काली आँखों वाली नौकरानी की बातें सुनती रही।

बाबा यागा उससे कह रही थी — "अँगीठी जलाओ और उसको खूब गर्म कर के खूब लाल कर लो। जब मैं सो कर उठूँगी तो उस लड़की को अपनी अँगीठी में भूनूँगी।"

उसके बाद वह अँगीठी पर जा कर लेट गयी। उसने अपनी ठोड़ी एक आलमारी पर रख ली, अपनी नाक एक बैन्च पर रख दी और अपने आपको अपने पैर से ढक लिया। उसने इतनी ज़ोर से खर्राटे मारने शुरू कर दिये कि सारा जंगल हिलने लगा।

वासिलीसा यह सब सुन कर रोने लगी। उसने अपनी छोटी गुड़िया अपनी जेब से निकाली और उसके सामने डबल रोटी का एक टुकड़ा रख कर बोली —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूँ

गुड़िया ने उसको बताया कि उसको क्या करना है।

वासिलीसा रसोईघर में गयी और उस काली आँखों वाली नौकरानी के सामने सिर झुकाया और बोली — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। जब तुम अँगीठी जलाओ तो लकड़ी पर थोड़ा सा पानी डाल देना ताकि वे कम कम जलें। इस काम के लिये तुम मेरा यह सिर का स्कार्फ रख लो।"

नौकरानी बोली — "ठीक है वासिलीसा। मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। आज से पहले मुझे किसी ने कभी कोई भेंट नहीं दी है। मैं जा कर उस जादूगरनी के पैर सहलाती हूँ ताकि वह और देर तक सोये। इतनी देर में तुम यहाँ से जितनी जल्दी हो सके भाग जाना।"

वासिलीसा ने पूछा — "पर क्या वे तीनों घुड़सवार मुझे पकड़ कर यहाँ वापस नहीं ले आयेंगे?"

नौकरानी बोली — "ओह नहीं। देखो न वह जो सफेद रंग का घुड़सवार है वह सुबह है। वह जो लाल रंग का घुड़सवार है वह उगता हुआ सूरज है और वह जो काले रंग का घुड़सवार है वह रात है। वे तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे।"

इस बात से सन्तुष्ट हो कर वासिलीसा झोंपड़ी से भाग ली पर वह बड़ी काली बिल्ली उसके ऊपर तुरन्त ही कूदी।

वह उसके चेहरे को खरोंच देती कि तभी उसने उस बिल्ली की तरफ एक पाई[18] फेंक दी। बिल्ली पाई खाने में लग गयी और वासिलीसा सीढ़ियाँ उतरने लगी।

नीचे उतरी तो बाबा यागा का कुत्ता बाहर निकला। वह उसे खा जाता अगर वह उसको हड्डी न फेंक देती तो।

[18] Pie is a baked stuffed sweet or savory dish – here it is pumpkin stuffed. It is stuffed between the layers of white flour flat bread dough. There are many kinds of pies apple pie, strawberry pie, meat pie etc etc.

अब वह घर से बाहर जाने वाले रास्ते पर भाग रही थी कि बिर्च के पेड़ ने अपनी शाखाओं से उसके चेहरे को मारने की कोशिश की पर तुरन्त ही उसने उनको अपने बालों के एक रिबन से बॉध दिया और पेड़ ने उसको बाहर जाने दिया।

घर के बाहर जाने वाला दरवाजा बार बार खुलता और बन्द हो रहा था तो उसने उसके कब्जों[19] में सुबह की थोड़ी सी ओस लगा दी। दरवाजा खुल गया और वह उसके बाहर निकल गयी।

फिर उसको अपनी बहिनों के लिये रोशनी की याद आयी तो उसने चहारदीवारी पर से एक खोपड़ी उठायी, उसको एक डंडे पर लगाया और अपने घर की तरफ भाग ली।

उस खोपड़ी की ऑखों से निकलती हुई चमकती हुई रोशनी उसको उसके घर का रास्ता दिखा रही थी।

इस बीच बाबा यागा जाग गयी। उसने देखा कि लड़की तो भाग गयी। वह अपनी काली ऑखों वाली नौकरानी पर चिल्लायी — "तुमने उसको जाने ही क्यों दिया?"

नौकरानी बोली — "क्योंकि उसने मुझे अपना स्कार्फ दिया। मैंने तुम्हारी इतने दिनों सेवा की है पर तुमने मुझे सिवाय बुरा भला कहने के और कुछ नहीं दिया।"

फिर वह अपनी बड़ी काली बिल्ली की तरफ घूमी और उस पर चिल्लायी — "तुमने उसको क्यों जाने दिया?"

[19] Translated for the word "Hinges". See its picture above.

बिल्ली बोली — "उसने मुझे पाई दी। मैं तुम्हारी इतने साल सेवा करती रही पर तुमने तो मुझे कभी डबल रोटी के ऊपर का टुकड़ा तक नहीं दिया।"

तब वह जादूगरनी गुस्से में भर कर घर के बाहर भागी और अपने कुत्ते से बोली — "और तुम बताओ कि तुमने उसको क्यों जाने दिया?"

"क्योंकि उसने मुझे हड्डी दी। मैंने तुम्हारी इतने साल सेवा की पर तुमने तो मुझे खाने के लिये हड्डी का कभी कोई छोटा सा टुकड़ा भी नहीं दिया।"

यह सुन कर जादूगरनी और बाहर की तरफ भागी और बिर्च के पेड़ से बोली — "ओ बिर्च के पेड़, क्या तुमने अपनी शाखाऐं उसके चेहरे पर नहीं मारीं?"

बिर्च का पेड़ बोला — "नहीं, मैंने उसको जाने दिया क्योंकि उसने अपने बालों में से रिबन निकाल कर उससे मेरी शाखाऐं बॉध दी थीं। मैं यहॉ दस साल से खड़ा हूँ पर तुमने तो मेरी शाखाओं में कभी एक धागा भी नहीं बॉधा।"

अब तो बाबा यागा का गुस्सा बहुत ऊपर चढ़ गया। वह भागी भागी दरवाजे पर गयी और उस पर चिल्ला कर बोली — "दरवाजे, दरवाजे। क्या तुमने उसको नहीं रोका?"

दरवाजा बोला — "नहीं, मैंने उसको नहीं रोका। मैंने उसको जाने दिया क्योंकि उसने मेरे कब्जों में ओस लगायी थी। मैंने तुम्हारी इतने साल सेवा की है पर तुमने तो उन पर कभी पानी भी नहीं छिड़का।"

बाबा यागा गुस्से में भर कर उड़ चली। उसने अपने कुत्ते और बिल्ली को पीटा, नौकरानी को कोड़े मारे, बिर्च के पेड़ को काटा और दरवाजे को तोड़ा।

पर यह सब करते करते वह इतना थक गयी कि वह उस लड़की के बारे में बिल्कुल ही भूल गयी।

इस बीच वासिलीसा उस खोपड़ी की रोशनी में अपने घर भाग गयी। अगले दिन सुबह सवेरे वह अपने घर पहुँची तो वहाँ जा कर उसने देखा कि वहाँ तो तभी भी कोई रोशनी नहीं थी।

उसकी सौतेली माँ और बहिनें उसको दरवाजे पर ही मिल गयीं। वे तीनों उसके ऊपर एक साथ चिल्लायीं — "अरी तू तो किसी काम की नहीं, कहाँ रह गयी थी तू?"

और वह खोपड़ी उसके हाथ से छीनते हुए वे उसको घर के अन्दर ले गयीं। उसको घर के अन्दर ले जाते ही एक अजीब सी घटना घटी।

उस खोपड़ी की चमकती हुई आँखें वासिलीसा की सौतेली माँ और बहिनों के ऊपर जम गयीं और उनकी रोशनी उनके अन्दर

घुसती चली गयी। उन्होंने अपने आपको बचाने की कितनी कोशिश की पर वे ऑखें उनका पीछा करती ही रहीं।

इससे वे तीनों जलती रहीं, काली होती रहीं, जब तक कि वे पूरी की पूरी जल नहीं गयीं। केवल वासिलीसा ही बची रही।

अगली सुबह वासिलीसा ने वह खोपड़ी ली और उसको बागीचे में गाड़ दिया। कुछ समय बाद वहॉ गहरे लाल रंग के गुलाब का एक पेड़ उग आया।

उसी दिन वासिलीसा का पिता बाजार से घर वापस लौटा और वासिलीसा से सारी कहानी सुनी तो वह अपनी उस बुरी पत्नी और उसकी दोनों बिगड़ी हुई बेटियों से छुटकारा पा कर बहुत खुश हुआ।

उस दिन के बाद वासिलीसा और उसके पिता दोनों शान्ति से रहने लगे।

वासिलीसा उस गुड़िया को अभी भी अपनी जेब में रखती है। क्या पता उसको कब उसकी जरूरत पड़ जाये।

3 सुन्दर वासिलीसा[20]

बहुत पुरानी बात है कि एक राज्य में एक सौदागर रहता था। उसकी शादी को बारह साल हो गये थे। उसके एक बेटी थी – सुन्दर वासिलीसा। जब वह आठ साल की थी तो उसकी मॉ मर गयी।

जब वह मरने वाली थी तो उसने अपनी बेटी को बुलाया। उसने एक गुड़िया निकाली और अपनी बेटी से कहा — "बेटी वासिलीसुष्का। अब तू मेरी यह आखिरी बात सुन। मैं अब मरने वाली हूॅ। मैं तुझे अपना आशीर्वाद देती हूॅ और यह गुड़िया देती हूॅ। इस गुड़िया को तू अपने पास ही रखना किसी को दिखाना नहीं तेरे ऊपर कोई मुसीबत नहीं आयेगी।

[20] Vasilisa the Fair – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book :
"Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916. This book is available at :
https://books.google.ca/books?id=QssdAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false
This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales
[My Note : Its other two translations are given at the Web Site :
https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Wonder_Tales/Wassilissa_the_Beautiful Wassilissa the Beautiful translated by George Post Wheeler in his book "Russian Wonder Tales". 1911.
Its another translation is "Vasilissa the Wise and Baba Yaga" in the Book "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.
It is available at the Web Site : http://www.oldrussia.net/vas.html too]

जब तुझे कोई उलझन हो तो इसको कुछ खाना देना और इससे इसकी सलाह लेना। जब यह खा लेगी तो तुझे यह तेरी उलझन को सुलझाने की तरकीब बतायेगी।"

कह कर वासिलीसा की मॉ ने उसे चूमा और मर गयी। पत्नी के मर जाने के बाद सौदागर को बहुत दुख हुआ। पर घर चलाना जरूरी था सो उसने दूसरी शादी कर ली।

वह एक सुन्दर आदमी था और बहुत सारी लड़कियॉ उससे शादी करने की इच्छा रखती थीं। उसको सब लड़कियों में एक विधवा ज़्यादा पसन्द आयी। वह जवान तो ज़्यादा नहीं थी उसके दो बेटियॉ थीं जो वासिलीसा के बराबर की सी थीं। इसलिये वह एक अच्छी पत्नी और मॉ हो सकती थी।

सौदागर ने उसी से शादी कर ली और यह उसकी एक बहुत बड़ी गलती थी। वह उसकी बेटी के लिये अच्छी मॉ नहीं थी।

वासिलीसा अपने गॉव की सबसे सुन्दर लड़की थी इसलिये उसकी सौतेली मॉ और बहिनें उससे बहुत जलती थीं। वे हमेशा उसको परेशान करने पर लगी रहतीं।

वे उसके लिये बहुत सारा काम इकट्ठा कर के रख देतीं ताकि उसे करने से वह बदसूरत और कमजोर हो जाये धूप और हवा में काली पड़ जाये। इस तरह वह बच्ची बड़ी मुश्किल की ज़िन्दगी जी रही थी।

वासिलीसा बेचारी बिना कोई शिकायत किये अपना सारा काम करती रहती और और ज़्यादा सुन्दर होती रहती। जबकि उसकी सौतेली मॉ और बहिनें बहुत कोशिशें करने के बावजूद सॉवली और पतली होती जा रही थीं।

उसके बाद भी वे खुद हाथ पर हाथ रखे ऐसे बैठी रहतीं जैसे कुलीन घरों की स्त्रियॉ बैठी रहती हैं। ऐसा कैसे होता।

वासिलीसा की गुड़िया उसकी सहायता करती। उसके बिना तो वासिलीसा अपना कोई काम पूरा कर ही नहीं सकती थी। वासिलीसा अक्सर कुछ नहीं खाती और सबसे ज़्यादा स्वादिष्ट खाना गुड़िया के लिये रख देती।

रात को जब सब सोने चले जाते तो वह अपने आपको नीचे वाले छोटे कमरे में बन्द कर लेती और गुड़िया को खाना खिलाती और कहती — "सुन ओ गुड़िया मैं तुझे अपनी मुश्किलें बताती हूॅ। मैं अपने पिता के घर में रहती हूॅ और मेरी किस्मत बहुत खराब है। मेरी नीच सौतेली मॉ मुझे हमेशा परेशान करने में लगी रहती है। तू मुझे बता मैं इसे सहन करने के लिये क्या करूॅ।"

तब गुड़िया उसको अच्छी सलाह देती उसको तसल्ली देती और उसका सुबह का सारा काम कर देती। वासिलीसा से कहा गया था कि वह जंगल से फूल चुन कर लाये सारी फूलों की क्यारियॉ साफ करे। बाहर से कोयला अन्दर ले कर आये। पानी भरे घड़े घर में ले

कर आये। अँगीठी के पत्थर को गरम रखे। गुड़िया उसका यह सब काम कर देती।

गुड़िया ने उसे जड़ी बूटियों के बारे में भी बताया सो उस गुड़िया को धन्यवाद कि उसने उसकी ज़िन्दगी अच्छी बना दी थी। इस तरह कई साल निकल गये।

वासिलीसा बड़ी हो गयी गॉव के सारे लड़के उससे शादी की इच्छा करने लगे। पर सौतेली मॉ की बेटियों की तरफ कोई देखता भी नहीं था। यह देख कर तो सौतेली मॉ उसके लिये और भी बुरी हो गयी।

उसने उससे शादी करने वालों को जवाब देना शुरू कर दिया कि "मैं उसकी शादी तब तक नहीं करूँगी जब तक उसकी दोनों बहिनों की शादी न हो जाये।" इस तरह उसने उसके सारे उम्मीदवारों को वापस भेज दिया

एक दिन सौदागर को किसी काम से काफी दिनों के लिये बाहर जाना पड़ा। इस बीच सौतेली मॉ एक नये घर में गयी जो एक घने अँधेरे जंगल के पास था। उस जंगल में एक घास का मैदान था। और उस मैदान में एक झोंपड़ी थी। और उस झोंपड़ी में बाबा यागा[21] रहती थी। वह किसी को अन्दर नहीं आने देती थी और आदमियों को तो ऐसे खा जाती थी जैसे लोग मुर्गा खा जाते हैं।

[21] Baba Yaga is a very important character of many Russian folktales. She is a witch and often harms other people.

जब वह जा रही थी तो सौतेली मॉ ने अपनी सौतेली बेटी को जंगल में भेजा पर वह वहॉ से हमेशा ही सुरक्षित चली आयी क्योंकि उसकी गुड़िया ने उसे एक रास्ता बताया जिससे वह हमेशा ही बाबा यागा की झोंपड़ी से बच कर जा सकती थी।

एक दिन जब कटाई का समय आ गया तो सौतेली मॉ ने तीनों बेटियों को शाम के लिये कुछ काम दिया।

एक को उसने लेस बनाने का काम दिया। दूसरी को उसने एक मोजा बुनने का काम दिया और वासिलीसा को कातने का काम दिया। हर एक को एक निश्चित काम करना था।

मॉ ने घर की सारी रोशनी बुझा दी और केवल एक मोमबत्ती जली छोड़ दी। तीनों लड़कियॉ काम करने बैठ गयीं और वह खुद सोने चली गयी।

लड़कियॉ काम करती रहीं और मोमबत्ती जलती रही। आखिर वह खत्म हो गयी। सौतेली मॉ की एक बेटी ने एक कैंची उठायी और उससे मोमबत्ती का धागा काट दिया। पर सौतेली मॉ ने उससे यह कह रखा था कि वह ऐसा दिखाये कि जैसे रोशनी अपने आप अचानक ही बुझ गयी हो।

वे बोलीं — "अब क्या करें? घर में और कोई आग भी नहीं है और हमारा काम अभी खत्म भी नहीं हुआ है। हमको बाबा यागा से जा कर रोशनी लानी चाहिये।"

जो लड़की लेस बना रही थी वह बोली — "मुझे तो अपनी सुई की रोशनी ही काफी है।"

दूसरी बोली — "मैं भी नहीं जा रही क्योंकि मेरी बुनाई की सलाइयों की रोशनी मेरे लिये काफी है। वसिलीसा तुम बाबा यागा के पास जाओ और आग ले कर आओ।"

और उन्होंने वासिलीसा को कमरे से बाहर धक्का दे दिया। वासिलीसा बेचारी अपने कमरे में गयी। थोड़ा सा मॉस और शराब गुड़िया के सामने रखी और बोली — "मेरी प्यारी गुड़िया ले तू इसे खा और मेरी उलझन सुन। वे मुझे आग लाने के लिये बाबा यागा के घर भेज रही हैं और बाबा यागा तो मुझे खा जायेगी।"

गुड़िया ने उसका रखा खाना खाया। उसकी दोनों ऑखें ऐसे चमक गयीं जैसे दो लैम्प जल उठे हों। वह बोली — "तुम बिल्कुल नहीं डरो। जैसा वे कहती हैं वैसा ही करो पर बस तुम मुझे अपने साथ ले चलो। जब तक मैं तुम्हारे साथ रहूँगी तब तक बाबा यागा तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकती।"

वासिलीसा ने गुड़िया को अपनी जेब में रखा भगवान की प्रार्थना की और उस अँधेरे जंगल की तरफ चल पड़ी।

अचानक ही एक नाइट[22] घोड़े पर सवार वहॉ से गुजर गया जो बिल्कुल सफेद था। उसका शाल सफेद था उसका

[22] Knight is a certain status in European royal hierarchy. See his picture above.

घोड़ा सफेद था और उसके घोड़े की लगाम भी सफेद थी। और रोशनी हो गयी।

वह और आगे चली तो अचानक एक और नाइट उधर से गुजरा। यह नाइट पूरा का पूरा लाल था। उसका घोड़ा लाल था उसके अपने कपड़े लाल थे उसके घोड़े की लगाम लाल थी। जब वह वहॉ से गुजरा तो सूरज निकल आया।

वासिलीसा रात भर चलती रही और फिर अगले दिन भी चलती रही। अगली शाम वह उस घास के मैदान में आ पहुॅची जहॉ बाबा यागा की झोंपड़ी खड़ी हुई थी।

उसकी झोंपड़ी के चारों ओर एक बाड़ बनी हुई थी वह हड्डियों की बनी हुई थी। और उसमें लगे हुए खम्भों पर खोपड़ियॉ लगी थीं जो अपनी खाली ऑखों से घूर रही थीं।

बजाय फाटक और दरवाजों के वहॉ पैर थे और जहॉ सॉकल लगती है वहॉ हाथ लगे हुए थे। ताले की जगह उसमें मुॅह लगा हुआ था जिसके दॉत बहुत तेज़ थे।

वासिलीसा तो यह सब देख कर पत्थर की तरह ठंडी पड़ गयी।

अचानक एक और घुड़सवार उधर से गुजरा। वह पूरा का पूरा काला था। उसका बिल्कुल काले रंग का घोड़ा था। काले रंग का शाल था। उसने दरवाजा खोला और वहॉ से भाग गया। जैसे कि उसे धरती निगल गयी हो। और फिर रात हो गयी।

पर यह अँधेरा बहुत देर तक नहीं रहा क्योंकि बाबा यागा की झोंपड़ी के चारों तरफ जो बाड़ लगी थी उसके खम्भों पर लगी खोपड़ियों की आँखें चमकने लगी थीं।

उस समय ऐसा उजाला हो गया जैसे दिन निकल आया हो। आसपास सब हरा हरा दिखायी देने लगा। वासिलीसा एक बार फिर डर के मारे काँप उठी। वह नहीं जानती थी कि वह वहाँ से बच कर कैसे भाग जाये।

अचानक जंगल में एक भयानक आवाज सुनायी पड़ी। पेड़ों की शाखाऐं चर्र चर्र की आवाजें करने लगीं। सूखे पत्ते चटकने लगे। जंगल के बाहर से बाबा यागा जंगल में आती दिखायी दी।

वह एक ओखली में बैठी थी मूसल उसके पास रखा था और वह एक झाड़ू से अपने कदमों के निशान मिटाती आ रही थी।

वह अपनी झोंपड़ी के दरवाजे पर आ कर रुकी, कुछ इधर उधर सूँघा फिर अपने चारों तरफ सूँघा और चिल्लायी — "फ़ी फ़ो फ़ी फुम। मुझे एक रूसी फूल की खुशबू आ रही है। कौन है यहाँ?"

वासिलीसा डर के मारे काँपने लगी। वह बाबा यागा की तरफ आगे बढ़ी उसे जमीन तक झुक कर नमस्ते की और बोली — "माँ जी मैं हूँ। मेरी सौतेली माँ की बेटियों ने मुझे आपके पास आग लाने के लिये भेजा है।"

बाबा यागा बोली — "ठीक है। मैं उन्हें जानती हूँ। तू मेरे पास रुक और मेरे लिये काम कर तो मैं तुझे आग दे दूँगी नहीं तो मैं तुझे ही खा जाऊँगी।"

फिर वह दरवाजे की तरफ गयी और चिल्लायी — "ओ मेरे मजबूत तालों खुल जाओ। मेरे मजबूत दरवाजो खुल जाओ।" और दरवाजा खुल गया। बाबा यागा उसमें से सीटी बजाती नाचती बाहर चली गयी। वासिलीसा उसके पीछे पीछे चल दी। उन दोनों के जाते ही दरवाजा बन्द हो गया।

वासिलीसा ने बाहर बाड़े पर लगी हुई खोपड़ियों में से एक खोपड़ी से आग जलायी बाबा यागा के लिये ओवन में से खाना निकाला। वह खाना तो दस आदमियों के खाने से भी ज़्यादा ही था। फिर एक कमरे में से वह उसके लिये शराब ले कर आयी।

बाबा यागा ने वह सारा खाना खा लिया और सारी शराब पी ली पर वासिलीसा के लिये केवल थोड़ा सा सूप एक डबल रोटी का टुकड़ा और सूअर के मॉस एक टुकड़ा ही बचा।

खा पी कर बाबा यागा सोने के लिये लेट गयी और बोली — "कल सुबह जब मैं यहाँ से चली जाऊँ तो मेरा आँगन साफ कर देना। कमरों में झाड़ू लगा देना। मेरा शाम का खाना तैयार कर के रखना। मेरे कपड़े धो देना। खेत से जा कर ओट्स[23] ले आना और

[23] Oats is a kind of grain. See its picture above.

उसे छान कर साफ कर देना। और ध्यान रखना कि यह सब काम मेरे घर आने से पहले पूरा हो जाये नहीं तो मैं तुझे खा जाऊँगी।"

यह सब कह कर वह खर्राटे मारने लगी।

वासिलीसा ने बचा हुआ खाना गुड़िया के सामने रखा और बोली — "ओ मेरी गुड़िया। ले यह खा और मेरा दुखड़ा सुन। बाबा यागा ने मुझे जो काम करने के लिये दिये हैं वे बहुत मुश्किल हैं और अगर मैंने उसके वे सब काम नहीं किये तो उसने मुझे खा जाने की धमकी दी है। मेरी सहायता कर।"

"ओ सुन्दर लड़की वासिलीसा तू बिल्कुल चिन्ता मत कर। खाना खा भगवान की प्रार्थना कर और सो जा। सुबह तो शाम से ज़्यादा अक्लमन्द होती है।"

अगले दिन सुबह वासिलीसा बहुत जल्दी ही उठ गयी। बाबा यागा तो उससे भी पहले उठ गयी थी और अपनी खिड़की से बाहर देख रही थी। खोपड़ियों की ऑखों की चमक धीरे धीरे धुँधली पड़ती जा रही थी। सफेद घुड़सवार उधर से दौड़ गया और सुबह हो गयी।

तब बाबा यागा अपने ऑगन में गयी और वहॉ जा कर सीटी बजायी तो तुरन्त ही उसकी ओखली और मूसल और झाड़ू आ गये। तभी लाल घुड़सवार उधर से गुजरा तो सूरज निकल आया। बाबा यागा अपनी ओखली में बैठी और मूसल की सहायता उसको आगे बढ़ाया।

और झाड़ू की सहायता से उसने अपने पीछे के सारे निशान मिटा दिये।

अब वासिलीसा घर में अकेली रह गयी। उसने बाबा यागा का घर देखा तो उसको वहाँ इकट्ठा की गयी चीज़ों को देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगी कि वह अपना काम कहाँ से शुरू करे। पर उसने देखा कि उसका सारा काम तो कभी का खत्म हो चुका है।

बाबा यागा का ओट्स तो कभी का आ चुका है और उसे साफ भी किया जा चुका है।

वासिलीसा के मुँह से निकला — "हे भगवान। तुमने मेरी इस जरूरत के वक्त बहुत बड़ी सहायता की।"

गुड़िया बोली — "अब तुमको बाबा यागा का बस खाना ही तो बनाना है।" कह कर वह कूद कर वासिलीसा की जेब में बैठ गयी और फिर बोली — "भगवान की कृपा से तुम यह काम भी कर ही लोगी। तुम यहीं चुपचाप बैठ कर उसका इन्तजार करो।"

शाम को वासिलीसा ने कपड़ा बिछाया और बाबा यागा का इन्तजार करने लगी। इतने में अँधेरा छाने लगा। तभी एक काला घुड़सवार आ कर गुजर गया और रात हो गयी। खोपड़ियों की आँखों में रोशनी चमक उठी।

पेड़ हिलने लगे पत्तियॉ चरमराने लगीं और बाबा यागा अन्दर आयी। वासिलीसा उसके स्वागत के लिये उठी तो बाबा यागा ने पूछा — "काम हो गया?"

वासिलीसा बोली — "हॉ दादी मॉ। देखिये न।"

बाबा यागा ने चारों तरफ देखा तो देख कर गुस्सा हो गयी क्योंकि अब उसके पास उससे कहने के लिये कुछ नहीं था। वह बोली — "ठीक है।"

वह फिर चिल्लायी — "ओ मेरे बहादुर नौकरों ओ मेरे दिल के दोस्तों यह सारी ओट्स इकट्ठी कर के रख दो।"

तभी तीन जोड़ी हाथ प्रगट हुए उन्होंने ओट्स उठायी और उसको वहॉ से उठा कर ले गये।

बाबा यागा ने शाम का खाना खाया और सोने जाने से पहले वासिलीसा से कहा — "कल को भी वही सब कुछ करना जो तूने आज किया था। पर उस भूसे को भी ले लेना जो मेरे खेत में पड़ा हुआ है। उसकी हर बाल में से सारी मिट्टी साफ कर देना। किसी ने गलती से उसमें मिट्टी मिला दी है।" जैसे ही उसने ऐसा कहा उसने दीवार की तरफ करवट ली और खर्राटे भरने लगी।

वासिलीसा तुरन्त ही गुड़िया के पास गयी उसको खाना खिलाया और उससे सलाह मॉगी तो गुड़िया ने उसको फिर वही जवाब दिया जो उसने उसको पहले दिन दिया था — "अभी तुम भगवान की

प्रार्थना करो और सो जाओ। सुबह तो हमेशा ही रात से ज़्यादा अक्लमन्द होती है। कल सब कुछ हो जायेगा वासिलीसुष्का।"

अगली सुबह बाबा यागा उठी और खिड़की में से बाहर देखा। फिर वह अपने ऑगन में गयी और वहॉ जा कर सीटी बजायी तो मूसल ओखली झाड़ू सब एक दम से वहॉ आ गये।

तभी लाल घुड़सवार वहॉ आया और सूरज निकल आया। बाबा यागा अपनी ओखली में बैठी हाथ में मूसल लिया और झाड़ू से अपने पीछे वाले निशान मिटाते हुए उड़ गयी।

वासिलीसा ने अपनी गुड़िया की सहायता से अपना सारा काम खत्म कर लिया। शाम को जब बुढ़िया वापस आयी तो उसने चारों तरफ देखा और बोली — "ओ मेरे वफादार नौकरों और मेरे दिल के दोस्तों। मेरे लिये पौपी का तेल बनाओ।" तुरन्त ही तीन जोड़ी हाथ वहॉ फिर प्रगट हो गये और पौपी ले गये।

बाबा यागा शाम का खाना खाने बैठी तो वासिलीसा उसके सामने चुपचाप बैठी रही। बाबा यागा ने उससे पूछा — "तू कुछ बोलती क्यों नहीं है? तू यहॉ ऐसे क्यों बैठी है जैसे कोई गूँगा बैठता है?"

वासिलीसा बोली — "मेरे पास कुछ बोलने के लिये है ही नहीं। पर अगर मुझे कुछ बोलने का मौका मिले तो मैं कुछ सवाल पूछना चाहूँगी।"

"पूछ पर यह जरूरी नहीं है कि तुझे हर सवाल का जवाब ठीक से मिले। ज़्यादा जानना अब बहुत पुराना हो गया।"

वासिलीसा बोली — "मैं जब यहाँ आ रही थी तो मुझे एक सफेद घुड़सवार मिला जो सफेद शाल ओढ़े था और सफेद घोड़े पर सवार था। कौन था वह?"

"वह चमकीला दिन था।"

"उसके बाद मुझे एक लाल घुड़सवार मिला जो लाल शाल ओढ़े था और लाल घोड़े पर सवार था। वह कौन था?"

"वह लाल सूरज था।"

"और उस काले घुड़सवार का क्या मतलब था जो मुझे पीछे छोड़ कर मुझसे आगे निकल गया जब मैं आपके घर आ रही थी?"

बाबा यागा बोली — "वह काली अँधेरी रात थी। वे तीनों मेरे वफादार नौकर हैं।"

वासिलीसा के दिमाग में तभी वे तीन जोड़ी हाथ घूम गये। उसके बाद वह फिर और कुछ नहीं बोली। बाबा यागा ने उससे पूछा — "तू इससे आगे और कुछ क्यों नहीं पूछती?"

वासिलीसा बोली — "बस मैं काफी जान गयी। और फिर आप ही तो कहती हैं कि ज़्यादा जानना बहुत पुरानी बात हो गयी।"

बाबा यागा बोली — "अच्छा हुआ तूने वही बातें पूछी जिनको तूने आँगन में देखा था और किसी दूसरी चीज़ के बारे में नहीं। क्योंकि मुझे वे लोग बिल्कुल पसन्द नहीं है जो बहुत ज़्यादा पूछताछ

करते हैं। पर अब मैं तुझसे पूछना चाहूँगी कि जितना काम मैंने तुझे दिया तूने इतना सारा काम वह कैसे पूरा किया?"

"अपनी मॉ के आशीर्वाद से।"

"ओ तब तो तू यहॉ से जितनी जल्दी हो सकता हो उतनी जल्दी भाग जा ओ आशीर्वाद दी गयी लड़की। क्योंकि कोई भी आशीर्वाद पाया हुआ आदमी मेरे पास नहीं रुक सकता।"

और उसने वासिलीसा को अपने कमरे से बाहर निकाल दिया और फिर दरवाजे से भी बाहर निकाल दिया। बाड़े के लट्ठों पर लगी हुई खोपड़ियों में से एक खोपड़ी उठायी उसको एक डंडे पर रखा और उसको दे कर कहा — "अब तेरे पास तेरी सौतेली मॉ की बेटियों के लिये यह आग है जिसके लिये तुझे यहॉ भेजा गया था।"

वासिलीसा भी उस खोपड़ी की रोशनी की सहायता से वहॉ से जितनी जल्दी हो सकता था भाग ली। पर उसकी आग तो सुबह तक बुझ गयी।

अगले दिन शाम तक वह अपने घर पहुँच गयी। वह उस खोपड़ी को फेंकने ही वाली थी कि उसने खोपड़ी में से आती एक आवाज सुनी — "मुझे फेंकना नहीं। मुझे अपनी सौतेली मॉ के घर तक ले चलो।"

उसने अपनी सौतेली मॉ के घर की तरफ देखा तो देखा कि उसकी तो किसी भी खिड़की में रोशनी नहीं थी सो उसने घर में उस खोपड़ी के साथ ही घुसने का निश्चय किया।

वहॉ उसका बड़े अच्छे से स्वागत हुआ। उसकी बहिनों ने उसे बताया कि जबसे वह वहॉ से गयी थी तबसे उनके घर में आग ही नहीं थी। वे लोग वहॉ आग जला ही नहीं पायीं। और जो कुछ भी उन्होंने अपने पड़ोसियों से उधार मॉगी तो वह उनके कमरे में आ कर बुझ गयी।

सौतेली मॉ बोली — "हो सकता है कि तुम्हारी लायी आग जल जाये।"

सो वे खोपड़ी को कमरे में ले कर गये तो उसकी जलती हुई ऑखों ने सौतेली मॉ और सौतेली बहिनों की ऑखों में देखा तो उनकी ऑखों में जलन पैदा हो गयी। वे जिधर भी गयीं उस खोपड़ी की ऑखों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। सुबह तक वे तीनों जल कर राख हो गयीं। केवल वासिलीसा ही ज़िन्दा बची।

उसके बाद वासिलीसा ने उस खोपड़ी को जमीन में दबा दिया घर को ताला लगा दिया और शहर चली गयी। वहॉ एक गरीब स्त्री से उसने उसे अपने घर ले जाने की और खाना देने की विनती की जब तक उसका पिता वापस आता है।

उसने उस बुढ़िया से कहा — "मॉ इस तरह से बिना किसी काम के बैठना मुझे आलसी बना रहा है। आप मुझे बहुत अच्छी रुई ला दें तो मैं उसे कातती रहूॅगी।"

सो बुढ़िया बाजार गयी और उसको बहुत अच्छी रुई ला कर दे दी। वासिलीस ने उस पर काम करना शुरू कर दिया। उसका काम

खूब अच्छा चलता रहा। उसका बुना हुआ धागा इतना बारीक था जैसे बाल।

जब उसने काफी धागा बुन लिया तो कोई उसका कपड़ा बुनने को तैयार नहीं। तो वह फिर अपनी गुड़िया के पास गयी तो गुड़िया ने उससे कहा — "मुझे कहीं से कोई पुरानी कंघी ला दो, पुरानी अटेरन ला दो, घोड़े के बाल ला दो तो तुम्हारा काम कर दूँगी।"

वासिलीसा सोने चली गयी। गुड़िया ने उस रात एक बहुत ही शानदार स्टूल बनाया और जाड़ा खत्म होने तक उसने वासिलीसा का सारा सूत बुन दिया था। वह इतना अच्छा कपड़ा तैयार हो गया था कि वह सुई के छेद में से धागे की तरह से निकाला जा सकता था।

वसन्त आने पर उन्होंने उस कपड़े को धोया और फिर वासिलीसा ने बुढ़िया से कहा — "मॉ जी अब आप इस कपड़े को बाजार में बेच दें और इसको बेच कर जो पैसा आये वह आप रख लें।"

बुढ़िया ने कपड़ा देखा तो देखा कि वह तो बहुत बढ़िया कपड़ा था। वह बोली — "ओह मेरी बच्ची इतने बढ़िया कपड़ों को तो केवल ज़ार[24] ही पहन सकता है। मैं इसको ज़ार के पास ले जाऊँगी।"

[24] Tzar, or Tsar is the title for the king in Russia till 1917.

सो वह उस कपड़े को ले कर ज़ार के महल चली गयी और उसके महल के आगे पीछे घूमती रही। ज़ार ने उसे देखा तो उससे पूछा — "ओ बुढ़िया तुम्हें क्या चाहिये।"

बुढ़िया बोली — "सरकार मैं आपके लिये बहुत बढ़िया चीज़ लायी हूँ जिसे मैं केवल आप ही को दिखाना चाहती हूँ किसी और को नहीं।"

ज़ार ने बुढ़िया को अकेले में मिलने की इजाज़त दे दी। बुढ़िया ने उसको वह कपड़ा दिखाया तो ज़ार तो उसे देख कर हक्का बक्का रह गया और उसने उसकी बहुत तारीफ की। फिर उसने पूछा कि उसको उसके बदले में क्या चाहिये।

बुढ़िया बोली — "मैं यह आपको भेंट देना चाहती हूँ।"

"यह तो बहुत वेशकीमती है।"

ज़ार ने फिर कुछ सोचा और बहुत सारी कीमती भेटें दे कर उसे वापस भेज दिया। अब ज़ार उस कपड़े की अपने लिये कमीजें बनवाना चाहता था पर उसको कोई ऐसा आदमी नहीं मिल रहा था जो यह काम कर सकता हो।

वह बहुत देर तक सोचता रहा फिर उसने बुढ़िया को फिर से बुला भेजा और उससे कहा — "अगर तुम यह सूत कात सकती हो और फिर उसका कपड़ा बुन सकती हो तो तुम इसकी कमीज भी सिल सकती होगी।"

बुढ़िया बोली — "हुजूर मैं कात भी नहीं सकती और मैं बुन भी नहीं सकती। मेरे घर में एक लड़की ठहरी हुई है शायद वह यह कर सके।"

"ठीक है तो वही मेरा यह काम कर दे।"

सो बुढ़िया अपने घर गयी और वासिलीसा से जा कर सब कहा। वासिलीसा बोली — "मुझे मालूम था कि मुझे यह काम करना पड़ेगा।"

उसने अपने आपको अपने छोटे कमरे में बन्द कर लिया और अपने काम पर लग गयी। वहा जब तक उस कमरे में से बाहर नहीं निकली जब तक उसने बारहों कमीजें नहीं बना लीं।

जब कमीजें बन गयीं तो बुढ़िया उनको ज़ार के महल ले गयी। इधर वासिलीसा नहायी धोयी अपने बालों में कंघी की अच्छे कपड़े पहने और खिड़की में बैठ कर ज़ार का इन्तजार करने लगी।

वह जब इस तरह से वहॉ बैठी हुई थी तो एक शाही नौकर उसके कमरे में आया और बोला — "ज़ार उस कलाकार को देखना चाहते हैं जिसने उनके लिये कमीजें बनायी हैं और वह उसको अपने हाथों से इनाम देना चाहते हैं।"

सुन्दर वासिलीसा उसके साथ ज़ार के पास गयी। ज़ार ने जब उसे देखा तो वह तो उससे प्यार करने लगा। वह बोला — "नहीं ओ सुन्दर लड़की मैं तुमसे अलग नहीं रह सकता। तुमको मुझसे शादी करनी होगी।"

सो ज़ार ने वासिलीसा के सफेद हाथ पकड़े और उसको अपने बराबर में बिठा लिया और शादी के घंटे बजाने का हुक्म दे दिया।

वासिलीसा का पिता भी घर वापस लौट आया था। वह अपनी बेटी की खुशकिस्मती पर बहुत खुश था। वह अपनी बेटी के पास ही रहा। वासिलीसा ने बुढ़िया को भी अपने साथ ही रख लिया और गुड़िया हमेशा उसकी जेब में रही।

4 जादुई हंसिनी[25]

एक बार की बात है एक पति पत्नी अपनी एक बेटी और एक छोटे से बेटे के साथ रहते थे।

एक दिन माँ ने अपनी बेटी से कहा — "बेटी देखो हम लोग काम करने जा रहे हैं। तुम यहाँ घर पर अपने भाई का ख्याल रखना। और देखो घर की चहारदीवारी के बाहर मत जाना। अच्छी बच्ची बन कर रहना। हम तुम्हारे लिये एक रूमाल ले कर आयेंगे।"

यह कह कर वे तो अपना काम करने चले गये और वह बच्ची तो वह सब भूल गयी जो उसकी माँ उससे कह कर गयी थी।

उसने तुरन्त ही अपने छोटे भाई को एक खिड़की के नीचे घास पर बिठाया और घर के कम्पाउंड में भाग गयी। वहाँ वह खेलती रही और खेल में इतनी डूब गयी कि उसको कुछ और याद ही नहीं रहा।

इतने में एक हंसिनी आयी और उसके छोटे भाई को उठा कर ले गयी। जब लड़की अन्दर आयी तो उसने देखा कि उसका भाई

---

[25] The Magic Swan-Geese – a fairy tale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.fdi.ucm.es/profesor/fpeinado/projects/kiids/apps/protopropp/swan-geese.html Collected by Afanasieve. Taken from the book "Russian Fairy Tales: The Afanasieve Collectin" (Tale No 113).
Other tales of this type include "The Seven Ravens", "The Twelve Wild Ducks", "Udea and Her Seven Brothers", "The Twelve Brothers" etc. Read all of them and more in the book "Chhah Hans Jaisi Kahaniyan" in Hindi language available from hindifolktales@gmail.com

तो वहॉ नहीं है। वह चिल्ला पड़ी — "ओह नहीं। कहॉ गया मेरा भाई?"

वह बेचारी इधर उधर दौड़ती फिरी पर वह तो उसको कहीं दिखायी नहीं दिया। उसने उसका नाम ले कर ज़ोर ज़ोर से पुकारा भी पर उसका तो कहीं पता ही नहीं था। वह रो पड़ी और रो रो कर कहने लगी कि उसके माता पिता उससे कितना गुस्सा होंगे।

पर उसके भाई ने तो कोई जवाब ही नहीं दिया। जवाब तो कोई तब देता जब वहॉ कोई होता। वह तो बेचारा वहॉ था ही नहीं तो वह जवाब कहॉ से देता।

उसको ढूँढने के लिये फिर वहॉ से वह खेतों के किनारे तक भागी भागी गयी तो उसको वह हंसिनी दिखायी दे गयी जो उसके भाई को उठा कर ले गयी थी। वह दूर और बहुत दूर जंगल की तरफ उड़ी चली जा रही थी और उसकी ऑखों से ओझल होती जा रही थी।

उसको लगा कि वे हंसिनियॉ उसके भाई को अपने साथ लिये चली जा रही थीं। हंसिनियॉ तो अपनी शैतानी और छोटे बच्चों को उठाने के लिये पहले से ही बहुत बदनाम थीं।

लड़की उन हंसिनियों के पीछे पीछे दौड़ चली। दौड़ते दौड़ते वह एक ओवन[26] के पास आ गयी। उसने ओवन से पूछा — "ओ

[26] Oven – an oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance, and most commonly used for cooking. Kilns and furnaces are special-purpose ovens, used in pottery and metalworking, respectively.

छोटे ओवन ओ छोटे ओवन, मुझे बता ये हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही हैं?”

ओवन बोला — “पहले तुम मेरे राई के कुछ बन[27] खाओ तब मैं तुम्हें बताता हूॅ कि वे कहॉ जा रही हैं।”

“मैं तुम्हारे राई के बन नहीं खा रही। मैं तो अपने घर में रखे गेहूॅ के बन भी नहीं खाती।”

सो ओवन ने उसको नहीं बताया कि वे हंसिनियॉ कहॉ जा रही थीं और वह लड़की दौड़ती हुई और आगे चली गयी।

दौड़ते दौड़ते वह एक सेब के पेड़ के पास आयी। उसने सेब के पेड़ से पूछा — “ओ सेब के पेड़ ओ सेब के पेड़, मुझे बता ये हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही हैं?”

सेब का पेड़ बोला — “तुम पहले मेरे जंगली सेब खाओ फिर मैं तुम्हें बताता हूॅ कि ये हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ गयी हैं।”

“मैं तुम्हारे जंगली सेब नहीं खाती। मैं तो अपने घर में अपने घर के बागीचे के सेब भी नहीं खाती।”

और सेब के पेड़ ने उसको यह नहीं बताया कि वे हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही थीं।

---

[27] Bun of Rye – Bun are a kind of small round shape of bread, and rye is a kind of grain like wheat, barley, millet etc. See their picture above.

वह फिर दौड़ती हुई आगे बढ़ी। दौड़ते दौड़ते वह एक दूध की नदी के पास आयी जिसके किनारे पुडिंग[28] के थे। उसने नदी से पूछा — "ओ दूध की नदी ओ पुडिंग के किनारों वाली नदी, मुझे बता ये हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही हैं?"

दूध की नदी बोली — "पहले तुम दूध के साथ मेरी थोड़ी सी पुडिंग खाओ तब मैं तुम्हें बताती हूॅ कि ये हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही हैं।"

लड़की बोली — "मैं नहीं खाती दूध के साथ तुम्हारी पुडिंग। मैं तो अपने घर की बनी हुई पुडिंग भी नहीं खाती।"

और दूध की नदी ने भी उसको नहीं बताया कि वे हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही थीं।

इस तरह से वह काफी देर तक मैदानों में और जंगलों में भागती रही। इस तरह भागते भागते उसको शाम हो गयी। वह यही नहीं जान पायी कि वे हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ गयीं।

इस तरह भागते भागते उसको शाम हो गयी अब वह कुछ नहीं कर सकती थी सो शाम होने पर उसको घर लौटना पड़ा।

जैसे ही वह घर वापस आने के लिये पलटी तो उसने देखा कि उसके पीछे एक केबिन है जिसमें केवल एक छोटी सी खिड़की है।

[28] Pudding may mean "Rice Kheer" or "Porridge or Daliyaa", or even "Semolina Kheer", or even any kind of grain powder cooked in milk.

उस केबिन में तो एक जादूगरनी बैठी हुई थी – बाबा यागा। वह वहॉ बैठी बैठी रुई कात रही थी।

उसके पास ही चॉदी की एक बैन्च पर उसका अपना भाई बैठा था जो एक चॉदी के सेब से खेल रहा था।

सो वह लड़की उस केबिन में भागी गयी और उस बुढ़िया से बोली — "ओ छोटी बुढ़िया ओ छोटी बुढ़िया।"

इससे पहले कि वह लड़की उससे आगे कुछ कहती या पूछती वह बुढ़िया बोली — "ओ लड़की तुम ऐसे मेरे घर में भागती हुई क्यों आयी हो?"

लड़की बोली — मैं जंगल और दलदल में से हो कर भागती चली आ रही हूॅ। मेरी पोशाक फट कर तार तार हो गयी है। मैं यहॉ थोड़ी सी गर्मी लेने आयी हूॅ।"

"तुम यहॉ बैठो और लो यह रुई कातो। मैं अभी आती हूॅ।" कह कर बाबा यागा ने उसको एक तकली दी और उसको अकेला छोड़ कर वहॉ से चली गयी। लड़की उसका सूत कातने लगी।

अचानक स्टोव के नीचे से एक चूहा निकला और उसकी तरफ आ गया और बोला — "ओ लड़की ओ लड़की, मुझे थोड़ा सा दलिया दे और मैं तुझको वह सब बताऊॅगा जो तू जानना चाहती है।"

लड़की ने उसको थोड़ा सा दलिया दे दिया तो वह चूहा बोला — "बाबा यागा आग लाने के लिये अपने नहाने वाले कमरे में गयी है। वह तुझे भाप में पकाने वाली है। फिर वह तुझे ओवन में रख कर भूनेगी और खा लेगी। उसके बाद वह तेरी दो हड्डियों पर चढ़ कर चली जायेगी।"

यह सुन कर तो वह लड़की तो सकते में आ गयी और रो पड़ी। पर चूहा आगे बोला — "बस अब तू किसी चीज़ का इन्तजार मत कर, यहाँ से अपने भाई को उठा और भाग जा। मैं तेरी जगह बैठ कर यह रुई कातता हूँ।"

लड़की ने तुरन्त ही अपने भाई को उठाया और वहाँ से भाग ली। जब वह वहाँ से चली गयी तो बाबा यागा खिड़की के पास आयी और लड़की से पूछा — "ओ लड़की क्या तुम अभी भी सूत कात रही हो?"

चूहा बोला — "ओ बुढ़िया, हाँ मैं अभी भी सूत कात रही हूँ।"

वह बूढ़ी जादूगरनी यह सुन कर सन्तुष्ट हो गयी और फिर से अपने नहाने वाले कमरे में चली गयी। जब उसकी आग काफी गर्म हो गयी तो वह लड़की को लेने के लिये आयी पर वहाँ तो उसको कोई दिखायी नहीं दिया।

वह चिल्लायी — "ओ हंसिनी, उनके पीछे भाग। बहिन अपने भाई को चुरा कर भाग गयी है।"

उधर वह लड़की अपने भाई को अपनी बॉहों में लिये हुए भागते भागते दूध की नदी तक आ गयी। उसने देखा कि हंसिनियॉ उसके पीछे उड़ती हुई चली आ रही हैं।

"मॉ नदी मॉ नदी। मुझे छिपा लो।"

"तुम पहले मेरी थोड़ी सी पुडिंग खाओ।"

लड़की ने उसकी थोड़ी सी पुडिंग खायी और उसको धन्यवाद दिया। नदी ने उसको अपनी पुडिंग के किनारों में छिपा लिया। हंसिनियों ने उसको वहॉ देखा नहीं और वे वहॉ से उड़ती हुई चली गयीं।

लड़की ने अपने भाई को फिर से अपनी बॉहों में उठाया और फिर से वहॉ से भाग ली। पर वे हंसिनियॉ वापस आ गयीं और उसी की दिशा में उड़ने लगीं।

"देखो देखो वे रही वे हंसिनियॉ। अब मैं क्या करूँ?"

तभी उसको सेब का पेड़ दिखायी दिया तो उसको देख कर वह बोली — "ओ मॉ सेब के पेड़ ओ मॉ सेब के पेड़। मुझे छिपा लो।"

सेब का पेड़ फिर बोला — "पहले मेरे थोड़े से सेब खा लो।"

लड़की ने तुरन्त ही उस पेड़ से तोड़ कर एक सेब खा लिया और उसे धन्यवाद दिया। पेड़ ने भी तुरन्त ही उसको अपनी शाखाओं में छिपा लिया। हंसिनियों ने उनको वहॉ नहीं देखा सो वे वहॉ से आगे उड़ गयीं।

लड़की ने फिर अपने भाई को अपनी बॉहों में उठाया और फिर भागना शुरू कर दिया। वह तब तक भागती रही जब तक वह बिल्कुल थक नहीं गयी। पर हंसिनियों ने उसका फिर से देख लिया तो वे फिर से लौट आयीं।

वे उसके ऊपर उड़ने लगीं और इस ताक में लगी रहीं कि जब भी उनको मौका मिले तो वह उसके भाई को उससे छीन लें। तभी उसको ओवन दिखायी दे गया।

वह बोली — "मॉ ओवन मॉ ओवन। मुझे कहीं छिपा लो।"

ओवन बोला — "पहले तुम मेरा राई का बन खाओ।"

लड़की ने तुरन्त ही उसमें से निकाल कर एक बन खा लिया और ओवन को धन्यवाद दे कर अपने भाई को ले कर ओवन के अन्दर बैठ गयी।

हंसिनियॉ वहॉ उड़ती रहीं और उनको पुकारती रहीं पर कोई जवाब न मिलने पर फिर नाउम्मीद हो कर वहॉ से बाबा यागा के पास चली गयीं।

उनके जाने के बाद लड़की ने ओवन को एक बार फिर से धन्यवाद दिया और अपने भाई को ले कर अपने घर की तरफ भाग ली।

जैसे ही वह घर पहुॅची उसके कुछ देर बाद ही उसके माता पिता काम से वापस आ गये और उसकी यह लापरवाही दोनों में से किसी को पता नहीं चली।

5 फ़ैनिस्ट बाज़[29]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि रूस में एक बहुत ही अमीर किसान अपनी तीन बेटियों के साथ रहता था। कूछ दिन बाद उसकी पत्नी मर गयी तो उसकी सबसे छोटी बेटी मारूष्का[30] बोली — "पिता जी आप चिन्ता मत कीजिये घर मैं सँभाल लूँगी।"

और वह एक अच्छी गृहस्थी सँभालने वाली साबित हुई। पर उसकी दोनों बड़ी बहिनें बहुत ही आलसी और कामचोर थीं। उनको कोई भी चीज़ बहुत देर तक खुश नहीं रख सकती थी – न तो कोई पोशाक, न कोई फ्राक, न ही कोई काफ्तान।

एक दिन वह किसान बाजार जाने के लिये तैयार हुआ तो उसने अपनी बेटियों से पूछा कि वह उनके लिये वहाँ से क्या ले कर आये।

उसकी बड़ी बेटियाँ तुरन्त बोलीं — 'पिता जी आप हम दोनों के लिये खूब बढ़िया सिल्क का शाल ले कर आना जिस पर लाल और सुनहरे रंग में फूल बने हों।"

मारूष्का चुप रही तो पिता ने उससे पूछा — "और बेटी तुम्हारे लिये?"

---

[29] Fenist the Falcon – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[30] Marushka – the name of the youngest daughter

मारूष्का बोली — "पिता जी, मेरे लिये तो बस फ़ैनिस्ट बाज़[31] का एक पंख लेते आइयेगा।"

यह सुन कर किसान बाजार चला गया और जब वह वहाँ से लौट कर आया तो वह अपनी दोनों बड़ी बेटियों के लिये तो दो शाल ले लाया पर फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख उसको सारे बाजार में ढूँढने पर भी नहीं मिला।

कुछ महीने बाद वह फिर बाजार गया तो उसने फिर अपनी बेटियों से पूछा कि वह उनके लिये बाजार से क्या लाये।

उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने कहा कि वह उनके लिये चाँदी के जूते ले कर आये पर मारूष्का ने धीरे से कहा — "पिता जी, मेरे लिये तो वही फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लेते आइयेगा।"

उस दिन भी वह किसान सारे दिन बाजार में फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख ढूँढता रहा। वह अपनी बड़ी बेटियों के लिये चाँदी के जूते तो खरीद लाया पर फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख उसे उस दिन भी कहीं नहीं मिला।

और एक बार फिर वह मारूष्का की मँगायी हुई चीज़ नहीं ला सका। एक बार फिर उसकी बेटी ने उसको तसल्ली दी — "पिता जी आप बहुत चिन्ता न करें आपको वह फिर मिल जायेगा।"

कुछ महीने बाद वह किसान एक बार फिर बाजार जाने लगा तो उसने अपनी बेटियों से एक बार फिर पूछा कि वह उनके लिये क्या

[31] Translated for the word "Falcon". See its picture above

ले कर आये तो उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने उससे कहा कि वह उनके लिये नारंगी रंग के गाउन ले कर आये।

पर जब मारूष्का से पूछा गया तो उसने वही कहा — "पिता जी, मेरे लिये तो वही फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लेते आइयेगा।"

पिता बाजार चला गया। उसने अपनी बड़ी बेटियों के लिये नारंगी गाउन तो खरीद लिये पर फैनिस्ट बाज़ का पंख उसको उस दिन भी हर दूकान पर पूछने पर भी कहीं नहीं मिला।

वह बेचारा बड़ा नाउम्मीद हो कर घर लौट रहा था कि रास्ते में उसको एक बहुत ही बूढ़ा मिला। वह बूढ़ा किसान से बोला — "गुड डे भाई। तुम किधर जा रहे हो?"

किसान ने जवाब दिया — "तुमको भी गुड डे भाई। मैं बड़ा दुखी हो कर घर वापस जा रहा हूँ। मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझसे फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लाने के लिये कहा था पर मुझे लाख ढूँढने पर भी वह कहीं नहीं मिला।"

वह बूढ़ा आदमी मुस्कुराया। उसने अपनी जेब से बिर्च के पेड़ की छाल का एक बक्सा निकाला और उस किसान से बोला — "जो तुम्हें चाहिये वह मेरे पास है। मुझे मालूम है कि तुम्हारी बेटी इस पंख के लायक है सो यह पंख उसी का है।"

कह कर उस बूढ़े आदमी ने वह पंख बक्से के साथ उस किसान को दे दिया। वह किसान बहुत खुश हो गया।

हालॉकि किसान को वह पंख किसी दूसरे मामूली पंख जैसा ही लगा पर उसने उस पंख को ले कर उस बूढ़े आदमी को धन्यवाद दिया और अपने घर चला गया।

घर पहुँच कर उसने अपनी तीनों बेटियों की चीज़ें उनको दे दीं। उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने अपने अपने गाउन पहन कर देखे और अपनी सबसे छोटी बहिन की हॅसी उड़ायी — "इस पंख को तो तुम अपने बालों में लगा लेना और फिर देखना तुम कितनी सुन्दर लगती हो।"

मारूष्का बस ज़रा सा मुस्कुरा दी बोली कुछ नहीं।

उस रात को जब घर में सब लोग सो गये तो मारूष्का ने बक्से में से अपना वह पंख निकाला और नीचे फर्श की तरफ उड़ा दिया। फिर वह फुसफुसायी — "मेरे पास आओ ओ फैनिस्ट, मेरे चमकीली ऑखों वाले बाज़।"

और वह पंख तुरन्त ही एक चमकीली ऑखों वाले नौजवान में बदल गया। वह नौजवान इतना सुन्दर था जितना कि सुबह का आसमान होता है।

दोनों आपस में तब तक बात करते रहे जब तक सुबह पौ नहीं फट गयी। पर पौ फटते ही वह नौजवान फर्श से टकराया और फिर से बाज़ बन गया। मारूष्का ने अपनी खिड़की खोल दी और वह बाज़ उसमें से हो कर आसमान में उड़ गया।

इस तरह उसने उस नौजवान को तीन रात बुलाया।

लेकिन चौथी रात को उसकी दोनों बड़ी बहिनों ने किसी को अपनी बहिन के कमरे में बातें करते सुन लिया और सुबह को एक बाज़ को उसकी खिड़की से बाहर उड़ते देख लिया।

उस दिन दोनों खुराफाती बहिनों ने अपनी बहिन के कमरे की खिड़की पर एक बहुत ही तेज़ चाकू लगा दिया। जब रात हुई तो जब वह बाज़ वहाँ आया तो उस तेज़ चाकू से टकरा गया। उसके दोनों पंख उसकी धार से कट गये थे।

मारूष्का तो सो रही थी। वह सोती रही उसको कुछ पता ही नहीं चला।

बाज़ एक गहरी साँस ले कर बोला — "अच्छा विदा प्रिये। अगर तुम मुझे सचमुच प्यार करती हो तो तुम मुझे फिर पा लोगी। पर मुझे पाना इतना आसान नहीं होगा।

तुमको धरती के दूसरे छोर तक जाना पड़ेगा। तुमको तीन लोहे के जूते और तीन लोहे के डंडे तोड़ने होंगे और तीन पत्थर की डबल रोटी खानी होंगी।"

रात के अँधेरे में किसी तरह से मारूष्का ने उसके ये शब्द सुन लिये। वह तुरन्त बिस्तर से उठी और अपनी खिड़की की तरफ भागी पर उसको देर हो चुकी थी। वह बाज़ तो जा चुका था। उसकी खिड़की पर तो बस उसके कुछ खून की बूँदें पड़ी थीं।

मारूष्का बहुत देर तक रोती रही। वह इतना रोयी कि उसके आँसुओं में वे खून की बूँदें बह गयीं।

अगली सुबह वह अपने पिता के पास गयी और बोली — "पिता जी मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं अपने प्यार को ढूँढ सकूँ। मैं अपना प्यार ढूँढने जा रही हूँ।"

किसान बेचारा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ कि उसकी बेटी इतनी मुश्किल यात्रा पर जा रही है पता नहीं वह फिर उसको कब देख पायेगा। पर उसको मालूम था कि उसको उसे जाने देना ही चाहिये।

सो उसके आशीर्वाद से मारूष्का ने तीन लोहे के जूते बनवाये, तीन लोहे के डंडे बनवाये और तीन पत्थर की डबल रोटियाँ बनवायीं। उन सबको ले कर वह धरती के उस छोर की तरफ अपनी लम्बी यात्रा पर निकल पड़ी।

वह खुले हुए मैदानों में चली, वह अँधेरे जंगलों में से हो कर गुजरी, वह उँची ऊँची पहाड़ियों पर चढ़ी।

चिड़ियों ने उसको अपने गीतों से खुश रखा, नदियों ने उसके पैर धोये और अँधेरे जंगलों ने उसका स्वागत किया। किसी जंगली जानवर ने उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचाया क्योंकि उन सबको मालूम था कि वह एक वफादार लड़की थी।

वह तब तक चलती रही जब तक उसका एक लोहे का जूता टूटा, एक लोहे का डंडा टूटा और उसने एक पत्थर की डबल रोटी खा ली।

उसी समय वह जंगल में एक खुली जगह में निकल आयी। वहाँ उसको एक छोटी सी झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी। वह गोल गोल घूम रही थी और उसमें कोई खिड़की नहीं थी।

मारूष्का बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

यह सुन कर मुर्गी के पैरों पर खड़ी हुई वह झोंपड़ी घूमती घूमती रुक गयी और मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर बेधड़क चली गयी। उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर बाबा यागा[32] लेटी हुई थी। वह एक पतली सी स्त्री थी जिसकी लम्बी टेढ़ी नाक थी और एक दाँत था जो उसकी ठोड़ी के नीचे तक लटका हुआ था।

मारूष्का उससे डरी नहीं। उसने जादूगरनी को अपने बारे में बताया कि वह क्या करने निकली थी और उससे अपनी सहायता करने की प्रार्थना की।

बाबा यागा बोली — "मेरी प्यारी बच्ची, तुमको तो अभी बहुत दूर जाना है क्योंकि फ़ैनिस्ट तो बहुत दूर रहता है।

उस देश की रानी एक बहुत ही बुरी जादूगरनी है जिसने तुम्हारे फैनिस्ट को एक जादू का रस पिला दिया है। उस रस के जादू के

[32] Baba Yaga – a very famous Russian folktale character, a witch, normally wicked, but sometime she helps too.

असर से उसने उसको अपने आपसे शादी करने के लिये भी राजी कर लिया है। पर मैं उसको ढूँढने में तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।

लो यह लो चॉदी की तश्तरी और सोने का अंडा और इनको ले कर उसके महल चली जाओ। हो सकता है कि रानी इनको खरीदना चाहे पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक कि वह तुम को फ़ैनिस्ट बाज़ से न मिलने दे।"

उसके बाद बाबा यागा ने उसको सुनहरे धागे का एक गोला दिया और कहा कि वह उस धागे को जंगल में लुढ़काती चली जाये तो वह उसको उसकी दूसरी बहिन के पास पहुँचा देगा। वह वहॉ से उसको आगे बतायेगी कि उसको क्या करना है।"

बाबा यागा को धन्यवाद दे कर मारूष्का अपने रास्ते पर चल दी। पेड़ों ने उसका रास्ता रोक लिया, जंगल बहुत अँधेरा हो गया और उस अँधेरे में उल्लू भी बोलने लगे।

फिर भी वह चलती गयी चलती गयी जब तक कि उसका दूसरा लोहे का जूता नहीं टूट गया, दूसरा लोहे का डंडा नहीं टूट गया और उसकी पत्थर की दूसरी डबल रोटी भी खत्म नहीं हो गयी।

उसी समय वह जंगल में एक खुली जगह पर आ गयी। वहॉ पर भी उसको एक छोटी सी झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी भी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी और वह भी गोल गोल घूम रही थी।

वहाँ जा कर मारूष्का फिर बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

यह सुन कर मुर्गी के पैरों पर खड़ी वह घूमती हुई झोंपड़ी भी रुक गयी और उसमें खिड़कियाँ और एक दरवाजा खुल गया। मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर भी बेधड़क चली गयी।

उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर एक दूसरी बाबा यागा लेटी हुई थी। यह बाबा यागा अपनी बहिन से भी ज़्यादा बदसूरत और पतली दुबली थी।

मारूष्का ने उसको अपनी कहानी सुनायी और उसको उसकी बहिन के दिये हुए चाँदी की तश्तरी और सोने का अंडा दिखाये।

वह बोली — "बहुत अच्छे मेरी प्यारी बिटिया। मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। यह सोने की सुई और चाँदी का फ्रेम[33] ले जाओ हो सकता है कि वह रानी इनको खरीदना चाहे। पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक वह तुमको तुम्हारे फैनिस्ट से मिलने न दे।

मगर इससे पहले तुमको मेरी बड़ी बहिन के पास जाना पड़ेगा। इसके आगे वही तुमको बतायेगी कि तुमको क्या करना है।"

[33] Frame – a frame of wood or iron or any metal used to keep the cloth in place to embroider it. See its picture above. In this picture it is round It may be rectangular or sqaure too.

मारूष्का ने दूसरी बाबा यागा को धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गयी। उसने वह सोने के धागे वाला गोला फिर से आगे लुढ़काया और उसके पीछे पीछे पेड़ों के बीच में से हो कर चली।

इस बार पेड़ों की शाखाओं ने उसके कपड़ों की आस्तीनें फाड़ दीं, उसके चेहरे पर खरोंचें डाल दीं, चिड़ियों ने भी कोई गीत नहीं गाया और जंगली जानवर भी उसकी तरफ रास्ते भर देखते रहे। पर वह पीछे देखे बिना ही आगे बढ़ती रही।

धीरे धीरे उसके तीसरे लोहे के जूते भी फट गये, तीसरा लोहे का डंडा भी टूट गया और तीसरी पत्थर की डबल रोटी भी खत्म हो गयी।

उसी समय वह तीसरी खुली जगह में आ निकली। वहाँ भी उसको पहले जैसी एक झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी भी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी और घूम रही थी।

वहाँ जा कर मारूष्का फिर बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

मुर्गी के पैरों पर खड़ी हुई घूमती हुई वह झोंपड़ी भी यह सुन कर तुरन्त रुक गयी और मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर बेधड़क चली गयी।

उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर तीसरी बाबा यागा लेटी हुई थी। यह बाबा यागा अपनी दोनों बहिनों से भी ज़्यादा बदसूरत और पतली दुबली थी।

मारूष्का ने उसको भी अपनी कहानी सुनायी। वह बाबा यागा बोली — "फ़ैनिस्ट बाज़ को पाना आसान नहीं है, प्यारी बेटी। तुम को धरती के आखीर तक जाना पड़ेगा। पर तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।

तुम यह चाँदी की अटेरन[34] लो और यह सोने की तकली[35] लो और इनको ले कर महल चली जाओ। हो सकता है कि रानी तुमसे इनको ख़रीदना चाहे पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक कि वह तुमको तुम्हारे फ़ैनिस्ट बाज़ से न मिलने दे।"

मारूष्का ने उसको भी धन्यवाद दिया और अपना सोने के धागे वाला गोला जमीन पर लुढ़का दिया। वह धागा उसको एक बड़े डरावने जंगल में से ले कर चला।

वह अभी बहुत दूर नहीं गयी थी कि उसने किसी के चिंघाड़ने की और पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनायी दी। बहुत सारे उल्लू वहाँ से उड़े और उसके चारों तरफ घूमने लगे। बहुत सारे चूहे

[34] Translated for the word "Distaff". The spun thread is kept on this. See its picture above.
[35] Translated for the word "Spindle". The cotton is spun from this. See its picture above.

उसके पैरों में इधर उधर घूमने लगे। खरगोश रास्ते पर कूदने लगे। वह डर कर रुक गयी।

तभी एक बड़ा सा भूरा भेड़िया वहाँ आ गया और मारूष्का से बोला — "डरो मत मारूष्का। आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुमको महल तक ले चलता हूँ।"

मारूष्का उसकी पीठ पर बैठ गयी और भेड़िया उसको सोने के धागे के गोले के पीछे पीछे हवा की तेज़ी से उड़ा कर ले चला।

घास के हरे हरे मैदान पलक झपकते निकल गये। पहाड़ जो आसमान तक ऊँचे ऊँचे थे वे भी आसानी से पार हो गये।

आखिर वे एक किस्टल के महल के पास आ पहुँचे। उसका सोने का गुम्बद सूरज की रोशनी में चमक रहा था। रानी उस महल की सफेद मीनार से नीचे झाँक रही थी।

मारूष्का ने भेड़िये को धन्यवाद दिया, अपनी गठरी उठायी और मीनार के नीचे की तरफ चली। वहाँ पहुँच कर वह बहुत ही नम्रता से बोली — "योर मैजेस्टी, क्या आपको किसी ऐसी नौकरानी की जरूरत है जो सूत काते बुनाई और कढ़ाई करे?"

रानी बोली — "ओ लड़की, अगर तुम यह तीनों काम कर सकती हो तो अन्दर आ जाओ और काम करना शुरू कर दो।"

इस तरह मारूष्का उस महल में नौकरानी का काम करने लगी।

एक दिन मारूष्का ने सारा दिन बिना रुके काम किया और जब शाम आयी तो उसने अपना सोने का अंडा और चॉदी की तश्तरी ली और रानी को दिखायी।

तुरन्त ही वह अंडा उस तश्तरी में घूमने लगा और घंटिया बजने की आवाज सुनायी आने लगी। अचानक उस तश्तरी में रूस के सारे बड़े बड़े शहर दिखायी देने लगे।

यह देख कर तो रानी बड़े आश्चर्य में पड़ गयी। वह बोली — "चॉदी की यह तश्तरी और सोने का यह अंडा तुम मुझे बेच दो।"

मारूष्का बोली — "योर मैजेस्टी, ये बेचने के लिये तो नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे चमकीली ऑखों वाले फ़ैनिस्ट बाज़ से मिलने दें।"

रानी राजी हो गयी बोली — "ठीक है। आज रात को जब वह सो जायेगा तब तुम उसके कमरे में जा सकती हो।"

जब रात हो गयी तो मारूष्का फ़ैनिस्ट बाज़ के कमरे की तरफ चली। वहॉ जा कर उसने देखा कि फ़ैनिस्ट बाज़ तो गहरी नींद सो रहा है।

उसने उसको जगाने की बहुत कोशिश की पर वह उसको जगा नहीं सकी क्योंकि रानी ने उसकी कमीज में जादू की एक पिन लगा दी थी।

उसने उसको जगाने की बहुत कोशिश की, उसको पुकारा, उसकी गहरी काली भौंहों को चूमा, उसके पीले हाथों को सहलाया पर वह तो सोता ही रहा किसी तरह भी नहीं जागा।

सुबह जब खिड़की से सूरज की किरनें अन्दर आयीं तब तक भी जब वह अपने प्रिय फ़ैनिस्ट को नहीं जगा सकी तो उसको वहाँ से वापस आना पड़ा।

अगले दिन फिर उसने लग कर काम किया और शाम को उसने अपना चाँदी का फ्रेम और सोने की सुई निकाली। सुई ने अपना काम अपने आप करना शुरू कर दिया तो मारूष्का बुड़बुड़ायी — "तू एक ऐसा कपड़ा काढ़ जिससे वह अपनी आँखों की भौंहों को रोज सुबह साफ कर सके।"

इस बार मारूष्का ने रानी को सुई और फ्रेम दिखाया तो रानी उसको भी तुरन्त ही खरीदने के लिये कहने लगी। मारूष्का ने फिर वही जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, ये बेचने के लिये तो नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे फ़ैनिस्ट को एक बार फिर से देखने दें।"

रानी फिर राजी हो गयी — "ठीक है, तुम उसको आज की रात फिर देख सकती हो।"

जब रात हुई तो मारूष्का एक बार फिर से फ़ैनिस्ट के सोने के कमरे में गयी पर वह तभी भी बहुत ही गहरी नींद सो रहा था। बहुत उठाने पर भी वह नहीं उठा।

वह बोली — "ओह मेरे प्यारे फ़ैनिस्ट, मेरे बहादुर चमकीली ऑखों वाले बाज़ जागो और मुझसे बात करो।"

पर वह तो गहरी नीद ही सोता रहा क्योंकि चालाक रानी ने उसके बालों में कंघी करते समय एक जादू की पिन लगा दी थी जिसकी वजह से मारूष्का उसको लाख कोशिश करने पर भी नहीं जगा सकी। सुबह होने पर उसको अपनी कोशिश छोड़ देनी पड़ी और उसको वहॉ से आना पड़ा।

उस दिन भी उसने सारा दिन खूब लग कर काम किया और जब शाम हुई तो उसने अपनी चॉदी की अटेरन और सोने की तकली निकाली और रानी को दिखायी।

पहले की तरह से रानी ने इस बार भी उनको उससे खरीदना चाहा पर मारूष्का ने फिर से वही जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, ये चीज़ें बेचने के लिये नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे फ़ैनिस्ट को एक बार आखिरी बार फिर से देखने दें।"

रानी यह सोचते हुए फिर राजी हो गयी कि मारूष्का उसको जगाने में कामयाब नहीं हो पायेगी क्योंकि आज उसको वह जादू का रस पिला कर सुला देगी। वह बोली— "ठीक है, तुम उसको आज की रात एक बार और देख सकती हो।"

रात हुई और मारूष्का एक बार फिर आखिरी बार फ़ैनिस्ट के सोने वाले कमरे में घुसी। फ़ैनिस्ट और दिनों की तरह से आज भी गहरी नींद सो रहा था।

मारूष्का फिर बोली — "ओह मेरे प्यारे फ़ैनिस्ट, मेरे बहादुर चमकीली ऑखों वाले बाज़ जागो और मुझसे बात करो।"

पर वह नहीं जागा तो वह नाउम्मीद हो कर रो पड़ी। फ़ैनिस्ट सारी रात सोता रहा और हालॉकि मारूष्का ने उसको जगाने की फिर से बहुत कोशिश की पर वह नहीं उठा।

अब सुबह होने वाली थी सो मारूष्का ने अखिरी विदा कहने और बाहर जाने से पहले उसके काले बालों में अपना हाथ फेरा कि उसका एक गर्म ऑसू उसके गालों से लुढ़क कर फ़ैनिस्ट के कन्धे पर गिर पड़ा। इससे फ़ैनिस्ट की मुलायम खाल जल गयी।

इस जलन को महसूस कर के वह हिला और उसने अपनी ऑखें खोल दीं। मारूष्का को वहॉ देख कर वह तुरन्त उठ बैठा और बोला — "अरे, क्या यह तुम हो? मेरा खोया हुआ प्यार।"

कहते कहते वह रो पड़ा। उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे। "इसका मतलब यह है कि तुमने तीन लोहे के जूते और तीन लोहे के डंडे तोड़ दिये और तीन पत्थर की डबल रोटियॉ भी खा लीं।

तुम धरती के इस कोने तक यात्रा कर आयीं। अब हमको कोई अलग नहीं कर सकता मारूष्का, कोई नहीं।"

अब फ़ैनिस्ट का जादू टूट चुका था सो वह मारूष्का को शाही दरबार में ले गया। वहॉ दरबार ने फैसला दिया कि रानी को देश निकाला दे दिया जाये और मारूष्का को वहॉ की रानी बना दिया जाये क्योंकि वह बहुत बहादुर थी, अक्लमन्द थी और मजबूत थी।

और फिर ऐसा ही हुआ।

6 मेंढकी राजकुमारी[36]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बार रूस में एक राजा और रानी रहते थे। उनके तीन बेटे थे।

जब वे राजकुमार बड़े हो गये तो राजा ने उनको बुलाया और बोला — "मेरे प्यारे बेटों, अब तुम्हारी शादी का समय आ गया है। तुम लोग ऐसा करो कि अपने अपने तीर कमान लो और उससे अपना अपना तीर फेंको। जो लड़की तुम्हारा तीर वापस ले कर आयेगी वही तुम्हारी दुलहिन होगी।"

तीनों राजकुमारों ने पिता को सिर झुकाया, अपना अपना तीर कमान उठाया, तीर कमान पर चढ़ाया और कमान की डोरी खींच कर तीर चला दिया।

सबसे बड़े बेटे का तीर एक कुलीन आदमी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

दूसरे बेटे का तीर एक व्यापारी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

[36] The Frog Princess – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book :
"Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. 2000. 96 p.
[A similar story is told in India too in which the prince's arrow is caught by a female monkey, instead of a female frog, and he has to marry her. Read this story in the book "Mere Bachpan Ki Kahaniyan" under the title "Bandariya Dulhaniya" written by Sushma Gupta in Hindi language.]

और तीसरे और सबसे छोटे बेटे का तीर? वह कहाँ गिरा और उसे कौन ले कर आया?

उसके तीसरे सबसे छोटे बेटे राजकुमार इवान[37] ने जो अपना तीर चलाया तो वह इतना ऊँचा गया कि उसको तो वह दिखायी ही नहीं पड़ा।

वह बेचारा आधे दिन तक अपना तीर ढूँढता रहा तब कहीं जा कर उसको वह तीर जंगल के एक तालाब में मिला।

एक मेंढकी जो पानी में उगी हुई लिली के एक फूल पर बैठी हुई थी उसने उसको अपने मुँह में पकड़ा हुआ था। जब राजकुमार इवान ने उस मेंढकी से अपना तीर वापस माँगा तो वह बोली — "मैं तुम्हारा तीर तभी वापस करूँगी जब तुम मुझे अपनी दुलहिन बनाओगे।"

राजकुमार इवान कुछ नफरत के साथ बोला — "पर एक राजकुमार एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता है?"

राजकुमार अपने तीर को एक मेंढकी के मुँह में देख कर बहुत गुस्सा था पर वह अपने पिता की बात नहीं टाल सकता था इसलिये उसने उस मेंढकी को उठाया और उसको अपने महल ले गया।

[37] Prince Ivan – name of the third and the youngest Prince

जब उसने राजा को अपनी कहानी सुनायी और उसको मेंढकी दिखायी तो राजा ने कहा — "मेरे बेटे, अगर तुम्हारी किस्मत में एक मेंढकी से ही शादी करना लिखा है तो यही सही।"

सो उस रविवार को तीन शादियॉ हुईं – बड़े बेटे की शादी एक कुलीन आदमी की बेटी से हुई, बीच वाले बेटे की शादी एक व्यापारी की बेटी से हुई और तीसरे सबसे छोटे बेटे इवान की शादी एक मेंढकी से हुई।

कुछ समय बीत गया तो राजा ने अपने तीनों बेटों को फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, मैं यह देखना चाहता हूँ कि मेरे किस बेटे की पत्नी मेरे लिये सबसे अच्छी कमीज बना सकती है?"

तीनों बेटों ने पिता को सिर झुकाया और अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े बेटों को तो कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वे जानते थे कि उनकी पत्नियॉ को सिलाई आती थी पर सबसे छोटा वाला बेटा दुखी मन से अपने घर आया।

उसको दुखी देख कर मेंढकी कूदती हुई उसके पास आयी और टर्रायी — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

इवान बोला — "आज तो मुझे नीचा देखना पड़ेगा। राजा ने कहा है कि तुम उनके लिये सुबह तक एक कमीज सिल दो।"

मेंढकी बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा ही खूबसूरत होती है।"

राजकुमार खाना खा कर सो गया। जैसे ही राजकुमार सो गया मेंढकी दरवाजे से कूद कर बाहर चबूतरे पर निकल गयी। उसने अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था। उसने ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों मेरी पुकार सुनो, एक कमीज सिलो जैसी मेरे पिता पहनते थे

बस रात भर में कमीज तैयार थी। सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो वह मेंढकी मेज पर बैठी थी। उसके हाथ में एक कढ़े हुए कपड़े में लिपटी हुए एक कमीज थी।

राजकुमार तो उसको देख कर बहुत खुश हो गया। उसको ले कर वह तुरन्त ही राजा के पास गया। राजा उस समय अपने बड़े बेटों की लायी हुई कमीजें देख रहा था।

उसके पहले बेटे ने उसके सामने अपनी लायी कमीज फैला कर दिखायी। राजा ने उस कमीज को उठाया और बोला — "यह कमीज तो एक किसान के पहनने लायक भी नहीं है।"

फिर उसके दूसरे बेटे ने अपनी लायी हुई कमीज राजा के सामने फैलायी तो राजा उसको देख कर नाक भौं सिकोड़ कर बोला —

"अरे, इस कमीज को तो कोई बर्तन बनाने वाला भी नहीं पहनेगा।"

अब इवान की बारी आयी तो उसने भी अपनी लायी कमीज राजा के सामने फैलायी। उसकी कमीज तो बहुत ही सुन्दर सोने और चॉदी के तारों से कढ़ी हुई थी। उसको देखते ही राजा का दिल खुश हो गया और उसकी ऑखों में चमक आ गयी।

वह बोला — "हॉ यह कमीज है राजा के पहनने के लायक।"

कमीजें दिखा कर तीनों राजकुमार अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े वाले बेटे बुड़बुड़ाते चले जा रहे थे — "हम लोग इवान की पत्नी की बेकार में ही हॅसी उड़ा रहे थे। लगता है कि वह जरूर ही कोई जादूगरनी है।"

फिर कुछ समय और बीत गया। राजा ने अपने तीनों बेटों को एक बार फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, तुम्हारी पत्नियों को अबकी बार मेरे लिये सुबह तक एक डबल रोटी बनानी है। देखते हैं कि तीनों में से सबसे अच्छा खाना कौन बनाता है।"

इस बार फिर राजकुमार इवान फिर महल से बहुत दुखी हो कर चला। जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुक्म सुनाया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा खूबसूरत होती है।"

इस बीच दोनों बड़े बेटों ने शाही रसोईघर से एक बुढ़िया को बुलवा भेजा और यह देखने के लिये उसको इवान के घर भेजा कि देख कर आओ कि वह मेंढकी खाना कैसे बनाती है।

पर मेंढकी ने भी यह भॉप लिया कि उन दोनों के मन में क्या था। उसने थोड़ा सा आटा बनाया, उसको बेला और सीधे आग में डाल दिया।

वह बुढ़िया यह खबर देखने के लिये जल्दी से सीधी उन दोनों भाइयों के पास आयी तो उन दोनों भाइयों की पत्नियों ने भी ऐसा ही किया जैसा मेंढकी ने किया था।

पर जैसे ही वह बुढ़िया वहॉ से चली गयी मेंढकी कूद कर दरवाजे के बाहर चबूतरे पर गयी और अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था।

उसने फिर ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों इतनी मीठी डबल रोटी बनाओ, जैसी मेरे पिता खाते थे

अगली सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो एक सफ़ेद कपड़े में लिपटी हुई एक करारी सी डबल रोटी देख कर बहुत खुश हो

गया। वह उसको अपने पिता के पास ले गया। वहाँ उसका पिता उसके भाइयों की लायी डबल रोटियाँ देख रहा था।

सबसे पहले उसने अपने सबसे बड़े बेटे के घर की बनी हुई डबल रोटी देखी। उसकी डबल रोटी चूल्हे की आग से बिल्कुल काली हो गयी थी और उसमें गुठलियाँ पड़ गयी थीं। उसने गुस्सा हो कर वह डबल रोटी रसोईघर में भेज दी।

फिर उसने अपने दूसरे बेटे की डबल रोटी देखी तो वह भी आग से जल कर काली हो गयी थी और उसमें भी गुठलियाँ पड़ गयी थीं। वह डबल रोटी भी उसने रसोईघर में भिजवा दी।

पर जब इवान ने अपनी डबल रोटी राजा को दी तो राजा उसको देख कर बहुत खुश हो गया और उसके मुँह से निकला — "यह है डबल रोटी जो शाही खाने की मेज की शान बढ़ायेगी।"

राजा ने उसी दिन शाम को एक दावत का इन्तजाम किया और अपने तीनों बेटों से उस दावत में अपनी अपनी पत्नियों को लाने के लिये कहा। वह देखना चाहता था कि उसकी तीनों बहुओं में से कौन सी बहू सबसे अच्छा नाचती थी।

एक बार फिर इवान महल से बहुत दुखी हो कर चला। वह सोचता जा रहा था कि आज तो वह गया। वह मेंढकी बेचारी कैसे नाचेगी।

जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुक्म सुना दिया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम दुखी न हो राजकुमार इवान। तुम शाम को ऐसा करना कि तुम अकेले ही दावत में जाना। मैं तुम्हारे बाद में आऊँगी। जब तुम्हें बिजली की कड़क की आवाज सुनायी दे तो अपने मेहमानों से कहना कि तुम्हारी पत्नी अपनी गाड़ी में आ रही है।"

सो राजकुमार इवान उस दावत में अकेले ही चला गया जबकि उसके दोनों भाई अपनी अपनी पत्नियों के साथ आये थे। उनकी पत्नियों ने अपने सबसे अच्छे कपड़े और गहने पहन रखे थे।

राजा और रानी, उनके बेटे और उनकी पत्नियॉ और सब कुलीन मेहमान खाना खाने बैठे ही थे कि अचानक बाहर बिजली कड़की और सारा महल हिल गया। सब लोग घबरा गये।

इवान ने सब लोगों को शान्त किया — "घबराओ नहीं ओ भले लोगों। यह मेरी पत्नी है जो अपनी गाड़ी में आ रही है।"

तभी उसकी पत्नी अन्दर आयी। वह एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी थी। वह नीले रंग का गाउन पहने थी जिस पर चॉदी के सितारे जड़े हुए थे और उसके सुनहरे बालों में आधा चॉद सजा हुआ था।

उसकी सुन्दरता को शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता। राजकुमार इवान उसको देख कर बहुत खुश हो गया और वहॉ बैठे मेहमान भी उसको और उसके बढ़िया कपड़ों और गहनों के ही देखे जा रहे थे।

लोगों ने खाना खाना शुरू किया तो बड़े भाइयों की पत्नियों ने देखा कि मेंढकी राजकुमारी ने भुने हुए हंस[38] की हड्डियॉ अपनी दॉयी आस्तीन में छिपा लीं और बची हुई शराब उसने बॉयी आस्तीन में छिपा ली। वे उसको देखती रहीं – हड्डियॉ एक आस्तीन में और शराब की कुछ बूँदें दूसरी आस्तीन में।

जब खाना खत्म हो गया तो राजा ने नाच शुरू करने का हुक्म दिया। मेंढकी राजकुमारी ने नाचना शुरू किया। वह घूम घूम कर नाचती रही और मेहमान लोग पीछे हट कर उसका नाच देखते रहे।

जब उसने अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से एक चमकती हुई झील निकल पड़ी और जब उसने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से कई हंस निकल कर उस झील में तैरने लगे।

यह देख कर वहॉ बैठे सारे कुलीन मेहमानों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसके बाद दोनों बड़े भाइयों की पत्नियों ने नाचना शुरू किया। जब उन्होंने अपना एक हाथ हिलाया तो उनकी भीगी हुई आस्तीन राजा के लाल चेहरे पर जा कर लगीं और जब दूसरा हाथ हिलाया

[38] Translated for the word “Swan”.

तो दूसरी आस्तीन से हड्डियॉ निकल कर राजा की ऑख में जा पड़ीं।

यह देख कर राजा बहुत नाराज हुआ और नाच छोड़ कर चला गया। पर इस बीच राजकुमार इवान यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसकी पत्नी एक बहुत ही अक्लमन्द और सुन्दर राजकुमारी थी।

पर उसको डर भी लगा कि उसकी पत्नी कहीं फिर से मेंढकी में न बदल जाये सो वह महल से चुपचाप खिसक लिया और घर चला गया। वहॉ उसने उसकी मेंढक वाली खाल उठा कर आग में डाल दी।

जब उसकी पत्नी वापस आयी तो उसको घर में अपनी खाल नहीं मिली तो वह रो पड़ी और बोली — "ओह राजकुमार इवान, यह तुमने क्या किया? अगर तुमने केवल तीन दिन और इन्तजार किया होता तो हम लोग हमेशा के लिये खुशी खुशी रह रहे होते। अब हमको अलग होना पड़ेगा।

और अगर तुम मुझे ढूँढना भी चाहोगे तो तुमको "एक बीसी और नौ"[39] जमीन के भी आगे "भयानक पुरानी हड्डियों के राज्य"[40] में से हो कर जाना पड़ेगा।"

[39] Translated for the words "One Score and Nine"

[40] Translated for the words "Realm of Old Bones the Dread"

यह कह कर वह एक भूरे रंग की कोयल में बदल गयी और खिड़की से बाहर उड़ गयी।

एक साल गुजर गया और राजकुमार इवान अपनी पत्नी को ढूँढता रहा। जब दूसरा साल शुरू हुआ तो उसने अपने पिता से आशीर्वाद लिया और अपनी पत्नी को ढूँढने चल दिया।

यह तो पता नहीं कि इवान ऊपर चला या नीचे चला, दूर चला या पास चला क्योंकि मैंने सुना नहीं, बहुत समय तक चला या थोड़ी देर तक चला क्योंकि मैं इस बात का अन्दाजा भी नहीं लगा सका।

पर मुझे इतना पता है कि अपनी पत्नी को ढूँढते ढूँढते उसके जूते बहुत जल्दी ही टूट गये, उसके कपड़े फट गये और उसका चेहरा बहुत दुबला हो गया और वह पीला पड़ गया।

एक दिन जब उसने अपनी सारी उम्मीदें छोड़ दी थीं और वह जंगल के एक खुले हिस्से में घूम रहा था तो वहाँ उसको एक झोंपड़ी दिखायी दी जो मुर्गी की टाँगों पर खड़ी थी और बराबर घूमे जा रही थी।

इवान बोला — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। मेहरबानी कर के अपनी पीछे वाला हिस्सा तुम पेड़ों की तरफ कर लो और अपना सामने का हिस्सा मेरी तरफ कर लो।"

तुरन्त ही वह झोंपड़ी रुक गयी और उसमें अन्दर जाने के लिये एक दरवाजा खुल गया। इवान उस दरवाजे में से उस झोंपड़ी में

घुसा। जैसे ही उसने उस झोंपड़ी के अन्दर पैर रखा तो उसको वहाँ एक बुढ़िया दिखायी दी।

उस बुढ़िया ने इवान से पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

इवान ने उसको अपनी सारी कहानी सुनाते हुए जवाब दिया — "दादी माँ, मैं अपनी मेंढकी राजकुमारी को ढूँढ रहा हूँ।"

बाबा यागा ने अपना सिर ना में हिलाया और एक लम्बी सी साँस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने उस मेंढकी की खाल जलायी ही क्यों? क्योंकि "अक्लमन्द येलेना"[41] ही तो तुम्हारी मेंढकी पत्नी थी।

वह अपने ताकतवर पिता से भी बढ़ कर अक्लमन्द थी इसी लिये उसका पिता उससे इतना नाराज था कि उसने उसको उसकी चौदहवीं सालगिरह पर तीन साल के लिये मेंढकी में बदल दिया था।"

राजकुमार इवान दुखी हो कर बोला — "लेकिन अभी मैं क्या करूँ दादी माँ, मैं उसको ढूँढने के लिये कुछ भी करूँगा।"

बाबा यागा आगे बोली — "अभी उसको भयानक पुरानी हड्डियों[42] ने अपने कब्जे में ले रखा है और वहाँ से उसको छुड़ाना आसान नहीं है क्योंकि आज तक उसको कोई नहीं मार सका है।

[41] Yelena – Yelena is a fairy in fairy tales of Russia. She is mentioned in "Firebird" story also published in this book.

[42] Translated for the words "Old Bones" – name of the giant who had captured the frog princess.

उसकी आत्मा एक सुई की नोक में है। वह सुई एक अंडे में है। वह अंडा एक बतख में है। वह बतख एक खरगोश में है। और वह खरगोश पत्थर के एक बक्से में है।

वह बक्सा एक ऊँचे से ओक के पेड़[43] के सबसे ऊपर रखा हुआ है और वह पुरानी हड्डी उसकी अपनी जान से भी ज़्यादा अच्छी तरह से रखवाली करता है।"

वह बूढ़ी जादूगरनी आगे बोली — "लो यह धागे का एक गोला ले जाओ। इसको तुम अपने सामने फेंक देना। फिर यह जिधर भी जाये तुम इसके पीछे पीछे चले जाना। यह तुमको रास्ता दिखायेगा।"

बाबा यागा को उसकी सहायता के लिये धन्यवाद दे कर इवान ने धागे का वह गोला अपने सामने फेंक दिया और जंगल में उसके पीछे पीछे चलने लगा।

इवान चलता गया चलता गया और एक साफ खाली जगह आ निकला। वहाँ उसको एक बड़ा कत्थई रंग का भालू मिल गया। वह उस भालू के ऊपर तीर चलाने ही वाला था कि वह भालू उससे आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

[43] Oak tree is a very large shady tree.

राजकुमार को उस भालू पर दया आ गयी। उसने उसको छोड़ दिया और आगे बढ़ गया। आगे जा कर उसको अपने ऊपर उड़ता हुआ एक सफेद नर बतख[44] मिला।

वह उसको भी अपने तीर से मारना चाहता था कि वह नर बतख भी आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।" राजकुमार ने उसकी ज़िन्दगी भी बख्श दी और आगे बढ़ गया।

उसी समय एक भेंगा खरगोश उसका रास्ता काटता हुआ वहाँ से गुजर गया। राजकुमार ने जल्दी से अपना निशाना साधा और उसको तीर मारने ही वाला था कि वह खरगोश भी आदमी आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार ने उसकी भी ज़िन्दगी बख्श दी और अपने धागे के गोले के पीछे पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

चलते चलते वह एक झील के पास आया तो झील के किनारे पर उसको एक पाइक मछली[45] पड़ी हुई मिली। वह हवा के लिये तरस रही थी उसको हवा की जरूरत थी।

वह मछली बोली — "मुझ पर दया करो राजकुमार इवान। मुझे इस झील में फेंक दो क्योंकि एक दिन तुमको मेरी जरूरत पड़ेगी।"

[44] Translated for the word "Drake"

[45] Pike fish is a large size fish

राजकुमार इवान ने उस मछली को झील में फेंक दिया और फिर अपने धागे के गोले के पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

काफी शाम हो जाने के बाद वह एक ओक के पेड़ के पास आया जो बहुत ऊँचा और मजबूत था। उस पेड़ की सबसे ऊँची शाखाओं पर पत्थर का एक बक्सा रखा था जिस तक पहुँचना ही नामुमकिन सा था।

इवान अभी यह सोच ही रहा था कि वह उस बक्से को नीचे कैसे ले कर आये कि कहीं से वह कत्थई भालू वहाँ आ गया। उसने अपने मजबूत हाथों से उस पेड़ का तना पकड़ कर उसको जड़ से उखाड़ लिया।

उसके ऊपर रखा बक्सा नीचे गिर कर टूट गया और उसमें से एक खरगोश निकल कर तेज़ी से भाग गया।

तभी वह भेंगा खरगोश वहाँ आ गया। उसने उसका पीछा किया और उसको पकड़ कर फाड़ डाला। जैसे ही उस भेंगे खरगोश ने उस खरगोश को फाड़ा उसमे से एक बतख निकल कर ऊपर आसमान में उड़ गयी।

पल भर में ही सफेद नर बतख जिसकी ज़िन्दगी इवान ने बख्शी थी उसके ऊपर था और उसने उस बतख को इतनी ज़ोर से मारा कि उसमें से उसका अंडा निकल पड़ा। अंडा ऊपर से गिरा तो झील में गिरा। यह देख कर तो इवान रो पड़ा। उस झील में अब वह उस अंडे को कैसे ढूँढेगा?

पर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि पाइक मछली उस अंडे को लिये हुए किनारे पर तैरती चली आ रही है। राजकुमार ने तुरन्त ही उस अंडे को तोड़ा और उसमें सुई को ढूँढा। उसमें से सुई निकाल कर उसने उसको मोड़ना शुरू किया।

जितना ज़्यादा वह राजकुमार उस सुई को मोड़ता जाता था वह भयानक पुरानी हड्डियॉ भी अपने काले पत्थर के महल में बैठा उतना ही ज़्यादा ऐंठता जाता था और बल खाता जाता था।

आखिर उसने वह सुई तोड़ दी और उस सुई के टूटते ही वह भयानक पुरानी हड्डियॉ भी मर गया।

जैसे ही राजकुमार ने सोचा कि अब वह राजकुमारी को ले कर आये तो उसके सामने तो राजकुमारी येलेना खुद ही खड़ी थी।

वह एक लम्बी सी सॉस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने यहॉ आने में कितनी देर लगा दी मैं तो इस भयानक पुरानी हड्डियॉ से शादी करने वाली थी। इसने मुझे अपने काबू में कर रखा था।"

आखीर में दोनों मिल गये और रूस वापस लौट गये। वहॉ वे फिर बहुत साल तक खुशी खुशी रहे।

7 ज़ारेवना मेंढकी[46]

पुराने ज़ार के राज्य में, मुझे मालूम नहीं कब, एक राजा अपनी पत्नी राजकुमारी के साथ रहा करता था। उनके तीन बेटे थे तीनों नौजवान थे तीनों बहादुर थे इतने कि कोई उनकी बहादुरी का वर्णन नहीं कर सकता था।

उन तीनों में से जो सबसे छोटा राजकुमार था उसका नाम था इवान ज़ारेविच[47]। एक दिन उनके पिता ने उनसे कहा कि — "मेरे प्यारे बच्चों तुम लोग अपने अपने तीर कमान लो, अपने मजबूत कमान की डोरी खींचो और अपने तीरों को जाने दो। जिसके ऑगन में तुम्हारा तीर जा कर पड़ेगा उसी घर की लड़की से तुम्हारी शादी कर दी जायेगी।

सबसे बड़े ज़ारेविच का तीर एक बोयर[48] के घर में जा कर पड़ा जहॉ स्त्रियॉ रहती थीं। दूसरे ज़ारेविच का तीर एक बहुत ही अमीर सौदागर के लाल छज्जे पर जा कर पड़ा जहॉ एक बहुत ही सुन्दर लड़की खड़ी थी।

---

[46] The Tsarevna Frog – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap01.htm
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903.
Tsarevna or Tzarevna means princess. This tale is like its previous tale but with a little twist.

[47] Tsarevich or Tzarevich means Prince

[48] Boyar means a member of the old aristocracy in Russia, next in rank to a prince.

सबसे छोटे ज़ारेविच इवान का तीर बदकिस्मती से एक दलदल में जा कर पड़ा जहाँ उसे एक टर्राती हुई मेंढकी ने पकड़ लिया।

इवान ज़ारेविच अपने पिता के पास आया और बोला — "पिता जी मैं एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता हूँ। क्या वह मेरे बराबर की है? नहीं पिता जी निश्चित रूप से वह मेरे बराबर की नहीं है।"

पिता ने कहा — "चिन्ता मत करो। तुमको तो अब मेंढकी से ही शादी करनी पड़ेगी क्योंकि ऐसा लगता है कि यही तुम्हारी किस्मत है।"

इस तरह तीनों भाइयों की शादी कर दी गयी। सबसे बड़े बेटे की बोयर की बेटी से दूसरे बेटे की अमीर सौदागर की बेटी से और सबसे छोटे बेटे इवान की एक मेंढकी से।

कुछ समय बाद राज्य के राजा ने अपने तीनों बेटों को फिर बुलाया और कहा — "अपनी अपनी पत्नियों से कहो कि वे कल सुबह को मेरे लिये एक डबल रोटी बना कर रखें।"

इवान घर लौटा तो उसके चेहरे पर कोई मुस्कान नहीं थी और उसकी भौंहें सिकुड़ी हुई थीं।

मेंढकी ने राजकुमार से बड़े प्यार से पूछा — "टर्र टर्र। ओ मेरे प्रिय ज़ारेविच इवान, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या आज महल में कोई ख़राब बात हो गयी है?"

इवान ज़ारेविच बोला — "हॉ खराब बात ही तो हो गयी है। मेरे पिता ज़ार चाहते हैं कि तुम कल सुबह को उनके लिये एक डबल रोटी बनाओ।"

"ज़ारेविच तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। तुम आराम से जा कर सोओ। सुबह का समय काली शाम के समय से ज़्यादा अच्छा सलाहकार होता है।"

अपनी पत्नी की सलाह मान कर ज़ारेविच सोने चला गया। ज़ारेविच के जाने के बाद मेंढकी ने अपनी मेंढकी वाली खाल निकाल दी और अब वह एक बहुत सुन्दर लड़की बन गयी थी। उसका नाम था वासिलीसा।

वह घर के बाहर निकली और उसने आवाज लगायी — "ओ मेरी आयाओ और नौकरानियों तुरन्त आओ और मेरे लिये कल सुबह के लिये एक सफेद डबल रोटी बनाओ। बिल्कुल ऐसी ही डबल रोटी जैसी मैं अपने पिता के शाही महल में खाया करती थी।"

सुबह को जब इवान ज़ारेविच मुर्गे की बॉग के साथ सो कर उठा, और यह तो तुमको मालूम ही कि मुर्गे कभी अपनी बॉग लगाने में देर नहीं करते तो उसकी डबल रोटी तैयार थी।

वह डबल रोटी इतनी बढ़िया थी कि उसका वर्णन करना मुश्किल था। क्योंकि ऐसी डबल रोटियॉ तो केवल परियों के देश में हीं मिलती हैं। वह दोनों तरफ बहुत सुन्दर सुन्दर मूर्तियों और शहरों

और किलों से सजी हुई थी और अन्दर वह बरफ की तरह से सफेद और पंखों की तरह मुलायम थी।

पिता ज़ार उसको देख कर बहुत खुश हुआ और ज़ारेविच को खास धन्यवाद मिला।

ज़ार फिर मुस्कुराते हुए बोला — "अब एक दूसरा काम और है। तुम सब अपनी अपनी पत्नियों से मुझे कल सुबह तक एक एक कालीन[49] बना कर दो।"

ज़ारेविच इवान फिर मुँह लटकाये हुए घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने राजकुमार से बड़े प्यार से पूछा — "टर्र टर्र। ओ मेरे प्रिय ज़ारेविच इवान, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या तुम्हारे पिता उस डबल रोटी को देख कर खुश नहीं हुए?"

इवान ज़ारेविच बोला — "नहीं उससे तो वह बहुत खुश थे पर अब मेरे पिता ज़ार चाहते हैं कि तुम उनके लिये कल सुबह तक एक कालीन बनाओ।"

"तुम चिन्ता न करो ज़ारेविच और सोने जाओ। सुबह का समय हमारी जरूर ही सहायता करेगा।"

यह सुन कर ज़ारेविच इवान सोने चला गया। मेंढकी फिर से वासिलीसा में बदली और बाहर आ कर ज़ोर से आवाज लगायी — "ओ मेरी प्यारी आयाओ और वफादार नौकरानियों, अबकी बार तुम मेरे पास मेरे एक नये काम के लिये आओ। और मेरे लिये एक

[49] Translated for the word "Rug", not the carpet. Rug is a floor covering of thick woven material

ऐसा रेशम का कालीन बनाओ जैसे कालीन पर मैं अपने पिता राजा के महल में बैठा करती थी।"

जैसे ही वासिलीसा ने यह कहा कि तुरन्त ही उन्होंने उसके लिये एक रेशम का कालीन बना दिया।

सुबह को जब मुर्गों ने बॉग दी तब ज़ारेविच इवान जागा और लो वहॉ तो दुनियॉ का सबसे सुन्दर रेशम का कालीन रखा हुआ था। एक ऐसा कालीन जिसका कोई वर्णन नहीं कर सकता था।

उस कालीन में चमकीले रेशम के तारों के बीच सोने चॉदी के तार भी बुने हुए थे। और वह कालीन तो बस सिवाय तारीफ के और किसी काबिल था ही नहीं।

ज़ार पिता उस कालीन को देख कर बहुत खुश था और अपने बेटे को इतने सुन्दर कालीन के लिये बहुत धन्यवाद दिया। इसके बाद उसने एक नया हुकुम जारी किया।

अबकी बार वह अपने सुन्दर बेटों की सुन्दर पत्नियों को देखना चाहता था। और इसके लिये उनको उन्हें अगले दिन पेश करना था।

"टर्र टर्र। प्रिय ज़ारेविच, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या किसी ने तुमको महल में कोई बुरी बात कह दी है?"

"हॉ बुरी बात तो कह दी है। मेरे पिता ज़ार ने हम सबको यह हुक्म दिया है कि हम तीनों अपनी अपनी पत्नियों को उनके सामने ले

जा कर पेश करें। अब बताओ कि मैं तुम्हारे साथ कैसे जा सकता हूँ।"

मेंढकी धीरे से टर्रायी और बोली — "यह कोई बहुत बुरा तो नहीं हो सकता पर उससे बुरा भी हो सकता है। ऐसा करो कि तुम अकेले ही जाओ और मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊँगी।

जब तुम ज़ोर की आवाज सुनो तो तुम उससे डर मत जाना बस यही कहना "एक बदकिस्मत मेंढकी एक बदकिस्मत बक्से में आ रही है।"

इवान राजी हो गया हालाँकि उसकी समझ में कुछ नहीं आया। ज़ार के महल में उसके दोनों बड़े भाई अपनी अपनी सुन्दर चमकती हुई खुश बढ़िया कपड़े पहने पत्नियों के साथ पहले आये।

दोनों ने आ कर इवान ज़ारेविच का बहुत मजाक बनाया क्योंकि वह तो अकेला ही आया था।

उन्होंने उससे हँसते हुए पूछा — "भाई तुम अकेले क्यों आये हो? अपनी पत्नी को साथ ले कर क्यों नहीं आये? क्या तुम्हारे पास उसको ढकने के लिये कोई फटा कपड़ा भी नहीं था? तुम्हें ऐसी सुन्दरता मिल भी कहाँ सकती थी?

हम इस बात की शर्त लगाते हैं कि उसके पिता के पूरे दलदल के राज्य में ऐसी सुन्दरता कोई दूसरी नहीं होगी।"

और फिर वे हँसते रहे हँसते रहे।

और फिर एक बहुत ज़ोर का शोर सुनायी दिया। सारा महल कॉप गया वहॉ बैठे सारे मेहमान डर गये। अकेला ज़ारेविच शान्त खड़ा रहा फिर बोला — "डरने की कोई बात नहीं है। मेरी मेंढकी अपने बक्से में आ रही है।"

सबने देखा कि लाल पोर्च में छह सफेद घोड़ों से जुती हुई एक उड़ने वाली सुनहरी गाड़ी रुकी और उसमें से सुन्दर वासिलीसा ने अपना हाथ अपने पति की तरफ बढ़ाया।

इवान उसका हाथ पकड़ कर उसको ओक की लकड़ी की बनी हुई भारी भारी मेजों की तरफ ले गया जिन पर बर्फ की तरह से सफेद मेजपोश बिछे हुए थे और जिन पर बहुत सारे स्वादिष्ट खाने लगे हुए थे जो केवल परियों के देश में ही मिलते थे और वहीं खाये जाते थे। मेहमान लोग भी वहॉ खुशी से खाना खा रहे थे और बात कर रहे थे।

वासिलीसा ने गिलास में से थोड़ी सी शराब पी और जो बाकी बची वह उसने अपनी बॉयी आस्तीन में डाल ली। फिर उसने तले हुए हंस के कुछ टुकड़े खाये और उनकी हड्डियॉ अपनी दॉयी आस्तीन में डाल लीं। दोनों बड़े भाइयों की पत्नी ने यह देख लिया तो उन्होंने भी उसकी नकल करते हुए वैसा ही किया।

जब खाना खत्म हो गया तो सब लोग नाचने के लिये उठे। सुन्दर वासिलीसा जो वहॉ एक चमकता तारा लग रही थी सबसे पहले आगे आयी। पहले वह अपने राजा ज़ार के सामने झुकी फिर

उसने मेहमानों के सामने सिर झुकाया उसके बाद अपने खुश पति ज़ारेविच इवान के साथ नाचने लगी।

नाचते समय वासिलीसा ने अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से कमरे के बीच में एक झील प्रगट हो गयी जिससे वहॉ की हवा ठंडी हो गयी। फिर उसने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से सफेद हंस निकल कर झील के पानी में तैरने लगे।

ज़ार, वहॉ बैठे मेहमान, नौकर, यहॉ तक कि भूरी बिल्ली भी जो वहॉ एक कोने में बैठी थी वह भी सुन्दर वासिलीसा की सुन्दरता को देख कर हैरान रह गये।

इवान के दोनों बड़े भाइयों की पत्नियॉ तो उसको देख कर बहुत ही जल रही थीं। जब उनके नाचने की बारी आयी तो उन्होंने भी अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी जैसे वासिलीसा ने हिलायी थी तो उन्होंने तो सारी तरफ शराब फैला दी।

उसके बाद उन्होंने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से बजाय हंसों के उनकी हड्डियॉ निकल कर पिता ज़ार के चेहरे पर जा पड़ीं। इससे पिता ज़ार बहुत गुस्सा हो गया और उसने उनको महल के बाहर निकाल दिया।

इस बीच इवान ज़ारेविच एक पल तो देखता रहा फिर वह वहॉ से किसी तरह बिना किसी के देखे निकल गया। वह तुरन्त अपने घर गया, अपनी पत्नी की मेंढकी की खाल ढूँढी और उसको आग में डाल कर जला दिया।

जब वासिलीसा घर वापस आयी तो अपनी खाल ढूँढने लगी पर वह उसको मिली नहीं तो वह बहुत दुखी हो गयी और उसकी ऑखों में ऑसू आ गये।

उसने अपने पति ज़ारेविच इवान से कहा — "ओ प्रिय ज़ारेविच, यह तुमने क्या किया। अब तो मेरे लिये इस मेंढक की बदसूरत खाल पहनने का बहुत थोड़ा सा ही समय बाकी रह गया था। वह समय पास ही था जब हम हमेशा के लिये एक साथ खुशी खुशी रहते। पर अब तुम्हें मुझे एक दूर देश में ढूँढना पड़ेगा जिसका रास्ता कोई नहीं जानता – अमर कोशची[50] के महल का रास्ता।"

इतना कह कर वह एक सफेद हंस में बदल गयी और खिड़की के रास्ते उड़ गयी। ज़ारेविच इवान तो यह देख सुन कर बहुत ज़ोर से रो पड़ा। फिर उसने भगवान से प्रार्थना की उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम की तरफ क्रास बनाया और किसी अनजाने सफर पर निकल पड़ा।

कोई नहीं जानता कि यह सफर कितना लम्बा था पर चलते चलते एक दिन वह एक बूढ़े से मिला। उसने बूढ़े को सिर झुकाया तो बूढ़ा बोला — "गुड डे ओ बहादुर नौजवान। तू क्या ढूँढ रहा है और किधर जा रहा है?"

ज़ारेविच इवान ने उसको बिना कुछ छिपाये हुए अपनी बदकिस्मती के बारे में सब सच सच बता दिया।

[50] Koschie the Deathless – a villain in Russian folklores, a friend of Baba Yaga.

तो बूढ़े ने पूछा — "तो तूने उसकी वह मेंढकी वाली खाल जलायी ही क्यों? यह तूने कितना गलत काम किया।

अब तू मेरी बात सुन। वासिलीसा अपने पिता से भी ज़्यादा अक्लमन्द पैदा हुई थी। वह अपनी बेटी की अक्लमन्दी से बहुत जलता था इसलिये उसने अपनी बेटी को तीन साल तक मेंढकी बने रहने का शाप दे दिया।

पर मुझे तुझ पर दया आती है और मैं तेरी सहायता करना चाहता हूँ। ले यह एक जादू की गेंद ले। इस गेंद को अपने सामने फेंक देना और जिस तरफ यह जाये तू भी इसके पीछे पीछे चले जाना।"

ज़ारेविच इवान ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और उसकी दी हुई गेंद अपने सामने फेंक दी। अब जिधर को भी वह गेंद चली वह उसके पीछे पीछे चल दिया।

वह चलता गया चलता गया। चलते चलते वह एक फूलों वाले मैदान में निकल आया। वहाँ उसको एक भालू मिला, एक रूसी भालू।

इवान ज़ारेविच ने अपन तीर कमान लिया और उसको मारने ही वाला था कि भालू बोला — "ओ दयालु ज़ारेविच मुझे मत मारो। कौन जानता है कि किसी दिन मैं तुम्हारे काम आ जाऊँ।" इवान ने उस भालू को छोड़ दिया।

वहाँ पर धूप में एक बतख उड़ी जा रही थी, एक सफेद प्यारी सी बतख। ज़ारेविच इवान ने उसको मारने के लिये एक बार फिर अपना तीर कमान उठाया कि वह बतख भी बोल पड़ी — "ओ भले ज़ारेविच मुझे मत मारो। मैं किसी दिन तुम्हारे काम जरूर आऊँगी।"

सो इवान ने उसको भी छोड़ दिया और आगे चल दिया। आगे चल कर उसको एक बड़ा खरगोश[51] मिला तो ज़ारेविच इवान ने उसको मारने के लिये फिर से अपना तीर कमान निकाला कि तभी उसने कहा — "मुझे मत मारो ओ बहादुर ज़ारेविच मैं बहुत जल्दी ही तुम्हारी सहायता करूँगा।"

सो इवान ज़ारेविच ने उस बड़े खरगोश को भी छोड़ दिया। अब वह फिर आगे चला तो वह एक समुद्र के किनारे आ गया।

उस समुद्र के किनारे पर रेत में एक मछली पड़ी थी। मुझे उस मछली का नाम तो नहीं मालूम पर वह एक बहुत बड़ी मछली थी और उस रेत पर पड़ी पड़ी मरने वाली हो रही थी।

मछली इवान से बोली — "ओ ज़ारेविच इवान मेरे ऊपर दया करो मुझे इस समुद्र के ठंडे पानी में फेंक दो।" ज़ारेविच इवान ने ऐसा ही किया और समुद्र के किनारे किनारे आगे चल दिया।

[51] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit-like animal, but a little bigger than rabbit. See its picture above.

इवान के आगे चलती चलती गेंद इवान को एक झोंपड़ी के पास ले आयी। यह एक अजीब सी छोटी सी झोंपड़ी थी जो एक छोटी सी मुर्गी की टॉगों पर खड़ी हुई थी

इवान उसको देख कर बोला — "इज़बूष्का इज़बूष्का।" रूसी भाषा में इसका मतलब होता है छोटी झोंपड़ी। "इज़बूष्का मैं चाहता हूँ कि तू अपना सामने का हिस्सा मेरी तरफ कर ले।"

और लो उस झोंपड़ी ने तो अपना सामने का हिस्सा इवान के सामने कर लिया। इवान उसके अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसमें तो एक जादूगरनी बैठी हुई है। वह जादूगरनी तो इतनी बदसूरत थी कि उसने इससे पहले कभी इतना बदसूरत कोई देखा नहीं था।

उस जादूगरनी ने उसको देखते ही पूछा — "ओ इवान ज़ारेविच तुम यहॉ क्यों आये हो?"

इवान गुस्से से चिल्ला कर बोला — "ओ बूढ़ी बुरा करने वाली, क्या रूस ने तुझे एक थके हुए मेहमान से इसी तरीके से सवाल करना सिखाया है? बजाय इसके कि तू उसको कुछ खाने को दे, कुछ पीने को दे, हाथ मुँह धोने के लिये थोड़ा सा गर्म पानी दे और तू उससे ऐसा सवाल कर रही है?"

वह जादूगरनी बाबा यागा[52] थी। तब बाबा यागा ने ज़ारेविच को बहुत सारा खाना दिया बहुत सारा पीने को दिया और मुँह हाथ धोने के लिये गर्म पानी दिया। ज़ारेविच इवान यह सब कर के ताजा हुआ।

जल्दी ही वह बात करने के लायक हो गया तो उसने उसको अपनी शादी की अजीब कहानी सुनायी। उसने उसे बताया कि कैसे उसकी पत्नी उससे खो गयी थी और अब उसकी बस एक ही इच्छा थी और वह थी उसको पाना।

जादूगरनी बोली — "मुझे सब मालूम है। आजकल वह अमर कोशची के महल में है। और तुम्हें यह पता होना चाहिये कि वह एक बहुत ही भयानक आदमी है।

वह उसकी दिन रात रखवाली करता है और कोई भी उसे कभी भी नहीं जीत सकता। उसकी मौत एक जादू की सुई में है। वह सुई एक बड़े खरगोश के अन्दर है वह खरगोश एक बड़े बक्से के अन्दर है। वह बक्सा ओक के पेड़ की डालियों के बीच छिपा हुआ है।

और वासिलीसा की तरह कोशची इस ओक के पेड़ की भी दिन रात रखवाली करता है। इसका मतलब है कि किसी भी खजाने से ज़्यादा।"

[52] Baba Yaga is one of the main evil characters of Russian folklores. Of course in this folktale she helps the Prince.

तब जादूगरनी ने इवान ज़ारेविच को बताया कि वह ओक का पेड़ उसे कहाँ मिलेगा। सुनते ही इवान उधर की तरफ चल दिया। पर जब उसने ओक का पेड़ देखा तो वह बड़ा नाउम्मीद हुआ। उसे समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे और अपना काम कहाँ से शुरू करे।

लो तभी उसका जानने वाला रूसी भालू वहाँ आ गया। वह पेड़ के पास पहुँचा और उसको जड़ से उखाड़ दिया।

जड़ से उखड़ते ही वह पेड़ नीचे गिर पड़ा और उस पर रखा बक्सा भी नीचे गिर गया। नीचे गिरते ही वह बक्सा टूट गया। बक्से के टूटते ही उसमें एक बड़ा खरगोश निकल कर भाग गया।

तभी इवान ने देखा कि उसका दोस्त बड़ा खरगोश कहीं से आया और उसके पीछे पीछे भागा। इवान वाले बड़े खरगोश ने कोश्ची वाले बड़े खरगोश को तुरन्त ही पकड़ लिया और उसे फाड़ दिया।

खरगोश के फटते ही उसमें से एक भूरी बतख निकल कर भागी और आसमान में बहुत ऊँची उड़ गयी और गायब हो गयी। पर इवान की सुन्दर सफेद बतख ने उसका पीछा किया और उसको मार दिया।

उसके मरते ही उसमें से एक अंडा निकल पड़ा और वह अंडा समुद्र के नीले पानी में गिर पड़ा। यह देख कर तो ज़ारेविच की जान ही निकल गयी। अब वह उसमें से सुई कैसे निकालेगा कैसे

वह कोशची को मारेगा और फिर कैसे अपनी सुन्दर वासिलीसा को हासिल करेगा।

कि तभी उसने देखा कि वह बड़ी वाली मछली जिसको उसने समुद्र में फेंका था समुद्र में से बतख का अंडा लिये चली आ रही है। उसने अंडा ला कर समुद्र के किनारे की रेत पर फेंक दिया। इवान ज़ारेविच ने तुरन्त वह अंडा उठाया और उसे तोड़ कर उसमें से सुई निकाल ली जिस पर कोशची की ज़िन्दगी निर्भर थी।

उसी समय कोशची की सारी ताकत हमेशा के लिये जाती रही। इवान ज़ारेविच उस सुई को ले कर उसके राज्य में घुस गया और उसको उस जादुई सुई से मार दिया। उसके एक महल में उसको सुन्दर वासिलीसा भी मिल गयी।

वह उसको ले कर घर आ गया और फिर वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

8 मार्या मोरेवना[53]

एक बहुत दूर जगह में एक बहुत दूर देश में एक आदमी रहता था जिसका नाम था इवान ज़ारेविच[54]। उसके तीन बहिनें थीं – मैरी ज़ारेविच, ओल्गा ज़ारेविच और अन्ना ज़ारेविच[55]।

समय गुजरता गया और उनके माता पिता दोनों मर गये। जब वे मर रहे थे तो उन्होंने अपने बेटे से कहा — "बेटा तुम अपनी बहिनों को उस पहले आदमी को दे देना जो सबसे पहले उनका हाथ माँगे। उनको घर पर बिठा कर मत रखना।" इवान ने अपने माता पिता को दफ़न कर दिया।

एक दिन वह अपनी तीनों बहिनों के साथ बागीचे में घूमने के लिये गया।

अचानक एक काला बादल उनके सिर के ऊपर आ गया और उसके साथ ही बड़े ज़ोर का तूफान भी आ गया। इवान बोला — "जल्दी करो बहिनों हम लोगों को जल्दी ही अन्दर चलना चाहिये।"

---

[53] Marya Morevna – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book :
"Russian Folk-Tales". Translated by Robert Chandler. Boulder (CO), Shambhala. 1980. 67 p.
[My Note : This story is given in Andrew Lang's "Red Fairy Book" under the title "The Death of Koschei the Deathless". Because in this story this deathless man dies at the hands of Ivan. You can read this story at https://en.wikisource.org/wiki/The_Red_Fairy_Book/The_Death_of_Koschei_the_Deathless] This is the same story as this.

[54] Ivan Tzarevich – the name of a man – Tzarevich means "the child of Tzar"

[55] Mary Tzarevich, Olga Tzarevich and Anna Tzarevich – the names of the three sisters of Ivan Tzarevich

जैसे ही वे महल में घुसे तो गरज की आवाज सुनायी दी। कमरे की छत फट गयी और एक चमकीला बाज़[56] कमरे में आ गया। वह सीधे फर्श पर गया और एक सुन्दर लड़ने वाले में बदल गया।

वह बोला — "गुड डे इवान ज़ारेविच। मैं पहले एक मेहमान की तरह से आया था पर अब मैं एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूँ। मैं तुम्हारी बहिन मैरी ज़ारेविच का हाथ माँगने आया हूँ।"

इवान बोला — "अगर मेरी बहिन चाहती है तो मैं रास्ते में नहीं आऊँगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।" मैरी राजी हो गयी। उस बाज़ ने मैरी से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

घंटों पर घंटे निकलते गये दिनों पर दिन निकलते गये और फिर एक साल कब निकल गया पता ही नहीं चला।

एक बार फिर इवान और उसकी बहिनें बागीचे में घूमने गये। तो एक बार फिर एक काला बादल आया, एक बार फिर एक तूफान उठा और एक बार फिर बिजली चमकी। और एक बार फिर इवान अपनी बहिनों के साथ अन्दर महल में चला गया।

[56] Translated for the word "Falcon". See its picture above.

जैसे ही वे महल के अन्दर घुसे गरज की आवाज आयी और छत फाड़ता हुआ एक गरुड़[57] उसमें से अन्दर घुसा। वह भी फर्श की तरफ उड़ा और एक बहुत सुन्दर लड़ने वाले नौजवान में बदल गया।

वह बोला — "गुड डे इवान। मैं यहॉ पहले एक मेहमान की तरह आया था और अब एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूॅ। मैं तुम्हारी बहिन ओल्गा का हाथ मॉगने आया हूॅ।"

इवान ने उसको भी वही जवाब दिया जो उसने पहले उम्मीदवार को दिया था — "अगर मेरी बहिन राजी है तो मैं रास्ते में नहीं आऊॅगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।" ओल्गा राजी हो गयी। उस गरुड़ ने ओल्गा से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

इसके बाद तीसरा साल निकल गया। इवान ने अपनी सबसे छोटी बहिन से कहा — "चलो, बागीचे में घूमने चलते हैं।"

सो वे दोनों बागीचे में घूमने चले गये। वे लोग थोड़ी ही देर वहॉ घूमे होंगे कि एक बार फिर एक काला बादल आया, एक बार फिर एक तूफान उठा और एक बार फिर एक बिजली चमकी।

[57] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

एक बार फिर इवान अपनी बहिन अन्ना के साथ अन्दर महल में चला गया। जैसे ही वे महल के अन्दर घुसे गरज की आवाज आयी और छत फाड़ता हुआ एक रैवन[58] अन्दर आया।

वह भी फर्श की तरफ उड़ा और एक सुन्दर लड़ने वाले नौजवान में बदल गया। पहले दो लड़ने वाले भी काफी सुन्दर थे पर वे इसके मुकाबले में कुछ भी नहीं थे।

वह बोला — "गुड डे इवान। मैं यहॉ पहले एक मेहमान की तरह आया था और अब एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूँ। मैं तुम्हारी बहिन अन्ना का हाथ मॉगने आया हूँ।"

इवान ने उसको भी वही जवाब दिया जो उसने पहले दो उम्मीदवारों को दिया था — "अगर मेरी बहिन राजी है तो तुम उससे शादी कर सकते हो। मैं रास्ते में नहीं आऊँगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।"

अन्ना राजी हो गयी और उस रैवन ने अन्ना से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

इवान अगले पूरे साल अकेला ही रहा सो वह दुखी हो गया। एक दिन उसने सोचा कि वह अपनी बहिनों से मिल कर आता है। सो वह अपनी बहिनों से मिलने चल दिया।

[58] Raven is a crow-like bird. See its picture above.

चलते चलते उसको एक बड़ा शानदार कैम्प दिखायी दे गया। उस कैम्प की मालकिन मार्या मोरेवना[59] उससे मिलने के लिये बाहर आयी।

"गुड डे इवान ज़ारेविच। तुम कहाँ जा रहे हो? क्या तुम अपनी मर्जी से ऐसे ही जा रहे हो या फिर तुमको किसी चीज़ की जरूरत है?"

इवान बोला — "मैं एक आजाद आदमी हूँ। मैं वही करता हूँ जो मैं चाहता हूँ।"

मार्या बोली — "तब तुम अन्दर आओ और मेरे साथ कुछ समय रहो।"

इवान खुशी से राजी हो गया। वह वहाँ दो रात रहा। मार्या को उससे प्रेम हो गया तो उन दोनों ने शादी करली। मार्या उसको अपने राज्य ले गयी। वे वहाँ कुछ समय तक खुशी खुशी रहे।

फिर मार्या को लड़ाई को लिये जाना पड़ा। उसने अपना सब कुछ इवान को सौंपा और बस इतना कहा — "तुम जहाँ भी जाना चाहो जाना, तुम जो कुछ भी देखना चाहो देखना पर एक चीज़ तुम कभी नहीं करना और वह यह कि इस भंडारघर का दरवाजा कभी नहीं खोलना।"

अब इवान तो ऐसा ही था जैसे हम सब लोग होते हैं सो जैसे ही मार्या वहाँ से गयी वह तुरन्त ही उस भंडारघर की तरफ भागा

[59] Marya Morevna – name of the would-be wife of Ivan Tzarevich

गया जिसका दरवाजा मार्या ने उसको खोलने से मना किया था। उसने उसका दरवाजा खोला और अन्दर झॉका।

वहॉ कोशचेव लटका हुआ था जिसे कभी मौत नहीं आती। वह बारह लोहे की जंजीरों से बॅधा हुआ था।

कोशचेव उसको देखते ही बोला — "मुझ पर दया करो। मुझे कुछ पीने के लिये दो। मैं यहॉ बिना खाना खाये और बिना पानी पिये दस साल से लटका हुआ हूॅ। मेरा गला तो बिना पानी के बिल्कुल रेगमार[60] हो गया है।"

इवान उसके लिये एक बालटी पानी ले कर आया और उसे पीने के लिये दिया। कोशचेव ने उसे एक ही घूॅट में पी लिया और बोला — "मुझे एक बालटी से ज़्यादा पानी चाहिये। मुझे एक बालटी पानी और ले कर आओ।"

इवान उसके लिये एक बालटी पानी और ले आया। कोशचेव उस पानी को भी पी गया। फिर उसने तीसरी बालटी पानी मॉगा। इवान ने उसको तीसरी बालटी पानी भी ला दिया।

जैसे ही उसने वह तीसरी बालटी पानी पिया तो उसकी सारी पुरानी ताकत वापस आ गयी। उसने अपना शरीर एक बार हिलाया और अपनी बारहों जंजीरें तोड़ दीं।

[60] Translated for the word "Sandpaper".

कोशचेव बोला — "तुम बहुत दयालु हो। पर मुझे डर है कि अब तुम मार्या को फिर कभी नहीं देख सकोगे। तुम उसको उसी तरह नहीं देख सकोगे जैसे तुम अपने कान नहीं देख सकते।"

फिर वह हवा का एक झोंका बना और खिड़की से बाहर चला गया। उसने मार्या को ढूँढ लिया और उसको उठा कर अपने घर ले गया।

इवान बहुत रोया बहुत रोया। बाद में उसने अपने ऑसू पोंछे और अपनी यात्रा पर जाने के लिये तैयार हुआ। दो दिन तक चलने के बाद तीसरे दिन सुबह वह एक बहुत ही बढ़िया महल के पास आया।

उस महल के पास एक ओक का पेड़[61] खड़ा था जिस पर एक चमकीला बाज़ बैठा था। इवान को देखते ही उस बाज़ ने उस पेड़ पर से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया।

आदमी बन कर वह बोला — "भाई साहब, आप कैसे हैं और दुनियॉ में क्या कुछ नया हो रहा है?"

इतने में राजकुमारी मैरी भी बाहर दौड़ी आ गयी। वह अपने भाई के गले लग गयी और उसका सारा हाल पूछने लगी कि वह कैसा रहा। फिर उसने उसको अपने बारे में बताया।

[61] Oak Tree – a kind of large shady tree

इवान उसके घर तीन दिन रहा फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

बाज़ बोला — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम यहाँ अपनी चाँदी की चम्मच छोड़ते जाइये। इससे हम आपको याद करते रहेंगे। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपनी चाँदी की चम्मच वहाँ छोड़ दी और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

इवान फिर दो दिन चला और तीसरे दिन एक और सुन्दर महल के पास आया। यह महल उस पहले वाले महल से भी ज़्यादा सुन्दर था।

इस महल के पास भी एक ओक का पेड़ था और इस पेड़ पर एक गरुड़ बैठा था। इवान को देख कर उसने भी वहाँ से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया।

उसने आवाज लगायी — "ओ ओल्गा, जल्दी से बाहर आओ, देखो तुम्हारा भाई आया है।"

ओल्गा तुरन्त ही बाहर दौड़ी आयी और अपने भाई को गले लगा कर उससे उसका हाल पूछा फिर उसने उसको अपने बारे में बताया।

इवान यहॉ भी तीन दिन ठहरा और फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

गरुड़ भी वही बोला जो बाज़ ने उससे कहा था — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम अपना चॉदी का कॉटा यहॉ छोड़ते जाइये शायद हमें इसकी कभी जरूरत पड़ जाये। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपना चॉदी का कॉटा वहॉ छोड़ा और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

वह फिर दो दिन चला तो तीसरे दिन की सुबह को उसको फिर एक महल दिखायी दिया। यह महल उस दूसरे महल से भी ज़्यादा सुन्दर और शानदार था। इस महल के पास भी एक ओक का पेड़ खड़ा था और इस ओक के पेड़ पर एक रैवन बैठा था।

रैवन ने इवान को देखा तो उसने भी पेड़ से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया। वह ज़ोर से बोला — "अन्ना, यहॉ आओ, देखो तुम्हारा भाई आया है।"

अन्ना तुरन्त ही बाहर दौड़ी आयी और भाई को गले लगाया और उससे उसका सारा हाल पूछा और फिर उसको अपना हाल बताया।

इवान यहॉ भी तीन दिन ठहरा और फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

रैवन बोला — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम अपनी चॉदी का सुँघनी वाला बक्सा यहॉ छोड़ते जाइये। इसको देख कर हम आपको याद करते रहेंगे। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपना चॉदी का सुँघनी वाला बक्सा वहॉ छोड़ा और उनको गुड बाई कह कर फिर अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

वह फिर दो दिन चला। तीसरे दिन की सुबह उसको मार्या मोरेवना मिल गयी। जैसे ही उसने इवान को देखा तो वह बहुत खुश हुई और खुशी के मारे रो पड़ी।

वह बोली — "इवान, तुमने मेरी बात क्यों नहीं सुनी? तुमने उस भंडारघर का दरवाजा खोला ही क्यों और कोशचेव को बाहर निकाला ही क्यों?"

इवान बोला — "मुझे माफ कर दो मार्या। पर अब उस बीती बात पर रोने से क्या फायदा। अब तुम बस मेरे साथ चलो, जल्दी से, इससे पहले कि कोशचेव आ जाये।"

दोनों तैयार हुए और वहॉ से चल दिये। कोशचेव उस दिन शिकार के लिये गया हुआ था। वह जब शाम को वापस लौट रहा था तो रास्ते में उसका घोड़ा ठोकर खा कर गिर पड़ा।

"अरे तुमको क्या हो गया है? क्या घर में कुछ गड़बड़ है?"

घोड़ा बोला — "इवान आया है और वह मार्या को ले गया है।"

कोशचेव ने पूछा — "क्या तुम उनको पकड़ सकते हो?"

घोड़ा बोला — "अगर तुमको कोई खेत बोना हो, जैसे गेंहू का खेत, तो पहले उसके बीज बोने के बाद पौधों के उगने का इन्तजार करो, फिर उसे काटो, फिर उसमें से भूसा निकालो।

फिर उसके दानों का आटा बनाओ, फिर उस आटे की पॉच ओवन भर कर डबल रोटियॉ बनाओ, फिर उन डबल रोटियों को खाओ तब कहीं बाहर जाने के लिये निकलो – तब भी पता नहीं कि हम उनको पकड़ सकें या नहीं।"

कोशचेव ने घोड़े को एड़ लगायी और दौड़ चला। उसने जल्दी ही इवान को पकड़ लिया।

उसने इवान से कहा — "मैं तुमको एक बार माफ कर सकता हूॅ क्योंकि तुमने एक बार मुझे पानी पिलाया था। मैं तुमको दोबारा भी माफ कर दूॅगा क्योंकि तुमने मुझे दूसरी बार पानी पिलाया था पर तीसरी बार मैं तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दूॅगा।"

कह कर उसने इवान से मार्या को लिया और उसको घर वापस ले आया। इवान बेचारा एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा।

वह वहॉ बैठा बैठा काफी देर तक रोता रहा। कुछ देर बाद वह फिर से मार्या को लाने के लिये चल दिया। कोशचेव उस समय बाहर गया हुआ था।

"चलो मार्या।"

"पर इवान वह हमको बहुत जल्दी पकड़ लेगा।"

"पकड़ लेता है तो पकड़ लेने दो। हम लोग कम से कम एक दो घंटे तो एक साथ गुजार लेंगे।" और वे दोनों वहॉ से फिर चल दिये।

शाम को जब कोशचेव घर लौट रहा था तो उसका घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर गया।

कोशचेव बोला — "तुमको क्या हो गया है? क्या घर में फिर कुछ गड़बड़ है?"

"इवान आया है और मार्या को ले गया है।"

"क्या तुम उसको पकड़ सकते हो?"

"अगर तुमको जौ का खेत बोना हो, तो पहले उसके बीज बोने के बाद पौधों के उगने का इन्तजार करो, फिर उसे काटो, फिर उसमें से भूसा निकालो।

फिर उससे बीयर बनाओ, फिर उसको पी कर धुत हो जाओ फिर सोओ और तब कहीं बाहर जाने के लिये निकलो – तब भी पता नहीं कि हम उनको पकड़ सकें या नहीं।"

कोशचेव ने फिर अपने घोड़े को एड़ लगायी और दौड़ चला। बहुत जल्दी ही उसने इवान को फिर से पकड़ लिया — "मैंने तुमको पहले ही कहा था इवान कि तुमको मार्या को देखना इतना ही मुश्किल होगा जितना कि अपने कान देखना।"

इतना कह कर उसने मार्या को उठाया और उसको ले कर घर आ गया और इवान वहाँ फिर वहीं अकेला बैठा रह गया। वह फिर वहाँ बैठा बैठा काफी देर तक रोता रहा।

पर एक बार फिर वह मार्या को लेने जा पहुँचा। इत्तफाक से उस बार फिर कोशचेव शिकार के लिये गया हुआ था।

"चलो मार्या।"

"पर इवान इस बार तो वह तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर देगा।"

"करने दो पर मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

सो वे फिर तैयार हुए और फिर वहाँ से चल दिये।

पर शाम को लौटते हुए कोशचेव का घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर पड़ा।

कोशचेव बोला — "तुमको क्या हो गया है? क्या घर में कुछ गड़बड़ है?"

"इवान आया है और मार्या को ले गया है।"

कोशचेव ने फिर अपने घोड़े को एड़ लगायी और उसे दौड़ा कर इवान को बहुत जल्दी ही पकड़ लिया।

वहाँ पहुँच कर उसने इवान के छोटे छोटे टुकड़े किये, उनको एक बैरल[62] में भरा, बैरल के मुँह को गोंद से बन्द किया, बैरल को लोहे के छल्लों से बाँधा और समुद्र में फेंक दिया। और मार्या को ले कर चला आया।

उसी समय इवान अपनी जो चाँदी की चीज़ें अपने तीनों जीजाओं के पास छोड़ आया था वे सब काली पड़ गयीं।

उनको काला पड़ते देखते ही वे सब चिल्लाये — "अरे ऐसा लगता है कि इवान के साथ कुछ खराब हो गया है।"

गरुड़ तुरन्त ही नीले समुद्र की तरफ उड़ गया। उसने उसमें से वह बैरल निकाला और उसको किनारे पर ले आया। बाज़ उड़ा और "ज़िन्दगी का पानी" ले आया और रैवन "मौत का पानी" लाने के लिये उड़ गया।

तीनों चिड़ियों ने उस बैरल को तोड़ा, उसमें से इवान के शरीर के सारे टुकड़े निकाले, उनको अच्छी तरह से धोया और फिर से उनको उनकी जगह पर लगा दिया।

रैवन ने उन टुकड़ों पर मौत का पानी छिड़का तो उसके वे सब टुकड़े एक साथ जुड़ गये। बाज़ ने उस शरीर के ऊपर ज़िन्दगी का पानी छिड़का तो इवान ने साँस ली और वह उठ कर खड़ा हो गया

[62] Barrel – a barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter.

और बोला — "ओह मेरे भगवान, मुझे लगता है कि मैं कई दिनों तक सोता रहा।"

उसके तीनों जीजा एक साथ बोले — "तुम तो कई दिनों से भी ज़्यादा दिनों तक सोते रहते अगर हम न होते। तुम्हारी छोड़ी हुई तीनों चीज़ों ने काली पड़ कर हमें बता दिया कि तुम्हारे साथ कुछ गड़बड़ हो गयी है।

बस हम सब तुमको बचाने भागे और तुम्हें बचा लिया। अब तुम हमारे साथ चलो और कुछ दिन हमारे साथ रहो।"

इवान बोला — "नहीं मेरे जीजा लोगों अभी नहीं, मुझे आज ही जाना होगा, मुझे अभी भी मार्या को ढूँढना है।" और वह मार्या को लाने के लिये फिर चल दिया।

जब उसने मार्या को ढूँढ लिया तो उसने मार्या से कहा — "तुम पहले कोशचेव को ढूँढो और उससे यह पता लगाओ कि उसको इतना अच्छा घोड़ा कहाँ से मिला।"

मार्या ठीक समय का इन्तजार करती रही और ठीक मौका मिलते ही उसने उससे यह पूछा कि उसको इतना अच्छा घोड़ा कहाँ से मिला।

कोश्चेव बोला — "यहाँ से एक तिहाई जमीन पार कर के जमीन के चौथे हिस्से में आग की नदी के उस पार एक बाबा यागा रहती है। उसके पास एक घोड़ी है जो उसको रोज एक बार दुनियाँ घुमाने ले जाती है।

उसके पास और भी बहुत सारे घोड़े घोड़ियॉ हैं। मैंने उसके पास तीन दिन रह कर उसके घोड़े घोड़ियों के चरवाहे का काम किया था। उस समय मैंने उसका एक भी घोड़ा नहीं खोया था। बस इसी बात से खुश हो कर उसने मुझे अपनी यह बच्ची घोड़ी[63] इनाम में दे दी थी।"

मार्या ने आश्चर्य से पूछा — "पर तुमने वह आग की नदी कैसे पार की?"

कोश्चेव बोला — "ओह वह नदी? उसको पार करने के लिये तो मेरे पास एक जादू का रूमाल है।

बस मुझे उसको अपने दाहिने कन्धे के ऊपर केवल तीन बार हिलाने की जरूरत पड़ती है और फिर वह एक ऊॅचा पुल बन जाता है। वह पुल उन आग की लपटों को पार कर के वहॉ तक पहुॅचने के लिये काफी ऊॅचा होता है।"

मार्या ने उसके कहे गये सारे शब्द बखूबी याद कर लिये और फिर उनको इवान को बता दिये। उसने कोशचेव का रूमाल भी चुरा लिया। इवान ने उस रूमाल के सहारे वह आग की नदी पार की और बाबा यागा की खोज में चल दिया।

वह काफी दूर तक बिना खाये पिये चलता रहा। अब उसको भूख लग आयी थी। वह खाने के लिये इधर उधर कुछ ढूॅढ रहा था

[63] Translated for the word "Foal". Foal is a below one-year old horse's female child. After one year to three years they are called Colt (male) and Filly (female).

कि तभी उसको समुद्र के ऊपर एक अजीब सी चिड़िया आती दिखायी दी।

उस चिड़िया के साथ उसके कुछ बच्चे भी थे तो इवान ने सोचा कि वह उनमें से एक बच्चे को खा कर अपनी भूख मिटायेगा।

पर वह चिड़िया बोली — "नहीं इवान नहीं। तुम मेरे बच्चे को छोड़ दो एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।"

इवान ने उसके बच्चे को छोड़ दिया और आगे बढ़ गया। आगे जंगल में उसको शहद की मक्खियों का एक छत्ता मिला तो वह बोला "मैं थोड़ा सा शहद ही खा लेता हूँ।"

रानी मक्खी बोली — "नहीं इवान नहीं। मेरा शहद तो छूना भी मत। एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।"

सो इवान ने शहद भी छोड़ा और आगे बढ़ गया। आगे चल कर उसको एक शेरनी मिली जो अपने बच्चों के साथ खेल रही थी। उसने कहा "मैं एक शेर का बच्चा ही खा लेता हूँ नहीं तो मैं तो अब भूख से मर ही जाऊँगा।"

शेरनी बोली — "नहीं नहीं इवान। मैं एक दिन तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। मेहरबानी कर के मेरे बच्चे को मत खाओ।"

"ठीक है मैं तुम्हारे बच्चे को नहीं खाता पर तुम अपना वायदा याद रखना।"

इस तरह वह बेचारा भूखा ही घूमता रहा। काफी देर के बाद वह बाबा यागा के घर तक पहुँच सका। उसके घर के चारों तरफ बारह खम्भे लगे हुए थे। उन बारह खम्भों में से एक खम्भे के सिवा सभी खम्भों पर आदमियों की खोपड़ियाँ लगी हुई थीं।

इवान बोला — "गुड डे दादी माँ।"

"गुड डे इवान। तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम यहाँ अपनी मर्जी से आये हो या फिर किसी जरूरत से आये हो?"

"मैं आपके पास काम करने के लिये आया हूँ। मुझे आपकी एक छोटी घोड़ी चाहिये।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी। पर इसके लिये तुमको ज़्यादा काम करने की जरूरत नहीं है केवल तीन दिन ही काम करने की जरूरत है। अगर तुम मेरी घोड़ियों को ठीक से रखोगे तो तुमको एक घोड़ी मिल जायेगी।

पर अगर तुम मेरी एक घोड़ी को भी खो दोगे तो मैं तुम्हारा सिर काट दूँगी और जो मेरा जो यह आखिरी खम्भा खाली पड़ा है उस पर लगा दूँगी। तैयार हो?"

इवान राजी हो गया। बाबा यागा ने उसको कुछ खाना पीना दिया और उसको काम पर लगा दिया। इवान ने घोड़ियों को बाहर निकाला।

उन्होंने अपनी पूँछ हिलायी और घास के मैदान की तरफ भाग गयीं। इससे पहले कि वह उनको देखता वे तो इधर उधर भाग कर चली गयीं।

वह एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा। कुछ देर बाद उसको नींद आ गयी। सूरज छिपने वाला था कि तभी वह समुद्र के ऊपर उड़ने वाली अजीब चिड़िया वहाँ आयी और इवान को जगाया।

"उठो इवान उठो। ज़रा देखो तो, तुम्हारी सब घोड़ियाँ तो अपनी घुड़साल में आ भी गयी हैं।"

इवान उठा और वापस घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी सारी घोड़ियाँ तो घुड़साल में खड़ी हैं।

पर उधर बाबा यागा अपनी घोड़ियों पर चिल्ला रही थी और उनको बुरा भला कह रही थी — "तुम लोग सारी की सारी यहाँ वापस क्यों आ गयीं?"

घोड़ियाँ बोलीं — "हम क्या करतीं। सारी दुनियाँ की बहुत सारी चिड़ियें वहाँ आ गयीं थीं और अगर हम वहाँ से न भागते तो वे तो अपनी चोंचों से हमारी आखें ही निकाल लेतीं।"

"कोई बात नहीं कल तुम लोग जंगल की तरफ चली जाना।"

इवान रात को चैन की नींद सोया। सुबह को बाबा यागा ने उससे कहा — "तुम अपने आपको ठीक से देखना इवान। अगर

आज रात एक घोड़ी भी वापस नहीं आयी तो कल तुम्हारा यह खूबसूरत सिर मेरे एक खम्भे पर सजा होगा।"

अगले दिन इवान ने सब घोड़ियों को घुड़साल से बाहर निकाला। घोड़ियों ने बाहर निकलते ही अपनी अपनी पूँछें हिलायीं और फिर से जंगल में काफी अन्दर तक भाग गयीं।

इवान फिर एक पत्थर पर बैठ गया और फिर रोने लगा। रोते रोते वह फिर वहीं सो गया।

वह सारा दिन सोता रहा। जब शाम हुई तो वहाँ एक शेर आया और बोला — "इवान उठो। देखो तुम्हारी घोड़ियाँ घुड़साल में सुरक्षित पहुँच गयी हैं।"

इवान उठा और फिर घर वापस आया। बाबा यागा अपनी घोड़ियों पर फिर से चिल्ला रही थी। वह अपनी घोड़ियों पर पहले दिन से भी ज़्यादा गुस्सा थी — "तुम लोग घर वापस क्यों आयीं?"

बेचारी घोड़ियाँ बोलीं — "हम क्या करतीं? सारी दुनियाँ के जंगली जानवर हमको फाड़ खाने के लिये वहाँ आ गये थे।"

बाबा यागा बोली — "ठीक है ठीक है। कल तुम लोग नीले समुद्र की तरफ भाग जाना।"

रात को इवान चैन की नींद सोया। सुबह को बाबा यागा ने इवान से कहा — "इवान इन घोड़ियों का ध्यान रखना। अगर तुमने एक भी घोड़ी खोयी तो तुम्हारा यह सुन्दर सिर मेरे उस बारहवें खम्भे पर टँगा होगा।"

इवान ने फिर घोड़ियॉ घुड़साल से बाहर निकालीं। बाहर निकलते ही उन्होंने सबने अपनी अपनी पूँछें हिलायीं और नीले समुद्र की तरफ भाग गयीं। वहॉ जा कर वे नीले समुद्र में गायब हो गयीं।

इवान फिर एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा। रोते रोते वह फिर सो गया।

जब शाम हो गयी तो वहॉ एक शहद की मक्खी भिनभिनाती आयी और इवान से बोली — "इवान, जाओ घर जाओ। हमने तुम्हारी तुम्हारी सब घोड़ियॉ घुड़साल में भेज दी हैं।

पर ध्यान रखना कि अब तुम बाबा यागा के सामने नहीं आना। वह तुमको देख नहीं पाये। तुम घुड़साल में घोड़ियों के चारे के बर्तन के पीछे छिप जाना।

वहॉ पर एक बहुत ही गन्दी सी खाल की बीमारी वाली बच्ची घोड़ी है जो हमेशा गोबर में लेटी रहती है। तुम उस घोड़ी को चुरा लेना, और वह भी आधी रात के बाद और उसको ले कर भाग जाना।"

इवान उठा और घुड़साल की तरफ चल दिया और घोड़ियों के खाने के बर्तन के पीछे जा कर छिप गया।

उधर बाबा यागा अपनी घोड़ियों को फिर से डॉट रही थी — "तुमको फिर से वापस आने की क्या जरूरत थी?"

घोड़ियॉ बोली — "हम कुछ भी नहीं कर सके। वहॉ उतनी सारी शहद की मक्खियॉ थी जितनी कभी तुमने ज़िन्दगी भर में नहीं

देखी होंगी। वे हमारे ऊपर सब तरफ से उड़ उड़ कर आ रही थीं और हमारी हड्डियों तक काटने की कोशिश कर रही थीं।"

यह सुन कर बाबा यागा सोने चली गयी। आधी रात को इवान ने वह गन्दी सी खाल की बीनारी वाली बच्ची घोड़ी उठायी और उस पर चढ़ कर आग की नदी की तरफ दौड़ गया।

वहाँ जा कर उसने अपना रूमाल अपने दाँये कन्धे के ऊपर तीन बार हिलाया तो वहाँ एक बहुत ऊँचा पुल खड़ा हो गया।

इवान ने वह पुल पार किया फिर दो बार उस रूमाल को अपने बाँये कन्धे के ऊपर हिलाया तो वह पुल तो वहीं रहा पर वह बहुत ही पतला हो गया था।

अगली सुबह बाबा यागा ने देखा कि उसकी एक बच्ची घोड़ी गायब थी। वह गुस्से में आग बबूला हो कर तुरन्त ही अपनी लोहे की ओखली में कूदी, अपने मूसल से उसको चलाया और अपनी झाड़ू से अपना रास्ता साफ करती हुई दौड़ गयी।

वह आग की नदी पर आयी तो सामने उसको पुल दिखायी दिया। उसने सोचा — "कितना शानदार पुल है।" और यह कह कर वह उस पुल के ऊपर दौड़ गयी।

पर यह क्या, वह पुल तो बीच में ही टूट गया। बाबा यागा उस आग की नदी में सिर के बल गिर पड़ी और एक बहुत ही दर्द भरी मौत मारी गयी।

इवान ने उस बच्ची घोड़ी को घास के मैदान में घास खिला कर मोटा किया। कुछ ही दिनों में वह बहुत ही बढ़िया घोड़ी हो गयी। इवान एक बार फिर मार्या के पास गया।

वह तुरन्त ही बाहर निकल कर आयी और खुशी से बोली — "ओह इवान, तुम अभी ज़िन्दा हो?"

इवान ने फिर उसको वह सब कुछ बताया जो उसके साथ वहाँ हुआ था और कहा — "चलो यहाँ से चलें।"

मार्या बोली — "पर इवान मुझे डर लगता है। अगर कहीं कोशचेव हम लोगों को फिर से पकड़ ले तो। और तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दे तो।"

इवान बोला — "नहीं इस बार वह ऐसा नहीं कर सकेगा। मेरी घोड़ी हवा की रफ्तार से भागती है।"

सो वे दोनों उस घोड़ी पर चढ़े और वहाँ से भाग लिये।

शाम को कोशचेव जब घर वापस लौट रहा था तो उसका घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर पड़ा।

"अरे तुमको क्या हो गया है? क्या घर में फिर कुछ गड़बड़ है?"

घोड़ा बोला — "इवान आया है और वह मार्या को ले गया है।"

कोशचेव ने पूछा — "क्या तुम उनको पकड़ सकते हो?"

घोड़ा बोला — "पता नहीं। इस बार इवान के पास एक नया घोड़ा है जो मुझसे भी ज़्यादा तेज़ दौड़ता है।"

कोशचेव चिल्लाया — "नहीं। मैं इस बात को सहन नहीं कर सकता।"

यह तो मुझे पता नहीं कि कोशचेव अपने घोड़े पर कितने घंटे या कितने दिन तक उसके पीछे भागा पर आखीर में उसने इवान को पकड़ ही लिया।

कोशचेव अपने घोड़े से जमीन पर कूदा और इवान को अपनी तलवार से मारने ही वाला था कि इवान की घोड़ी ने उसको बहुत ज़ोर से लात मारी और उसका सिर छोटे छोटे टुकड़े हो कर बिखर गया। इवान ने उसको फिर अपना एक मोटा सा डंडा मार कर खत्म कर दिया।

फिर उसने एक बहुत बड़ी आग जलायी, कोशचेव का शरीर उसमें जलाया और उसकी राख को चारों तरफ बिखेर दिया। मार्या कोशचेव की घोड़ी पर चढ़ी, इवान अपनी घोड़ी पर चढ़ा और दोनों वहाँ से चल पड़े।

पहले वे रैवन के घर गये, फिर गरुड़ के घर गये और फिर बाज़ के घर गये। तीनों महलों में उनका ज़ोर शोर से स्वागत हुआ।

उसकी बहिनों ने कहा — "इवान, हमको तो लगा था कि अब हम तुमको देख ही नहीं पायेंगे। पर अब हमको पता चल गया कि तुमने यह यात्रा क्यों की थी। सारी दुनियॉ में तुम्हारी पत्नी जैसी सुन्दर और कोई लड़की तो हो ही नहीं सकती।"

वह अपनी इन तीनों बहिनों के साथ कुछ कुछ दिन रहा। बहुत सारी दावतें खायीं और फिर अपने राज्य की तरफ चल दिया वहॉ उसने मार्या के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी राज किया।

9 पाताल की ज़ारेवनाज़[64]

एक बार की बात है कि रूस में एक जगह एक पति पत्नी रहते थे। उनके तीन बेटे थे। उनके तीनों बेटे बड़े हो रहे थे सो उन पति पत्नी ने सोचा कि अब घर में कुछ पोते पोतियॉ खेलने चाहिये।

सो उन्होंने अपने सबसे बडे बेटे ग्रिगोरी[65] को बुलाया और उससे कहा कि वह बाहर जाये और अपने लिये एक पत्नी ढूँढे। ग्रिगोरी घर पर ही बहुत खुश था वह शादी भी नहीं करना चाहता था पर उन दिनों बच्चे वही करते थे जो उनसे करने को कहा जाता था।

सो ग्रिगोरी बाहर अपनी पत्नी ढूँढने चल दिया पर उसने उसे ढूँढने में बहुत मेहनत नहीं की। वह एक बहुत ही शर्मीला लड़का था सो वह सारे शहर में एक तरफ से गया और यह सोचते हुए दूसरी तरफ से निकल आया कि उसको किसी ने देखा नहीं।

जब वह पुराने शहर के फाटक से निकल रहा था तो कुछ हॅसती हुई लड़कियॉ उसके पास से निकल गयीं। उसने उनको यह दिखाने की बहुत कोशिश की कि उसका उनसे कोई वास्ता नहीं था। जब वे वहॉ से चली गयीं वह वहॉ से भाग लिया।

---

[64] The Tzarevnas of the Underground Kingdom – a folktale from Russia, Asia.
Tzarevna means “Princess”

[65] Gregory – name of the eldest son of the old couple

शहर से बाहर निकल कर वह एक ऐसी सड़क पर आ गया जहॉ दूर दूर तक कोई दिखायी नहीं दे रहा था। वहॉ आ कर उसको एक बहुत ही डरावना ड्रैगन[66] मिल गया।

तो डर के मारे वह दूसरी तरफ भागने लगा पर ड्रैगन भी उसके सामने आ कर खड़ा हो गया और उससे बड़ी नम्र आवाज में बोला — "तुम मुझसे डरो नहीं मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुॅचाऊॅगा। क्या मैं जान सकता हूॅ कि तुम कहॉ जा रहे हो?"

कुछ पल तो ग्रिगोरी कुछ बोल नहीं सका पर कुछ देर बाद हकलाते हुए बोला — "ओह नहीं नहीं। मैं अपने घर वापस जा रहा हूॅ। मेरे माता पिता मेरी शादी करना चाहते हैं। पर मुझे कोई ठीक सी लड़की ही नहीं मिल रही है।"

ड्रैगन बोला — "तुम मेरे साथ आओ। मैं तुम्हारा इम्तिहान लेता हूॅ। अगर तुम उस इम्तिहान में पास हो गये तो तुमको पत्नी मिल जायेगी।"

क्योंकि वह ड्रैगन बहुत ही नम्रता से बोल रहा था इसलिये ग्रिगोरी को लगा कि विचार बुरा तो नहीं है सो वह इम्तिहान देने के लिये उसके साथ चल दिया।

चलते चलते वे दोनों एक काले संगमरमर की बड़ी सी चट्टान के पास आ पहुॅचे। ड्रैगन बोला — "अगर तुम इस चट्टान को हटा पाओगे तो तुमको वह मिल जायेगा जो तुम ढूॅढ रहे हो।"

---

[66] Dragon

ग्रिगोरी को वह पत्थर बिल्कुल भी भारी नहीं लग रहा था बल्कि उसको देख कर तो वह अपने आपको बहुत ही ताकतवर महसूस कर रहा था। सो उसने यह बोलते हुए पत्थर हटाना शुरू किया — "ओह इस पत्थर को तो मैं चुटकियों में हटा दूँगा।"

कह कर उसने पत्थर को पहले खींचा फिर उसको धक्का दिया पर वह पत्थर तो हिल कर ही न दे। यह देख कर वह ड्रैगन से बोला — "चिन्ता न करो। मुझे लग रहा है कि शायद मैं इसको गलत तरीके से हटाने की कोशिश कर रहा हूँ। शायद इसको एक तरफ को धक्का देना पड़ेगा।"

उसने फिर ऐसा ही किया। पत्थर को धक्का लगाते लगाते वह हॉफने लगा, उसकी सॉस तेज़ हो गयी, उसके सिर में हथौड़े बजने लगे, उसका पसीना छूट गया और वह तो बस बिल्कुल बेहोश होने वाला ही हो गया।

यह देख कर ड्रैगन बोला — "अफसोस तुम तो इस इम्तिहान में ही फेल हो गये। तुमको अब पत्नी नहीं मिलने वाली।"

ग्रिगोरी को यह देख कर थोड़ा बुरा लगा कि वह इम्तिहान में फेल हो गया पर दूसरी तरफ यह सोच कर वह खुश भी हुआ कि अब उसको शादी नहीं करने पड़ेगी। यही सब सोचता हुआ वह अपने घर वापस आ गया।

घर आ कर उसने अपने माता पिता को बताया कि उसके साथ उस दिन क्या हुआ था। उसके माता पिता बहुत ही दुखी हुए पर उन्होंने यह ग्रिगोरी से कहा नहीं।

कुछ दिन बाद उन्होंने अपने दूसरे बेटे मीशा[67] को बाहर भेजने का इरादा किया कि वह भी बाहर जाये और अपने लिये एक पत्नी ढूँढ कर लाये।

मीशा भी वैसा ही महसूस करता था जैसा ग्रिगोरी महसूस करता था। उसको भी घर में बैठे रहना बहुत अच्छा लगता था और ज़िन्दगी को आसान तरीके से जीना अच्छा लगता था। पर उसको भी मालूम था कि उसको भी जाना पड़ेगा।

उसके साथ भी वही हुआ जो ग्रिगोरी के साथ हुआ था। उसको भी सड़क पर वही ड्रैगन मिला जो ग्रिगोरी को मिला था, या फिर शायद दूसरा भी हो सकता था, पर कुछ भी हो उसने भी मीशा से यही कहा कि वह उसका एक इम्तिहान लेगा और अगर वह उसमें पास हो गया तो समझो कि उसको उसकी पत्नी मिल गयी।

पर वह भी रोता हुआ घर वापस आया और रोते हुए अपने माता पिता को बताया कि वह भी वह पत्थर नहीं हटा सका।

माता पिता के मुँह से निकला — "ओह बेचारा मीशा। हम जानते है कि तुमने उस पत्थर को हटाने में अपनी पूरी कोशिश लगा दी होगी। पर खैर अब क्या हो सकता है।"

[67] Misha – name of the second son of the couple.

हालॉकि वे इस बात से पहले की तरह फिर से बहुत ही दुखी हुए फिर भी उन्होंने अपने इस दुख को छिपा कर ही रखा। पर रात को जब उनके बच्चे सो गये तो दोनों इस बारे में बात करने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

पिता बोला — "यह सब देख कर अब हम इवान[68] को तो उसकी पत्नी ढूँढने के लिये बाहर नहीं भेज सकते क्योंकि वह तो कोई काम ठीक से करता ही नहीं है। वह तो सारा दिन बस अंगीठी के पास बैठा बैठा सूरजमुखी के फूल के बीज खाता रहता है।

इसके अलावा उसको बाहर भेजना खतरे वाला काम भी तो हो सकता है। क्या पता वह ड्रैगन उससे गुस्सा हो जाये और वह उसको मार दे।"

इसलिये इवान को बाहर नहीं भेजा गया जो इवान को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। उसने अपने माता पिता की बहुत मिन्नतें कीं और उनको बाहर जाने के लिये मना ही लिया सो उनको उसको भी अपनी पत्नी ढूँढने के लिये बाहर भेजना ही पड़ा।

पर अगली सुबह उन्होंने फिर अपना विचार बदल दिया। पर इस बात के लिये अब काफी देर हो चुकी थी। इवान तो सुबह ही घर छोड़ कर अपनी यात्रा पर निकल गया था।

उसको भी सड़क पर ड्रैगन मिला। उसने उससे भी पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

[68] Ivan – name of the third and the youngest son of the couple.

इवान बोला — "मेरे भाई शादी करना चाहते थे पर उनको तो पत्नी मिली नहीं अब मेरी बारी है।"

उस ड्रैगन ने अपनी भौंहें उठा कर उससे पूछा — "क्या तुम सचमुच में शादी करना चाहते हो?"

इवान बोला — "क्यों नहीं।"

"तो तुम्हें एक इम्तिहान पास करना पड़ेगा।"

"ठीक है।"

"पर क्या तुम सचमुच में इम्तिहान पास करना चाहते हो? तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे भाई तो उस इम्तिहान में फेल हो चुके हैं?"

"पर मैं उस इम्तिहान को पास करना चाहता हूँ।"

"तो फिर आओ मेरे साथ।"

दोनों उसी काले संगमरमर की चट्टान के पास आ पहुँचे जहाँ वह ड्रैगन पहले उसके दोनों भाइयों को ले कर आया था। ड्रैगन ने उससे भी उस चट्टान को वहाँ से हटाने के लिये कहा।

इवान ने उस चट्टान में एक ज़ोर की ठोकर मारते हुए कहा — "तुम्हारा मतलब इस चट्टान से है?"

"हाँ तुमने ठीक समझा मेरा मतलब इसी चट्टान से था।"

इवान चट्टान हटाते हुए बोला — "पर मेरे भाई लोग इसको क्यों नहीं हटा सके।" इवान ने देखा कि उस चट्टान के नीचे तो एक गहरी झिरी खुली हुई थी।

ड्रैगन बोला — "शायद वे इसको हटाने के लिये काफी ताकत का इस्तेमाल कर रहे थे।"

"देखता हूँ यह कितनी गहरी होगी।" कह कर इवान नीचे जमीन पर झुक कर उसके अन्दर झाँकने लगा। उसने देखा कि उसमें तो बहुत अँधेरा है और वह तो काफी गहरी चली गयी है। क्योंकि उसके अन्दर तो एक खोखली नली चली गयी थी और नीचे जा कर तो वह दिखायी भी नहीं दे रही थी।

यह देख कर इवान काँप गया और एकदम से पीछे हट गया।

उसने ड्रैगन से पूछा — "इसमें अन्दर क्या है?"

"क्या? इसके नीचे? इसके नीचे तो पाताल[69] है और क्या है?"

"मैंने तो इसके बारे में कभी नहीं सुना। क्या है यह?"

"अरे तुमको नहीं पता। दूसरे राज्यों की तरह से वहाँ भी राज्य हैं जैसे "ताँबे का राज्य", "चाँदी का राज्य" और "सोने का राज्य"[70] और हर राज्य में एक एक ज़ारेवना[71] है।"

इवान बोला — "अरे यह तो बहुत अच्छा है। सो जब मैं यह इम्तिहान पास कर लूँगा तो वह लड़की मुझे कहाँ मिलेगी जिससे मुझे शादी करनी है।"

"वह लड़की तुम्हें नीचे ही मिलेगी। तुम कम से कम एक ज़ारेवना से शादी कर सकते हो।"

---

[69] Translated for the word "Underworld".

[70] Copper Kingdom, Silver Kingdom, Golden Kingdom

[71] Tzarevna – Princess

"क्या उनमें से एक से शादी? नहीं नहीं कभी नहीं। बहुत बहुत धन्यवाद। मैं पाताल के राज्यों में नहीं जा रहा। वहॉ के लोग तो मुझे मार ही देंगे।"

अचानक ड्रैगन ज़ोर से चिल्लाया — "पर इवान तुम इसी लिये तो यहॉ हो कि तुमको उन्हें आजाद कराना है।"

ड्रैगन की भयानकता को देख कर तो इवान इतना घबरा गया कि वह तो बस यही सोचता रह गया कि किसी तरह से वह सुरक्षित घर पहुॅच जाये।

वह बुड़बुड़ाया — "पहले मैं इसके बारे में सोच लूॅ।"

यह सोचते हुए कि थोड़ी देर में ही ड्रैगन थक जायेगा और वहॉ से चला जायेगा वह वही खड़ा खड़ा उस झिरी में से उस खोखली नली को देखता रहा।

उसने देखा कि उस झिरी में उस खोखली नली में हो कर चमड़े की एक कुर्सी दो रस्सियों के सहारे नीचे की तरफ लटक रही थी। उसके मुॅह से निकला — "यह क्या है?"

ड्रैगन बोला — "तुम इस चमड़े की कुर्सी में बैठ जाओ और मैं तुमको नीचे उतार दूॅगा। अगर तुमको वहॉ देखने में अच्छा न लगे तो तुम अपनी रस्सी दो बार खींच देना मैं तुमको वापस ऊपर खींच लूॅगा।"

अब तक इस पाताल के बारे में इवान की उत्सुकता काफी जाग चुकी थी सो उसने सोचा कि क्यों न एक बार वहॉ जा कर देखा

जाये। सो वह ड्रैगन से बोला — "पर अगर में यह रस्सी दो बार खींचूँ तो तुम मुझको तुरन्त ही ऊपर खींच लेना। ठीक है?"

ड्रैगन ने इवान से वायदा किया कि जैसे ही वह वह रस्सी दो बार खींचेगा तो वह उसको ऊपर खींच लेगा। इवान उस चमड़े की कुर्सी में बैठ गया और ड्रैगन ने वह कुर्सी नीचे उतार दी।

इवान उस कुर्सी में बैठा झूलता हुआ उस खोखली नली के सहारे अँधेरे में नीचे चला जा रहा था। वह सोच रहा था कि वह अँधेरा कभी खत्म होने पर भी आयेगा या नहीं।

नीचे जाते जाते इवान ने आखिरी बार रोशनी के लिये ऊपर देखा यानी रूस का आसमान देखा और फिर सोचा कि पता नहीं अब वह आसमान फिर कभी देखेगा या नहीं।

उस खोखली नली में अब सब कुछ बिल्कुल शान्त हो गया था। उसकी दीवारों में लगे क्रिस्टल चमक रहे थे पर उनसे वहाँ कोई रोशनी नहीं हो रही थी।

उसने चिल्ला कर ड्रैगन से अपने आपको वापस खींच लेने के लिये आवाज लगायी पर वहाँ तो कुछ भी नहीं हुआ। वह तो यह बिल्कुल ही भूल गया था कि अपने आपको ऊपर खींचने के लिये उसको चिल्लाना नहीं था बल्कि रस्सी को दो बार खींचना था।

उसकी अपनी ही आवाज की गूँज उसको सुनायी दी तो वह और डर गया। उसकी कुर्सी भी बहुत ज़ोर ज़ोर से हिलने लगी।

वह अगर उस कुर्सी में ज़रा सा भी हिलता तो उस खोखली नली की दीवार से टकरा जाता।

मिट्टी के ढेले और पत्थर के टुकड़े नीचे गिरने लगते। उसने उनके नीचे गिरने की आवाज सुननी चाही भी पर उसे कुछ सुनायी ही नहीं दिया।

सो जब उसकी कुर्सी झूलती हुई उस खोखले डंडे से हो कर नीचे जा रही थी उसके मन में एक अजीब सा विचार आया। यह तो एक जाल भी हो सकता है और वह ड्रैगन तो मुझे कभी भी नीचे गिरा सकता है।

और यह विचार आते ही उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं अपना चेहरा अपनी बॉहों से ढक लिया और यह सोचना शुरू कर दिया जैसे कि वह अपने घर में अपने बिस्तर पर लेटा हुआ है।

हालॉकि इससे उसका कुछ खास काम नहीं बना पर फिर भी वह कुछ शान्ति महसूस करने लगा। वह सोच रहा था कि पता नहीं ड्रैगन अभी भी उसकी कुर्सी की रस्सी पकड़े वहॉ खड़ा होगा या नहीं। फिर उसने सोचा "जरूर खड़ा होगा क्योंकि नहीं तो वह तो इससे भी कहीं और ज़्यादा तेज़ी से नीचे जा रहा होता।"

जल्दी ही अब उसको सॉस लेने में भी परेशानी होने लगी। उसकी पलकें भारी होने लगी थीं। "मुझे जागते रहना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि इस गड्ढे का कहीं कोई अन्त ही न हो।"

धीरे धीरे वह बेहोश सा होने लगा।

जब उसे कुछ होश में आया तो उसने धुँधलके में देखा कि वह ठंडे पत्थरों के ऊपर लेटा हुआ है। उस खोखली नली से हरे रंग की रोशनी निकल रही है।

उसने देखा कि वह अभी भी उसी चमड़े की कुर्सी में बैठा हुआ है। उसने उस कुर्सी की चमड़े की पट्टियाँ खोल दीं। अब वह थोड़ा आराम से साँस ले पा रहा था या हो सकता है कि ऐसा उसको इसलिये महसूस हो रहा हो कि वह अब इस माहौल का आदी हो चुका था।

इवान ताँबे के राज्य में

इवान ने अपना चारों तरफ देखा कि वह वह रास्ता ढूँढ सके जहाँ से वह पाताल में पहुँच पायेगा। जब उसकी आँखें धुँधलके में देखने की आदी हो गयीं तो उसको उस खोखली नली से निकलते हुए कई रास्ते दिखायी दिये।

उनमें से एक रास्ते के आखीर पर उसको लाल से रंग की रोशनी चमकती दिखायी दी। वह उसी चमकती हुई रोशनी की तरफ चल दिया। जब वह उसके पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह रोशनी तो ताँबे के रंग की थी। कुछ ही देर में वह रास्ता बन्द हो गया और वह बाहर खड़ा नजर आया।

बाहर निकल कर उसने देखा कि वह तो समुद्र के किनारे एक ताँबे के जंगल में चल रहा था। उसने ऊपर आसमान की तरफ

देखा पर उसको सूरज कहीं दिखायी नहीं दिया। केवल भारी भारी बादल ही हल्की हवा में लटके हुए थे और पेड़ों के ऊपर कोहरा छाया हुआ था।

जब वह उस तॉबे के जंगल से बाहर निकला तो उसके सामने तॉबे का बना एक महल खड़ा था। महल का दरवाजा खुला और उसमें से एक बहुत ही सुन्दर ज़ारेवना सीढ़ियॉ उतर कर उसके सामने आयी।

ऐसा लगता था जैसे कि उस राज्य में हर चीज़ तॉबे की बनी हुई थी। यहॉ तक कि ज़ारेवना जो कपड़े पहने हुई थी वे कपड़े भी बहुत ही पतले तॉबे के बने हुए थे और जब वह उसके पास आ रही थी तो बड़ी अजीब सी आवाज कर रहे थे। उसके लम्बे लम्बे बाल भी तॉबे के रंग के थे। उसने इवान का बहुत प्यार से स्वागत किया।

"आओ। इस तॉबे के राज्य में तुम्हारा स्वागत है। आओ महल में आओ और मुझे बताओ कि तुम कहॉ से आये हो और कहॉ जा रहे हो।"

इवान के कपड़े और उसके शरीर की खाल भी उसके तॉबे की रोशनी से तॉबे के रंग की हुई जा रही थी। वह उसकी चकाचौंध से कुछ बेहोश सा होता हुआ उसके सामने काफी नीचे तक झुक कर बोला — "प्रिय राजकुमारी जी आप मुझसे कई सवाल पूछ रही हैं और आपने मुझे अभी तक कुछ खाने पीने के लिये दिया नहीं है।"

यह सुन कर वह तुरन्त ही अन्दर गयी और इवान के लिये कुछ खाने और कुछ पीने के लिये ले आयी। हालॉकि वहॉ का वह तॉबे के रंग का खाना देखने में बड़ा अजीब सा था पर उसने जितने खाने अब तक खाये थे उन सबमें वह सबसे ज़्यादा स्वादिष्ट था।

उसने सोचा शायद उसके ऊपर जो तॉबे के रंग की रोशनी पड़ रही थी इसी लिये वह उसको ऐसा लग रहा होगा।

लगता है जैसे कि उस ज़ारेवना ने इवान के मन की बात पढ़ ली हो सो वह मुस्कुरा कर बोली — "ऐसा मत सोचना कि यह सब तॉबे के रंग की रोशनी की करामात है। बहुत सारे लोगों ने यह गलती की है और हमारे पानी में तैरने की भी गलती की है।

यह विचार ठीक नहीं है। इस राज्य में हर चीज़ तॉबे की बनी हुई है। यहॉ तक कि अब तो तुम भी तॉबे के बने हुए हो गये हैं।"

यह सुन कर इवान ने अपना चेहरा छू कर देखा तो कॉप गया। वह ठीक कह रही थी। उसकी खाल सख्त और ठंडी हो गयी थी।

"पर मैं धातु का आदमी नहीं बनना चाहता।"

जैसे ही वह यह बोला उसको लगा कि उसकी आवाज भी धातु की आवाज जैसी हो गयी है।

वह हॅस कर बोली — "पर अब तो तुम वैसे बन ही गये हो।"

अचानक ज़ारेवना को लगा कि इवान को धातु का बनने में अच्छा नहीं लग रहा है सो वह फिर बोली — "तुम चिन्ता मत करो इवान। यह बदलाव तो केवल उसी समय के लिये है जब तक तुम

यहॉ हो बाद में यह सब खत्म हो जायेगा। यह सब तो जादू का कमाल है।

जब हम लोग ऊपर की दुनियॉ में चले जाते हैं तो हम लोग भी सामान्य लोगों की तरह ही हो जाते हैं। इसलिये अब तुम यहॉ आराम से बैठो और मुझे अपने बारे में कुछ बताओ। अगर तुम मुझे यहॉ से आजाद कराने आये हो तो मेरा यह जानना बहुत जरूरी है।"

इवान ने पूछा — "आप यहॉ कबसे रहती हैं।"

राजकुमारी ने कुछ दुखी होते हुए कहा — "मुझे किसी और जगह की याद ही नहीं है। मुझे केवल सूरज और चॉद नाम की चीज़ों की भी बहुत धुँधली सी याद है। पर यह भी अब बहुत पुरानी बात हो गयी।"

तब इवान ने ज़ारेवना को अपने बारे में और ड्रैगन के मिलने के बारे में सब कुछ बताया। उसने उसको यह भी बताया कि वह अपने लिये एक पत्नी ढूँढने निकला था। उसको बहुत खुशी होगी अगर वह उससे शादी कर लेगी।

राजकुमारी ने जवाब दिया — "नहीं। यह नहीं हो सकता इवान क्योंकि मैं यह जगह तभी छोड़ सकती हूँ जबकि पहले सुनहरी ज़ारेवना यहॉ से आजाद हो जाये।

उसके लिये तुम पहले समुद्र के किनारे वाले जंगल में से जाओ और फिर अँधेरी सुरंग में से हो कर जाओ तो तुम चॉदी के राज्य में

पहुँच जाओगे। वहाँ तुमको एक और ज़ारेवना मिलेगी जो मुझसे भी ज़्यादा सुन्दर होगी।"

सो इवान उसे वही छोड़ कर चाँदी के राज्य में जाने के लिये तैयार हुआ। उसके जाने से पहले इस ताँबे के राज्य वाली ज़ारेवना ने उसको उसकी रक्षा के लिये एक ताँबे की अंगूठी दी।

इवान ने उसको इसके लिये धन्यवाद दिया और वहाँ से चल दिया।

इवान चाँदी के राज्य में

इवान सुरंग में चलता रहा तो उसको उस सुरंग के आखीर में एक सफेद रोशनी चमकती दिखायी दी। जैसे जैसे वह उस रोशनी के पास आता गया तो उस रोशनी की चमक तेज़ और और तेज़ होती गयी। जल्दी ही वह एक बड़ी सी गुफा में खड़ा हुआ था।

उसकी तो छत ही बहुत ऊँची दिखायी देती थी जैसे वह मीलों ऊपर तक हो। उस गुफा की छत से चाँदनी की एक चमकीली किरन सफेद बिर्च के जंगल[72] के ऊपर पड़ रही थी। चाँदी जैसे सफेद समुद्र के किनारे पर एक महल खड़ा था।

गुफा के फर्श पर चाँदी का मुलायम रेत बिखरा पड़ा था। उसकी छत से चमकते हुए पत्थर लटके थे जिनसे रोशनी हो रही

[72] Translated for the words "Silver Birch" tree. See its picture above.

थी। आवाजों में वहॉ केवल हवा की और समुद्र के किनारे पर उसकी लहरों के टकराने की ही आवाज हो रही थी।

समुद्र के किनारे एक ज़ारेवना अपनी घोड़ी पर सवार हुई घूम रही थी। इवान को देख कर वह उसकी तरफ घूमी तो घोड़े की कुदान से समुद्र का ठंडा पानी जो इधर उधर बिखरा तो इवान कॉप गया।

वह अपने घोड़े की रास पकड़ कर घोड़े को सीधे उसके सामने ले आयी। अपने चेहरे से अपने चॉदी के बाल हटाते हुए वह बोली — "इस चॉदी के राज्य में तुम्हारा स्वागत है।"

इवान ने सोचा कि जैसे पहले वाली ज़ारेवना तॉबे की बनी थी शायद यह ज़ारेवना चॉदी की बनी हुई होगी। उसने उसको बहुत नीचे तक झुक कर नमस्ते की। उसने भी इवान से पूछा कि वह कहॉ से आया था और कहॉ जा रहा था।

थोड़ा रुक कर वह बोला — "प्रिय राजकुमारी, तुम्हारे सवालों के जवाब देने से पहले मुझे कुछ खाना और पीना चाहिये।"

वह उसको महल के अन्दर ले गयी और उसको कुछ खाने के लिये और शराब पीने के लिये दी। वहॉ खाना चॉदी की तरह सफेद था और शराब भी बिल्कुल चमकती हुई सफेद थी।

जब वह खा रहा था तो उसने अपने हाथों की तरफ देखा। उसने देखा कि उसका तॉबे जैसा रंग तो बिल्कुल ही चला गया था और अब उस रंग की जगह चॉदी का रंग लेने लगा था।

उसने अपने बालों में अपनी उँगलियाँ फिरायीं तो उनमें भी उसको कुछ अजीब सी आवाज सुनायी दी। उसने सोचा "उम्मीद है कि यह सब भी बहुत देर तक नहीं रहेगा।

जब वह खा चुका तो ज़ारेवना से बोला कि वह एक पत्नी की तलाश में था। क्या वह उससे शादी करना पसन्द करेगी।

वह बोली — "अफसोस ऐसा नहीं हो सकता। तुमको इस अँधेरी सुरंग से जाना पड़ेगा जब तक कि तुम सोने के राज्य में न पहुँच जाओ। वहाँ एक और ज़ारेवना तुम्हारा इन्तजार कर रही है। पहले तुम्हें उसे आजाद कराना पड़ेगा।"

उसने भी उसको एक चाँदी की अँगूठी दी और कहा — "लो यह चाँदी की अँगूठी लो और देखो इसे हमेशा पहने रहना। यह तुम्हारी यात्रा में तुम्हारी रक्षा करेगी।"

इवान ने उससे वह चाँदी की अँगूठी ली उसको धन्यवाद दिया और अपनी आगे की यात्रा पर आगे बढ़ गया।

इवान सोने के राज्य में

उस अँधेरी सुरंग में कुछ दूर चलने के बाद इवान को उसके आखिरी हिस्से पर एक सुनहरी रोशनी दिखायी दी। पहले की तरह से जब वह उस सुरंग के आखीर में पहुँचा तो यह गुफा तो पहली दो गुफाओं से भी बहुत बड़ी थी।

ज़ार के इस राज्य में तो हर चीज़ सोने में नहायी जैसी लग रही थी। एक पल को तो उसको लगा कि वह सूरज देख रहा है पर जब उसने ऊपर देखा तो उसको इस रोशनी में थोड़ी गर्मी तो लगी पर बाहर की दुनियॉ में उसे सूरज कहीं दिखायी नहीं दिया।

पर जब उसने बाद में उसके बारे में सोचा तो उसने देखा कि वह तो पानी के ऊपर धूप की चमक पड़ रही थी। उस रोशनी में तो उसकी अपनी खाल और कपड़े भी सुनहरे लग रहे थे। उस सोने के राज्य में सारी चीज़ें असली सोने की थीं।

ज़ारेवना भी अपने महल के सामने सुनहरी रेत पर खड़ी हुई थी। वह इवान को देख कर बहुत खुश हुई और उसने इवान के सामने सुनहरी खाना और सुनहरे रंग की चमकती शराब रखी।

इवान ने उसको बताया कि वह अपने घर से अपनी पत्नी ढूँढने निकला था। फिर उसने उससे कहा — "अगर तुम मेरी पत्नी बनना चाहती हो तो अभी मेरे साथ चलो।"

यह सुन कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब राजकुमारी ने उसे मुस्कुरा कर जवाब दिया — "हॉ मैं तुमसे शादी करूँगी। पर पहले तुम यह सोने की अँगूठी लो और देखो तुम इसको तॉबे की और चॉदी की अँगूठियों के साथ साथ हमेशा पहने रहना। यह तुम्हारी हमेशा रक्षा करेगी। अब हम चलते हैं और अपनी बहिनों को आजाद कराते हैं।"

कह कर वे उसी अँधेरी सुरंग से वापस चल दिये। वे चाँदी के राज्य से गुजरे। वहाँ चाँदी के राज्य वाली ज़ारेवना ने उनका बड़े ज़ोर शोर से स्वागत किया और वह भी उनके साथ चल दी। फिर वे ताँबे के राज्य में आये जहाँ से पहली ज़ारेवना भी उनके साथ हो ली।

उसके बाद वे उस जगह आये जहाँ इवान ऊपर से उस खोखली नली से नीचे उतरा था। उसमें चमड़े की कुर्सी अभी भी लटकी हुई थी पर उस खोखली नली का अन्त उसे कहीं दिखायी नहीं दे रहा था। उसको पता ही नहीं था कि उसके दोनों भाई वहाँ खड़े हुए थे।

असल में जब इवान कई दिनों तक नहीं लौटा तो उसके माता पिता ने उनको इवान को ढूँढ लाने के लिये भेजा था।

उन्होंने अन्दाज लगाया कि वह शायद यहीं नीचे होगा सो वे वहाँ घंटों खड़े खड़े इस बात की हिम्मत बटोर रहे थे कि वे वहाँ नीचे कैसे उतरें।

बाद में जब उनकी हिम्मत नहीं पड़ी तो उन्होंने एक दूसरे को यह कह कर बहला लिया कि शायद इवान मर गया।

वे लोग वहाँ से जाने ही वाले थे कि ताँबे के राज्य वाली ज़ारेवना उस चमड़े की कुर्सी में चढ़ गयी और उसकी रस्सी को एक हल्का सा झटका दिया।

इवान के भाइयों ने रस्सी हिलती देखी तो उनको लगा कि कोई उनसे नीचे से कुछ कहना चाहता है सो उन्होंने वह रस्सी खींचनी शुरू कर दी।

जब वह चमड़े की कुर्सी ऊपर आयी तो उसमें तो ताँबे के राज्य की ज़ारेवना बैठी हुई थी। ऊपर आ कर उसने वह कुर्सी फिर से नीचे भेज दी। इस बार चाँदी के राज्य की ज़ारेवना ऊपर आयी और फिर सोने के राज्य की ज़ारेवना ऊपर आयी।

आखीर में इवान उस चमड़े की कुर्सी में बैठा। उसके भाइयों ने उसे खींचा पर अब तक वे उस रस्सी को खींचते खींचते थक चुके थे सो वे बहुत धीरे धीरे रस्सी खींच रहे थे।

पर जब उनको यह पता चला कि उस कुर्सी में इवान था तो उनको उससे जलन होने लगी कि इवान वहाँ सफल हो गया था जहाँ वे बुरी तरह फेल हो गये थे।

ग्रेगरी बोला कि "हम उसकी सहायता क्यों करें।"

मीशा भी बोला "इस तरह से तो सारे गाँव में लोग हमारी हँसी उड़ायेंगे और हम बदनाम हो जायेंगे।"

सो जब तक इवान आधे रास्ते तक भी नहीं आया था कि उसके आने से पहले ही ग्रिगोरी नीचे झुका और इससे पहले कि ज़ारेवनाऐं उसे रोक सकतीं उसने उस चमड़े की कुर्सी की रस्सी काट दी।

तीनों ज़ारेवनाऐं इवान के लिये बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ीं। उन्होंने इवान के भाइयों से बहुत प्रार्थना की कि वे उसको बचा लें पर वे तो उसकी सुनने वाले थे नहीं।

ज़ारेवनाऐं तो बस अब इसी से सन्तुष्ट थीं कि इवान उनकी दी हुई अँगूठियाँ अभी तक पहने था।

इवान का पाताल से बाहर निकलना

उधर रस्सी के कटते ही इवान उस अँधेरे खोखली नली में नीचे गिर पड़ा। वह दो दिन तक तो वहाँ से हिल भी नहीं सका। जब वह हिलने डुलने लायक हो गया तो वह बहुत ही नाउम्मीद सा बैठ गया कि अब वह बाहर जाने का रास्ता कैसे पायेगा।

उसकी आँखों में आँसू आ गये। वह यही समझ नहीं पा रहा था कि वह वहाँ से बाहर जाने के लिये किससे पूछे और अब कौन सी सुरंग ले। फिर यह सोच कर उसने एक दूसरी ही सुरंग ली कि शायद यही सुरंग उसको वहाँ से बाहर ले जायेगी।

वह सुरंग धीरे धीरे नीची होती जा रही थी। कहीं कहीं तो उस सुरंग की छत इतनी नीची थी कि उसको बहुत झुक कर चलना पड़ रहा था और कभी कभी तो उसको पत्थरों पर घुटनों के बल भी चलना पड़ रहा था।

कुछ देर इस तरह चलने के बाद इवान को लगा कि वह सुरंग कुछ चौड़ी और ऊँची हो गयी है। जल्दी ही वह एक बहुत ही बड़ी

गुफा में खड़ा था। यह गुफा तो उसको किसी दूसरी दुनियॉ का ही हिस्सा लग रही थी।

हालॉकि वहा काफी अँधेरा था पर फिर भी वह वहॉ ठीक से देख पा रहा था। वहॉ आसमान में बादल बहुत नीचे थे सो वह यह नहीं जान सका कि उस राज्य के आसमान में चॉद या तारे थे या नहीं।

वह वहॉ एक जंगल में दलदल के किनारे खड़ा था। सीलन की गन्ध चारों तरफ उड़ रही थी, हवा ठंडी थी सो वह इधर उधर किसी ऐसी गरम जगह की तलाश में था जहॉ वह उस ठंड से बच सके। सारे में वहॉ कई रंगों के और कई शक्लों के मुशरूम उगे हुए थे।

सुबह होने के कुछ देर बाद ही इवान को एक बहुत ही छोटा सा बूढ़ा मिला। उसकी बहुत लम्बी सफेद दाढ़ी थी और वह एक पेड़ की अजीब सी शक्ल की जड़ पर बैठा हुआ था।

उसने उस बूढ़े को अपनी सारी कहानी बतायी और पूछा कि वह कैसे मॉ रूस की नम जमीन पर वापस जा सकता है। उस बूढ़े ने अपनी एक उँगली से पास में लगे ओक के पेड़ों के एक झुंड की तरफ इशारा किया और बोला — "क्या तुम उन ओक के पेड़ों के पीछे खड़ी गोल मीनार देख रहे हो?"

इवान ने उधर देखा जिधर वह बूढ़ा इशारा कर रहा था तो पेड़ों के पीछे उसको एक पतली सी मीनार का ऊपर का हिस्सा वहॉ से

झॉकता हुआ दिखायी दे गया। वह बोला "हॉ। मुझे वह मीनार दिखायी दे रही है।"

बूढ़ा आगे बोला — "उस मीनार में एक बहुत ही लम्बा जादूगर[73] रहता है। वह इतना लम्बा है कि उसका सिर तो छत को छूता है। तुम वहॉ चले जाओ वह तुमको बतायेगा कि तुम वापस रूस कैसे पहुँच सकते हो।"

इवान ने उस बूढ़े को धन्यवाद दिया और उस लम्बी मीनार की तरफ चल दिया जिसमें वह लम्बा जादूगर रहता था। जब वह उस मीनार के पास पहुँचा तो उसको लगा कि जो कुछ वह सोच रहा था वह वह नहीं था बल्कि वहॉ तो एक मुलायम सा धुऑ था जो उस मीनार की एक बहुत ही छोटी सी खिड़की से बाहर निकल रहा था।

वह मीनार के और पास गया और वहॉ जा कर उसका दरवाजा खोला तो चॉदी के जाले के कुछ टुकड़े उसके चेहरे पर आ कर पड़े। इससे उसको लगा कि जैसे वह मकड़ियों के हजारों जालों के बीच चल कर आ रहा हो।

उसने अपने चेहरे से जितने अच्छी तरह से वह साफ कर सकता था वे छोटे छोटे रेशमी जाले के टुकड़े साफ किये और अन्दर जाने से पहले उसने अपनी बहुत ज़ोर से आती हुई छींक को भी रोका जो उन जालों की वजह से उसको आने वाली थी।

[73] Translated for the word "Sorcerer".

खुशकिस्मती से दरवाजा बाहर की तरफ खुला वरना उसको उस मीनार में घुसने में भी बहुत मुश्किल होती। क्योंकि हालॉकि वह मीनार बहुत ऊँची थी पर साथ में वह तंग भी बहुत थी। उसमें घुसने के लिये भी इवान को अपने आपको उसकी दीवार से सट कर ही उसके अन्दर घुसना पड़ा।

जैसे ही वह उस मीनार के अन्दर घुसा तो उसको वहॉ वह जादूगर खड़ा दिखायी दे गया।

उसके अन्दर वह लम्बा जादूगर खड़ा खड़ा अपनी चॉदी जैसी दाढ़ी के बालों को हाथीदॉत की कंघी से कंघी कर रहा था। उसके सिर के बाल उसकी दाढ़ी जितने ही लम्बे थे पर उसकी खोपड़ी पर गंजेपन का एक चमकदार चकत्ता था। शायद यह चकत्ता वहॉ इसलिये था कि उस जगह वह उस मीनार की छत से छूता था।

उसने कत्थई रंग की एक थैले जैसी पोशाक पहन रखी थी जिस पर सारे में चॉदी के बाल लगे हुए थे।

जब उसने इवान को देखा तो उसने अपनी दाढ़ी के बालों में कंघी करना रोक दिया और कंघी को साफ करना शुरू कर दिया। इससे उसके बालों के कई सारे छोटे छोटे बादल खिड़की के बाहर उड़ गये। और बहुत सारे बाल उसके कमरे में भी इधर उधर उड़ने लगे।

कुछ बाल उसके चेहरे के चारों तरफ भी उड़ने लगे जिससे उसके चेहरे का काफी हिस्सा ढक गया। इससे इवान उसका पूरा चेहरा भी एक बार में नहीं देख सका।

इवान से बात करने से पहले जादूगर को अपना गला साफ करने में कई मिनट लग गये। तब कहीं जा कर वह इवान से बड़ी ऊँची आवाज में बोला — "किसी ने रूसी हड्डियों को यहाँ आने के लिये नहीं कहा। वे तो यहाँ अपने आप ही आयी हैं।"

यह सुन कर इवान ने थोड़ा इन्तजार किया कि शायद वह जादूगर कुछ और बोले पर वह और कुछ भी नहीं बोला क्योंकि बदकिस्मती से उसके सिर के सामने जादूगर के बालों का एक बहुत बड़ा बादल आ गया था सो न तो वह कुछ देख ही सका और न ही कुछ बता सका कि वह जादूगर क्या सोच रहा था।

इवान ने उस जादूगर को हँसाने की बहुत कोशिश की जैसे अपनी गर्दन टेढ़ी कर के और उसके चेहरे की तरफ देख कर वह बोला — "हाँ वे अपने आप ही आयी हैं।"

उस लम्बे जादूगर ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और फिर से अपनी दाढ़ी में कंघी करने लग गया।

इवान आगे बोला — "ओ ताकतवर जादूगर। क्या तुम मुझे बता सकते हो कि मैं वापस अपनी माँ रूस की नम जमीन पर कैसे पहुँच सकता हूँ?"

पर वह जादूगर फिर से अपनी कंघी साफ करने लग गया। उसकी कंघी से निकले बालों का बादल काफी तो खिड़की से बाहर उड़ गया पर काफी फिर भी कमरे में भी उड़ता रहा।

कई मिनटों बाद उसने फिर अपना गला साफ किया और अपनी उसी ऊँची आवाज में बोला — "मॉ रूस की नम जमीन पर पहुँचने के लिये तुमको यहॉ से दॉयी तरफ करीब करीब तीस गहरी झीलें जाना चाहिये।

वहॉ दूर जा कर तुमको एक झोंपड़ी मिलेगी जो मुर्गे की टॉगों पर खड़ी होगी। उस झोंपड़ी में एक बूढ़ी जादूगरनी बाबा यागा रहती है।

उस झोंपड़ी में घुसने से पहले तुमको जादू के कुछ शब्द बोलने होंगे। इस बुढ़िया के पास एक गरुड़[74] चिड़ा है जो तुमको मॉ रूस की नम जमीन तक ले जा सकता है।"

इवान ने पूछा — "और वे जादू के शब्द क्या हैं?"

ऊपर से आवाज आयी — "वे तुम्हें वहीं पता चल जायेंगे।"

और उस जादूगर ने फिर से अपना गला साफ करना शुरू कर दिया। उसको अपना गला साफ करते करते फिर मिनटों लग गये और इवान बड़ी उत्सुकता से उन जादू के शब्दों को सुनने का इन्तजार करता रहा।

[74] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

उसको जादूगर के ये शब्द सुन कर बड़ी नाउम्मीदी हुई — "यहॉ बहुत ही खुश्की है।"

यह सुन कर तो इवान का अपना गला भी खुश्क होने लगा था। वह बोला "हॉ यह तो है।" और कुछ ताजा हवा लेने के लिये वह उस मीनार के बाहर निकल आया।

उसकी समझ में यही नहीं आया कि जादूगर के उन "जादू के शब्दों" से उसका क्या मतलब था। शायद उसको कुछ गलती लग गयी होगी क्योंकि वह यह सब कैसे जान सकता था।

फिर उसने सामने की तरफ देखा तो उसको सामने कुछ झीलें दिखायी दीं सो वह वहीं उनके आस पास चक्कर काटता रहा। उसको वहॉ उनके आस पास चक्कर काटते हुए और यह गिनते हुए कि वे वाकई में तीस झीलें थीं कई दिन बीत गये क्योंकि दूर उसको कई और भी झीलें दिखायी दे रही थीं।

उसको यह पता ही नहीं चल पा रहा था कि उसने उन झीलों को ठीक से गिन लिया था या नहीं।

पर हॉ उसको तीस झीलें गिनने के बाद जब तीसवीं झील के किनारे एक झोंपड़ी दिखायी दे गयी जो मुर्गे की टॉगों पर खड़ी थी तो उसको लगा कि उसने उन झीलों को ठीक ही गिना था।

जब वह उस झोंपड़ी के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह झोंपड़ी तो घूमे जा रही है घूमे जा रही है। और वह तो बहुत तेज़ी से घूम रही है।

और वह केवल तेज़ी से घूम ही नहीं रही है बल्कि बहुत ज़ोर की चीं चीं की आवाज भी कर रही है। उस चीं चीं की आवाज से तो उसके कान ही फटे जा रहे थे।

उसके घूमने की आवाज और इस चीं की आवाज दोनों ने मिल कर तो उसका सिर बहुत भारी सा कर दिया।

फिर पता नहीं कहाँ से उसके दिमाग में वे जादू के शब्द आ गये जिनको उसे उस झोंपड़ी में घुसने से पहले बोलना था और उसने उनको गाना शुरू कर दिया —

ओ छोटी झोंपड़ी ओ छोटी झोंपड़ी तुम अपना दरवाजा मेरी तरफ करो
और मुझे अन्दर आने दो

अचानक घूमती हुई झोंपड़ी रुक गयी। उसकी आवाज भी धीरे धीरे कम होती गयी और वह एक लम्बी सी चीं की आवाज कर के रुक गयी। उसकी टाँगें इतनी नीचे को झुक गयीं कि वह झोंपड़ी जमीन से आ कर लग गयी।

अब उसका दरवाजा इवान के सामने था। अचानक एक लम्बी सी उसाँस के साथ उस झोंपड़ी का दरवाजा खुला। इवान सोचने लगा "यह मैंने कैसे किया?" पर फिर उस झोंपड़ी में घुस गया।

अन्दर पहुँच कर उसने देखा कि बाबा यागा अपनी पुराने ढंग की ईंटों की अँगीठी पर लेटी हुई है। वह खर्राटे मार रही थी।

उसकी लम्बी नाक छत को छू रही है। पर फिर एक पल में ही उसने अपनी लम्बी नाक इवान की तरफ की और बोली — "मुझे यहाँ किसी रूसी हड्डी की खुशबू आ रही है। तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

इवान ने डर से काँपते हुए इधर उधर देखा कि वह यह किससे पूछ रही थी। फिर यह समझते हुए कि वह यह उसी से कह रही थी वह हकलाते हुए बोला — "लम्बे जादूगर ने मुझे आपके पास इसलिये भेजा है ताकि मैं आपके गरुड़ पर सवार हो कर अपनी माँ रूस की नम जमीन पर जा सकूँ।"

बाबा यागा वहीं से चिल्लायी — "ओ रूसी हड्डी। बाहर बागीचे में जाओ और वहाँ जा कर उस स्त्री को ढूँढो जो सात दरवाजों की चौकीदार है।

उससे चाभी लो और उन सातों दरवाजों को खोलो। जब तुम आखिरी दरवाजा खोलोगे तो वह गरुड़ अपने पंख फड़फड़ायेगा। अगर तुम उससे डर नहीं गये तो तुम उसकी पीठ पर बैठ कर उड़ कर वहाँ जा सकते हो। और हाँ मेरे उस पालतू चिड़े के लिये काफी सारा माँस ले जाना मत भूलना।"

इवान सोच रहा था "कौन सा बागीचा? यह किस बागीचे की बात कर रही है?" क्योंकि वह जानता था कि उसके घर के बाहर तो कोई बागीचा था ही नहीं वहॉ तो केवल जंगल था।

पर यही सोचते सोचते जब वह बाहर निकला तो यह देख कर उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि वहॉ से सारी झीलें गायब हो चुकी थीं और वहॉ अब एक बहुत सुन्दर बागीचा था और वह उसमें खड़ा था।

उस बागीचे के चारों तरफ एक बहुत पुरानी दीवार थी जिसमें सात ठोस ओक की लकड़ी के दरवाजे लगे थे। एक बहुत ही भयानक शक्ल वाली स्त्री उन सातों दरवाजों की चौकीदाारी कर रही थी।

हालॉकि उसका तो यह सब देख कर ही दिल डूबने लगा पर फिर उसने सोचा कि अगर मेंने बाबा यागा से बात कर ली और मुझे कुछ नहीं हुआ तो यह स्त्री उससे ज़्यादा बुरी तो नहीं हो सकती।

पर जब वह उसके कुछ फीट पास तक आ गया तो अचानक ही उसने एक बड़ी सी तलवार निकाल ली। उसकी ऑखों में वहशीपना छा गया। यह देख कर इवान का तो जैसे खून ही जम गया।

वह वहीं से चिल्लाया — "बाबा यागा ने मुझसे तुमसे चाभी लेने के लिये कहा है।"

यह सुन कर उस स्त्री ने अपने हाथ से तलवार छोड़ दी और उसका स्वागत किया। वह उसके यात्रा के लिये कुछ खाना पीना और कुछ और सामान ले कर आयी।

इवान ने बाबा यागा का कहा माना सो वह निडर हो कर गरुड़ की पीठ पर बैठ गया और उससे जितना भी मॉस लिया जा सका उतना मॉस उसके लिये उसने ले लिया।

कुछ समय बाद इवान को भूख लगने लगी तो उसने सोचा कि "मैं उस मॉस में से थोड़ा सा मॉस खा लेता हूँ। हमारे पास तो हम दोनों के लिये जितना मॉस चाहिये उससे कहीं ज़्यादा मॉस है।"

सो उसने उसमें से थोड़ा सा मॉस खा लिया।

जब वे लोग कुछ देर तक उड़ चुके तो गरुड़ ने अपनी बटन जैसी पीली पीली ऑखें इवान की तरफ घुमायीं तो इवान ने उसको कॉपते हाथों से मॉस का एक टुकड़ा खिला दिया। गरुड़ ने भी उसे इवान के हाथों से छीन कर एक ही बार में खा लिया।

उस उड़ान के दौरान ऐसा कई बार हुआ कि जब भी गरुड़ ने उसकी तरफ देखा तभी उसने उसको मॉस खिलाया पर हर बार उसे लगा कि वह गरुड़ तो अपनी तेज़ चोंच से उसका हाथ ही काट लेगा परन्तु ऐसा हुआ नहीं।

जल्दी ही सारा मॉस खत्म हो गया पर रास्ता तो अभी बाकी था। गरुड़ ने फिर इवान की तरफ देखना शुरू किया।

अब इवान को तो मालूम था कि उसके पास जितना मॉस था वह सब खत्म हो गया था सो वह उस पर चिल्लाया — "घूम कर देखो अब सारा मॉस खत्म हो गया। तुम्हारे लिये अब मेरे पास कुछ भी नहीं बचा।"

इस पर गरुड़ ने उसको अपनी तेज़ निगाहों से घूरा। इवान ने भी उसको घूरा पर उसका तो एक एक जोड़ कॉप रहा था।

इवान को लगा कि यह गरुड़ तो पता नहीं कब तक उसको इस तरह से घूरता रहेगा पर उसने देखा कि जल्दी ही उसने अपना मुँह फिरा लिया और इवान ने शान्ति की सॉस ली।

अचानक एक चीं की आवाज के साथ जिससे इवान का खून तो बस जम सा ही गया गरुड़ ने एक बार फिर अपना सिर घुमा कर इवान की तरफ देखा और उसकी गर्दन से मॉस का एक टुकड़ा काट लिया।

इवान ने देखा कि वे उस समय एक खोखली नली में से ऊपर की तरफ उड़ रहे थे। इवान तो इस सबसे इतना डर गया और उसे इतना धक्का लगा कि उसे अपनी गर्दन में से मॉस निकाले जाने का ज़रा भी दर्द महसूस नहीं हुआ।

अब उसको यह लगने लगा कि यह गरुड़ तो उसको ही टुकड़े टुकड़े कर के खा जायेगा। सो उसने तय किया कि अबकी बार अगर उसने उसकी तरफ देखा तो वह उसके ऊपर से कूद नीचे पड़ेगा।

उसको सपने में लगा कि वे उस खोखली नली में से दूर बहुत दूर किसी रोशनी की तरफ उड़े जा रहे हैं।

उसने देखा कि जब वे उस नली के आखिरी सिरे पर पहुँचे तो वह गरुड़ काले संगमरमर की चट्टान के पास उतर रहा था।

इवान तुरन्त ही उसकी पीठ से नीचे लुढ़क गया। वह नम घास पर लेट गया और सोचने लगा कि अब तो यह गरुड़ बस उसको खा ही जायेगा।

पर यह देख कर उसे बड़ा आश्चय हुआ जब उसको खाने की बजाय वह उसके गले के मॉस का टुकड़ा जो उसने खा लिया था वापस लाया और इवान से कहा कि वह उसको अपने घाव के ऊपर रख ले। इससे उसका घाव भर जायेगा। इसके बाद वह उस खोखली नली से हो कर वहॉ से चला गया।

इवान ने ऐसा ही किया। उसका घाव कुछ पलों में ही भर गया।

सूरज की किरनों की गर्मी से इवान के शरीर में कुछ जान सी आयी और उसने अपने अन्दर ताकत महसूस की। जब वह वहॉ लेटा हुआ था तो सूरज की एक किरन उसकी एक अँगूठी पर पड़ी तब उसे याद आया कि वह कहॉ था और अब कहॉ है।

उसने झुक कर मॉ रूस की नम जमीन को चूमा और देखा कि उसकी खाल और उसके कपड़े सब कुछ सामान्य रंग के हो गये हैं। भगवान की प्रार्थना कह कर वह अपने घर को वापस चल दिया।

घर आ कर उसने देखा कि तीनों ज़ारेवना उसके माता पिता के घर में उसका इन्तजार कर रही थीं। क्योंकि वह ऊपर की दुनियॉ में आ गयी थीं इसलिये उनके ऊपर पड़ा जादू भी टूट गया था।

इवान के माता पिता को बता दिया गया था कि उसके बड़े भाइयों ने उसके साथ क्या किया था। उन्होंने उनको घर से बाहर निकाल दिया।

इवान ने उनसे प्रार्थना की कि वे उसके भाइयों को माफ कर दें और उनको फिर से घर में बुला लें। उसके माता पिता ने उसकी प्रार्थना पर उनको घर वापस बुला लिया।

इवान ने सोने के राज्य वाली ज़ारेवना से शादी कर ली और फिर उनके कई बच्चे हुए। दूसरी ज़ारेवनाओं ने भी शादियॉ कर लीं पर इवान के भाइयों के साथ नहीं।

इवान के भाई भी अपने माता पिता के साथ खुशी खुशी रहे।

10 बाबा यागा और ज़मोरीशेक[75]

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा अपनी बुढ़िया के साथ रहता था। उनके कोई बच्चा नहीं था। और उन्होंने उसको पाने के लिये क्या क्या नहीं किया। कैसे कैसे तो उन्होंने भगवान की प्रार्थना नहीं की पर उसकी पत्नी को बच्चा नहीं हुआ।

एक दिन यह बूढ़ा मशरूम लाने के लिये जंगल में गया तो वहाँ उसको एक और बूढ़ा मिल गया। उसने पहले बूढ़े से कहा — "मैं जानता हूँ कि तुम क्या सोच रहे हो। तुम बच्चों के बारे में सोच रहे हो।

जाओ तुम अपने गाँव वापस चले जाओ और एक एक छोटा अंडा सब घरों से इकट्ठा कर लो। उन सबके ऊपर एक मुर्गी[76] बिठा दो और फिर देखना कि उसमें से क्या निकलता है।"

उसने घर आ कर ऐसा ही किया। दो हफ्ते बाद वे दोनों उसे देखने गये तो उन्होंने देखा कि उन अंडों में से तो बच्चे निकल आये हैं। उन्होंने उनको फिर देखा फिर देखा तो देखा कि उनमें से

---

[75] Baba Yaga and Zamoryshek (Tale No 14) – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916. This book is available at : https://books.google.ca/books?id=QssdAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false
This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales

[76] Here it is written "a broody hen". Broody hen is that hen which wishes to sit on eggs whether they are there or not there.

चालीस बच्चे तो ठीक और तन्दुरुस्त हैं पर एक कुछ कमजोर है। बूढ़े ने उन सबको तो नाम दे दिये पर आखिरी वाले बच्चे के लिये उसके पास कोई नाम नहीं बचा तो उसको उसने नाम दे दिया ज़मोरीशैक[77]।

उनके ये बच्चे दिनों से नहीं बल्कि घंटों से बढ़ने लगे। वे सब बहुत जल्दी बड़े हो गये और उन्होंने काम करना और अपने माता पिता की सहायता करना भी शुरू कर दिया।

उनके चालीस बच्चे तो खेत पर काम करने जाते थे जबकि ज़मोरीशैक घर पर ही रहता था। जब फसल काटने का मौसम आया तो उन चालीसों बच्चों ने भूसे के ढेर बनाने शुरू कर दिये और एक हफ्ते में ही सारा अनाज कट गया। अनाज काट कर वे वापस घर आ गये लेट गये और जो कुछ उनके हिस्से का भगवान ने उनको दिया था वह खा कर सो गये।

बूढ़े ने उनकी तरफ देखा और बोला — "छोटा और हरा दूर जाता है गहरी नींद सोता है और काम अधूरा छोड़ता है।"

यह सुन कर ज़मोरीशैक बोला — "आप जाइये और देखिये तो ओ पिता जी[78]।"

[77] Zamoryshek means "Benjamin"

[78] Here the Batyushka word is used which means "father"

सो बूढ़ा खेतों पर गया। वहाँ उसने चालीस ढेर लगे देखे तो उसके मुँह से निकला — "अरे वाह यह तो मेरे चालीस बच्चों ने किया है। देखो तो यह सब उन्होंने एक हफ्ते में ही कर दिया है।"

अगले दिन वह उसी जगह फिर गया ताकि वह अपनी चीज़ की प्रशंसा कर सके तो उसने देखा कि वहाँ से तो एक ढेर गायब है। वह फिर से घर आया और बोला — "एक ढेर तो वहाँ से गायब ही हो गया।"

ज़मोरीशैक बोला — "आप चिन्ता न करें पिता जी। हम चोर को ढूँढ देंगे। मुझे सौ रूबल दीजिये और मैं आपका यह काम कर दूँगा।"

ज़मोरीशैक अपने पिता से पैसे ले कर तब एक लोहार के पास गया और उससे एक जंजीर बनाने के लिये कहा। जब जंजीर बन गयी तो वह उसने अपने चारों तरफ लपेट ली।

पर जैसे ही उसने उसको खींचा तो वह टूट गयी। सो लोहार ने उसके लिये फिर एक और जंजीर बनायी। वह दूसरी जंजीर भी उसने अपने शरीर के चारों तरफ लपेटी तो वह भी टूट गयी।

तब लोहार ने एक तीसरी जंजीर बनायी। यह पहली वाली जंजीरों से तीन गुना मजबूत थी। यह नहीं टूटी। यह जंजीर लपेट कर वह अपने खेत में जा पहुँचा और एक भूसे के ढेर में जा कर बैठ गया।

आधी रात को अचानक एक तूफान आया। समुद्र उफनने लगा। एक अजीब सी बूढ़ी घोड़ी समुद्र में से बाहर निकली और भूसे के एक ढेर के पास पहुँची और उसे खाना शुरू कर दिया।

ज़मोरीशैक अपने ढेर से बाहर निकला जंजीर उसके गले में डाल कर उस पर बैठ गया। घोड़ी तुरन्त ही वहाँ से घाटियों से हो कर पहाड़ियों के ऊपर भाग निकली। वह बहुत हिली डुली पर वह अपने सवार को अपने ऊपर से गिरा नहीं सकी।

आखिर वह रुक गयी और आदमी की आवाज में बोली — "ओ भले नौजवान अब तुम मुझ पर सवारी कर सकते हो। तुम मेरे बच्चों के भी मालिक बन सकते हो।"

उसके बाद वह समुद्र में हो कर हिनहिनाती हुई वहाँ से भाग चली। समुद्र खुल गया और उसमें से इकतालीस घोड़े के बच्चे निकल आये। वे सब बहुत ही बढ़िया घोड़े थे – एक से बढ़ कर दूसरा, दूसरे से बढ़ कर तीसरा। तुम सारी दुनियाँ में घूम आओ पर वैसे घोड़े तुम्हें कहीं नहीं मिलेंगे।

अगली सुबह बूढ़े ने अपने घर के दरवाजे पर हिनहिनाने की आवाज सुनी तो वह यह सोचने लगा कि यह आवाज कैसी है। उसने दरवाजा खोला तो देखा कि दरवाजे पर तो उसका बेटा ज़मोरीशैक बहुत सारे घोड़ों के साथ खड़ा था।

वह चिल्लाया — "बहुत अच्छे बेटा।"

फिर वह अपने दूसरे बेटों से बोला — "जाओ अब तुम्हारी शादी का समय हो गया।"

यह सुन कर वे सब वहॉ से चले गये। माता पिता ने उनको आशीर्वाद दिया और वे दूर के रास्ते पर चल दिये। वे लोग अपनी दुलहिनें देखने के लिये दूर देशों में निकल गये।

वे सब अलग अलग तो शादी करते नहीं और उन्हें ऐसी कौन सी ऐसी मॉ मिलती जिसके इकतालीस बेटियॉ होतीं। वे तेरह देशों में घूमते फिरे तो उनको एक बहुत ही सीधी चढ़ाई वाला पहाड़ दिखायी दिया।

उस पहाड़ पर सफेद पत्थर का एक महल खड़ा था जिसके चारों तरफ ऊॅची ऊॅची दीवार थी। उसके लोहे के खम्भे और फाटक थे। उन्होंने गिने वे इकतालीस खंभे थे। उन्होंने अपने अपने घोड़े एक एक खम्भे से बॉध दिये और उस महल में घुस गये।

अन्दर उन्हें बाबा यागा मिली। वह बोली — "जिनको मैं ढूॅढ नहीं रही थी जिनको मैंने बुलाया नहीं था ऐसे मेहमानों तुम लोगों ने अपने घोड़े मेरे महल के खम्भों से बॉधने की हिम्मत कैसे की।"

"छोड़िये भी ओ बुढ़िया माई, आप किस बात की शिकायत कर रही हैं। पहले तो आप हमें कुछ खाना पीना दीजिये। फिर हमको नहाने की जगह दिखाइये फिर हमारा हाल पूछिये और उसके बाद जो कुछ पूछना हो वह पूछिये।"

सो बाबा यागा ने उनको खाना खिलाया शराब पिलायी। उनको नहाने की जगह ले गयी। उसके बाद उसने उनसे पूछा — "क्या तुम लोग किसी काम से आये हो या फिर काम से बचने के लिये आये हो।"

वे बोले — "हम लोग यहॉ काम से आये हैं दादी मॉ।"

"तुम्हें क्या काम है।"

"हम अपने लिये दुलहिनें ढूँढने आये हैं।"

इस पर बाबा यागा बोली — "मेरे पास लड़कियॉ हैं।"

कह कर वह अपने बड़े बड़े कमरों में चली गयी और वहॉ से इकतालीस लड़कियॉ ले कर आ गयी। वहॉ उनकी शादी हो गयी और सब लोगों ने दावत खायी।

जब शाम हो गयी तब ज़मोरीशैक बाहर अपने घोड़े को देखने के लिये गया। उसके घोड़े ने भी उसे देखा और आदमी की आवाज में बोला — "मालिक जब आप सब अपनी पत्नियों के साथ सोयें तो आप उनको अपने कपड़े पहना दीजियेगा और उनके कपड़े आप लोग पहन लीजियेगा नहीं तो आप मारे जायेंगे।"

सुन कर वह चला गया और अपने भाइयों को यह बात बता दी। रात हुई और सब सोने चले गये। केवल ज़मोरीशैक जागता रहा। आधी रात को बाबा यागा बहुत ज़ोर से चीखी — "ओ मेरे वफादार नौकरों मेरे बिन बुलाये मेहमानों के सिर काट दो।"

तुरन्त ही उसके नौकर दौड़े और उन्होंने लड़कियों को लड़का समझ कर उन सबके सिर काट दिये। ज़मोरीशैक ने फिर अपने भाइयों को उठाया और उन्हें बताया कि क्या हुआ था।

उन सबने उन इकतालीस लड़कियों के सिर अपने अपने साथ लिये और बाहर लगे खम्भों पर रख दिये और वहॉ से अपने अपने घोड़ों पर भाग लिये।

सुबह को जब बाबा यागा उठी तो उसने अपनी छोटी से खिड़की से बाहर देखा तो देखा कि उसके खम्भों पर तो सिर लगे हुए हैं। यह देख कर वह बहुत गुस्सा हुई।

उसने तुरन्त ही अपनी आग वाली ढाल को बुलाया और कूद कर उनके पीछे पीछे चल दी। वह सब दिशाओं में अपनी आग वाली ढाल को घुमाती हुई चली जा रही थी।

अब वे नौजवान कहॉ छिपें। उनके सामने था नीला समुद्र और उनके पीछे थी बाबा यागा। वह अपनी उस आग वाली ढाल से अपने रास्ते में आती सब चीज़ों के जलाती चली आ रही थी। इसलिये उनको भी मर जाना पड़ जाता।

पर ज़मोरीशैक एक होशियार आदमी था। वह बाबा यागा का रूमाल लेना नहीं भूला था। उसने वह रूमाल अपने सामने हिलाया कि सारे उत्तरी समुद्र के ऊपर एक पुल बन गया। सब नौजवान सुरक्षित रूप से उस समुद्र के पार उतर गये।

उसके बाद ज़मोरीशैक ने वही रूमाल अपने बॉये हाथ की तरफ हिलाया तो वह पुल गायब हो गया। अब बाबा यागा उस समुद्र को पार नहीं कर सकी तो उसको वहॉ से वापस जाना पड़ा। सब भाई लोग सुरक्षित अपने घर पहुँच गये।

11 राजकुमार डेनियल के हुक्म से[79]

एक बार की बात है कि एक जगह एक बड़ी उम्र की रानी रहती थी। उसके दो बच्चे थे एक बेटा और एक बेटी। उसके दोनों बच्चे बहुत सुन्दर और मजबूत थे। पर वहॉ एक बुरी जादूगरनी[80] भी रहती थी। वह यही सोचती रहती थी वह उनको उनके राज्य से कैसे बाहर निकाले।

सो एक दिन वह रानी मॉ के पास गयी और बोली — "प्रिय बहिन मैं तुम्हें यह अॅगूठी देती हूॅ। इसको अपने बेटे की उॅगली में पहना देना इससे वह बहुत दयालु और अमीर हो जायेगा। इसके अलावा उसको किसी ऐसी लड़की से शादी करनी चाहिये जिसकी उॅगली में यह अॅगूठी फिट आ जाये।"

रानी मॉ ने उसका विश्वास कर लिया और वह वह अॅगूठी ले कर बहुत खुश हो गयी। जब वह मर रही थी तो उसने अपने बेटे से कहा कि वह किसी ऐसी लड़की से ही शादी करे जिसकी उॅगली में यह अॅगूठी फिट आ जाये।

समय गुजरता गया। लड़का बड़ा होता गया।

---

[79] By Command of the Prince Daniel – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. This book is available at : https://books.google.ca/books?id=QssdAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false
This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales

[80] Translated for the word "Witch"

जब वह आदमी हो गया तब उसने अपनी शादी के लिये लड़की देखना शुरू किया। बहुत सारी लड़कियॉ उसे अच्छी लगीं पर जैसे ही वह उस अॅगूठी को उनकी उॅगली में पहना कर देखता तो देखता कि किसी की उॅगली में तो वह ढीली है तो किसी की उॅगली में वह आ ही नहीं रही है।

बेचारा क्या करता। वह अब गॉव गॉव शहर शहर घूमने लगा। इस बीच उसने बहुत सारी सुन्दर सुन्दर लड़कियॉ देखीं पर उसको अपनी वाली कहीं नहीं मिली। उदास सा वह घर लौट आया।

एक दिन उसकी बहिन ने पूछा — "भैया क्या बात है तुम इतने उदास क्यों हो?"

सो उसने उसको अपनी समस्या बतायी। अॅगूठी देखते ही वह बोली — "अरे तुम्हारी यह अॅगूठी तो बहुत अच्छी है। मैं पहन कर देखूॅ।" कह कर उसने उसे अपनी उॅगली में पहन कर देखा तो वह उसकी उॅगली में बिल्कुल फिट आ गयी, न छोटी न बड़ी।

"ओह बहिन तो तुम ही मेरी पत्नी हो जो मेरे लिये बनी है।"

"उफ़ यह तो बहुत ही अजीब सा विचार है। यह तो पाप है।"

पर लड़का जो कुछ वह कह रही थी उसकी बात सुन कर ही न दे। वह तो खुशी के मारे नाच उठा। वह बोला कि बस अब तुम शादी के लिये तैयार हो जाओ।

उसकी बहिन बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। घर के सामने चली गयी और वहाँ दहलीज़ पर बैठ कर रोने लगी।

उधर से दो भिखारी जा रहे थे तो उसने उनको कुछ खाने पीने के लिये दिया। उन्होंने उसको रोते देखा तो उससे पूछा कि "बेटी क्यों रोती हो? तुम हमें बताओ तो सही।" उसने उनको सब बता दिया।

वे बोले — "अब तुम्हें रोने की जरूरत नहीं है। अब जैसा हम कहते हैं तुम वैसा ही करो। तुम चार गुड़ियाँ बनाओ और उनको कमरे के चारों कोनों में रख दो।

जब तुम्हारा भाई तुमको शादी के लिये बुलाये तो चली जाना और अगर वह तुमको दुलहिन वाले कमरे में बुलाये तो उससे थोड़ा सा समय माँगना। भगवान पर विश्वास रखना और हमारी सलाह मानना।"

कह कर वे चले गये। भाई और बहिन की शादी हो गयी। अब भाई ने दुलहिन के कमरे में पहुँच कर उसको पुकारा — "आओ बहिन आओ।"

बहिन बोली — "मैं अभी आती हूँ ज़रा मैं अपने कान के बुन्दे उतार लूँ।"

तभी कमरे के चारों कोनों में रखी हुई चारों गुड़ियों ने गाना शुरू कर दिया —

कू कू राजकुमार डेनिलो कू कू गोवोरिलो
कू कू यह एक भाई है कू कू जो बहिन से शादी कर रहा है
कू कू धरती फट जाये कू कू और बहिन उसमें समा जाये

तभी धरती ऊपर को उठी और धीरे से बहिन को निगल गयी। भाई फिर चिल्लाया — "बहिन आओ इस पंख के बिस्तर पर आओ।"

बहिन फिर बोली — "एक मिनट मैं ज़रा अपनी कमर की पेटी निकाल रही हूँ।" तभी कमरे के चारों कोनों में रखी हुई चारों गुड़ियों ने फिर गाना शुरू कर दिया —

कू कू राजकुमार डेनिलो कू कू गोवोरिलो
कू कू यह एक भाई है कू कू जो बहिन से शादी कर रहा है
कू कू धरती फट जाये कू कू और बहिन उसमें समा जाये

इस बार उसका केवल सिर ही बाहर दिखायी देता रहा बाकी की वह पूरी की पूरी जमीन के अन्दर धँस गयी। भाई फिर चिल्लाया — "बहिन आओ इस पंख के बिस्तर पर आओ।"

बहिन बोली — "बस एक मिनट मैं अपने जूते उतार लूँ।" गुड़ियें फिर गाने लगीं और इस बार वह सारी की सारी धरती में समा गयी। भाई चिल्लाता रहा चिल्लाता रहा चिल्लाता रहा।

जब वह काफी देर तक नहीं आयी तो वह बहुत गुस्सा हो गया और उसको लाने के लिये भागा तो उसने देखा कि कमरे में तो कोई

नहीं था केवल चार गुड़ियें रखी हुई थीं कमरे के चारों कोनों में। वे अभी भी गा रही थीं।

उसने उनके सिर आपस में टकराये और उनको आग में फेंक दिया।

उधर बहिन धरती के अन्दर चलती चली गयी तो उसको एक झोंपड़ी दिखायी दी जो एक मुर्गे की टॉग पर खड़ी हुई और चारों तरफ घूम रही थी। उसको देख कर वह चिल्लायी — "ओ झोंपड़ी रुक जा तू अपना पिछवाड़ा जंगल की तरफ कर के खड़ी हो जा।"

उसके यह कहते ही झोंपड़ी अपनी पीठ जंगल की तरफ कर के खड़ी हो गयी और दरवाजा खोल दिया। उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की निकली जो सोने और चॉदी के तारों से कोई कपड़ा बुन रही थी।

उसने अपने मेहमान को बहुत प्रेम से नमस्कार किया पर एक लम्बी सॉस ले कर बोली — "मेरी प्यारी बहिन। मैं तुझे देख कर बहुत खुश हूॅ और तेरी देखभाल कर के और भी ज़्यादा खुश होती पर केवल तब तक के लिये जब तक मेरी मॉ यहॉ नहीं है। पर जैसे ही वह उड़ कर यहॉ आयेगी तो बस यह जान लो कि तुम्हारे और मेरे दोनों के लिये दुखदायी होगी। क्योंकि वह एक जादूगरनी है।"

लड़की ने जब यह सुना तो वह तो बहुत डर गयी पर वह वहॉ से कहीं भाग नहीं सकी। सो वह उसके पास ही बैठ गयी और दूसरी लड़की के काम में सहायता कराने लगी।

वे काम भी करती रहीं साथ में बातें भी करती रहीं। जैसे ही दूसरी लड़की की मॉ के आने का समय हुआ तो उसने अपने मेहमान को एक सुई में बदल दिया। उसको एक कपड़े में लगा कर एक तरफ को रख लिया।

जैसे ही उसने यह किया कि बाबा यागा अन्दर घुसी। आते ही वह बोली — "मेरी सुन्दर बेटी, मेरी प्यारी बच्ची मुझे यह तो बता तेरे कमरे में रूसी की हड्डियों की बू कहॉ से आ रही है।"

लड़की बोली — "मॉ अभी थोड़ी देर पहले ही यहॉ कुछ अजीब आदमी पानी पीने के लिये रुके थे।"

"तो तूने उन्हें पकड़ कर क्यों नहीं रखा।"

"मॉ वे बहुत बूढ़े थे। तुम्हारे दॉतों के लिये बहुत सख्त थे।"

बाबा यागा बोली — "ठीक है पर आगे से अगर कोई आये तो तू उसको पकड़ कर रखा कर और उसको कभी मत जाने दिया कर। मैं अब कोई दूसरा शिकार करने जाती हूॅ।" कह कर वह फिर उड़ गयी।

जैसे ही वह वहॉ से गयी उस लड़की ने अपने मेहमान को सुई से लड़की में बदल दिया। वे फिर अपनी बुनाई करने लगीं और साथ में बातें करने लगीं और हॅसने लगीं।

तभी वह जादूगरनी उस कमरे में एक बार फिर आयी। उसने घर में इधर उधर कुछ सूँघा और बोली — "बेटी मेरी प्यारी बेटी मुझे तुरन्त बता कि यह रूसी हड्डियों की बू कहाँ से आ रही है।"

लड़की बोली — "कुछ बूढ़े लोग अपने हाथ गर्म करने के लिये यहाँ आये थे। तुम्हारे कहे अनुसार मैंने उनको रोकने की कोशिश की पर वे रुके ही नहीं।"

लड़की की इस बात पर माँ बहुत नाराज हुई उसे बहुत डाँट लगायी और फिर वापस उड़ गयी। इस बीच पहले की तरह से उस लड़की ने अपने मेहमान को सुई के रूप में ही रखा हुआ था। माँ के जाने के बाद वे दोनों फिर बुनने बातें करने और हँसने के लिये बैठ गयीं।

अब वे दोनों यह बात कर रही थीं कि इस जादूगरनी से कैसे बचा जाये। इस बार बातों बातों में वे समय ही भूल गयीं। अचानक ही बाबा यागा उनके सामने आ कर खड़ी हो गयी और बोली — "मेरी प्यारी बेटी मुझे बता तो सही कि रूसी हड्डियों की बू कहाँ से आयी।"

अब तो वह झूठ नहीं बोल सकती थी सो बोली — "माँ यह सुन्दर लड़की तुम्हारा इन्तजार कर रही है।"

बाबा यागा बोली — "जा मेरी बच्ची जा कर ओवन तो गर्म कर। और हाँ देखना उसे अच्छी तरह गर्म करना।"

मेहमान ने ऊपर की तरफ देखा तो डर के मारे कॉप गयी क्योंकि बाबा यागा अपनी लकड़ी की टॉगों पर उसके सामने ही खड़ी थी। उसकी नाक उसके कमरे की छत से भी ऊँची जा रही थी।

सो मॉ बेटी आग जलाने के लिये लकड़ियॉ ले कर आयीं – ओक और मैपिल[81] की लकड़ियों के लट्ठे। उन्होंने उनमें आग लगायी और तब तक इन्तजार किया जब तक वह ओवन खूब गर्म नहीं हो गया।

उसके बाद बाबा यागा ने अपना फावड़ा उठाया और दोस्ती की आवाज में कहा — "आजा मेरी प्यारी बच्ची आजा मेरे फावड़े पर बैठ जा।"

लड़की ने उसका कहना माना तो बाबा यागा उसको भट्टी में डालना चाह रही थी कि लड़की ने अपने टॉगें भट्टी की दीवार से जमा दीं। बाबा यागा ने पूछा — "बेटी क्या तू चुपचाप बिना हिले डुले बैठ सकती है?"

पर उसकी इस बात का उस पर कोई असर नहीं हुआ। बाबा यागा उस लड़की को ओवन में नहीं रख सकी। इससे वह और बहुत नाराज हो गयी।

उसने उसकी पीठ पर धक्का मार कर उसको ओवन में धकेलने की कोशिश की और कहा — "तू बेकार में ही समय बर्बाद कर रही

[81] Logs of Oak and Maple trees

है। तू मेरी तरफ देख और देख कि इस फावड़े के ऊपर कैसे बैठा जाता है।"

कह कर वह नीचे फावड़े पर बैठ गयी और अपने दोनों घुटने एक साथ अपनी छाती तक मोड़ लिये। बस जैसे ही वह उस तरीके से फाावड़े पर बैठी कि दोनों लड़कियों ने मिल कर उसको ओवन में धकेल दिया।

ओवन का दरवाजा ज़ोर से बन्द किया जिससे वह ओवन के बिल्कुल अन्दर चली गयी। अपनी अपनी बुनाई ली अपनी अपनी कंघी और ब्रश लिये और वहॉ से भाग लीं।

वे बड़ी मुश्किल से भाग रही थीं कि एक बार उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि बाबा यागा तो उनके पीछे पीछे आ रही थी। वह ओवन में से किसी तरह बच निकली थी और चिल्लाती जा रही थी – "हू हू हू देखो वे दोनों जा रही हैं।"

सो लड़कियों ने मजबूरी में अपना ब्रश अपने पीछे फेंक दिया। इससे उनके और बाबा यागा के बीच एक बहुत ही घना जंगल पैदा हो गया जिसको बाबा यागा पार नहीं कर सकती थी। सो उसने अपने पंजे फैलाये अपने आपको खुजलाया और फिर भाग चली।

अब वह बेचारी दोनों लड़कियॉ कहॉ भागें। इस बार उन्होंने अपने कंघे अपने पीछे फेंक दिये। इससे उन दोनों के बीच एक बहुत ही बड़ा घना और अॅधेरा जंगल पैदा हो गया कि कोई मक्खी भी उड़ कर उसे पार नहीं कर सकती थी।

यह देख कर जादूगरनी ने अपने दॉत किटकिटाये और फिर पीछा करने लगी। वह अब एक के बाद एक हर पेड़ को तोड़ती हुई चली जा रही थी। इस तरह से उसका रास्ता बनता हुआ चल जा रहा था। वह उनको पकड़ने ही वाली थी।

जबकि लड़कियों में अब भागने की ताकत बिल्कुल नहीं बची थी सो उन्होंने अपने पीछे अपना एक कपड़ा फेंक दिया। इससे उन दोनों के बीच में एक बहुत बड़ा गहरा चौड़ा और आग का समुद्र बन गया।

बुढ़िया उठ कर उसे पार करना चाहती थी पर उसने जैसे ही उठ कर उसे पार करना चाहा तो वह खुद ही उस आग के समुद्र में गिर पड़ी और जल कर मर गयी।

बेचारी लड़कियॉ अब बेघर की हो गयी थीं वे नहीं जानती थीं कि वे अब कहॉ जायें। भागते भागते वे थक गयी थीं सो वे एक जगह आराम करने के लिये बैठ गयीं।

एक आदमी उधर से गुजर रहा था तो दो लड़कियों को अकेला बैठा देख कर उसने उनसे पूछा कि वे कौन थीं। उसने अपने मालिक से जा कर कहा — "मालिक आपके राज्य में दो छोटी छोटी चिड़ियें उड़ कर आ गयी हैं। दोनों बहुत सुन्दर हैं और देखने में बिल्कुल एक सी लगती हैं ऑखों में और बनावट में सभी तरह से।"

उसने उनको देखा तो उनमें से एक तो उसकी बहिन थी, पर कौन सी। यह वह नहीं बता सका। इसका मतलब साफ था कि

उसके नौकर ने झूठ नहीं बोला था पर वह क्या करता वह तो जानता ही नहीं था।

बहिन उससे गुस्सा थी पर कुछ कह नहीं पा रही थी। मालिक ने कहा "अब मैं क्या करूँ।"

नौकर बोला — "सरकार मैं एक खाल में थोड़ा सा खून भर लेता हूँ और उसको आपकी बगल में छिपा देता हूँ। फिर आप उन दोनों से बातें करिये। इस बीच में मैं आपकी बगल में एक चाकू मारूँगा तो उसमें से खून टपक पड़ेगा तभी आपकी असली बहिन अपने आपको बता देगी।"

मालिक बोला — "यह ठीक है।"

जैसे ही यह करने की सोचा गया उतने ही जल्दी कर भी दिया गया। नौकर ने अपने मालिक की बगल में कई बार चाकू मारा तो उसकी बगल से खून बह निकला और वह गिर पड़ा।

यह देख कर उसकी असली बहिन उठ कर उसके पास पहुँच गयी और चिल्लायी "भैया भैया।"

यह सुन कर मालिक हँसी खुशी तन्दुरुस्त उठ गया और अपनी बहिन को गले लगा लिया। बाद में उसने एक अच्छा लड़का देख कर उसकी शादी कर दी।

उसने खुद ने उसकी दोस्त से शादी कर ली क्योंकि उसका नाप तो सब वैसा ही था। उसके बाद सब लोग हँसी खुशी रहे।

12 शूफ़िल फ़िल्यूष्का[82]

एक बार की बात है कि एक जगह एक परिवार में तीन भाई रहते थे। एक का नाम था रैम यानी भैंसा, दूसरे का नाम था गोट यानी बकरा और तीसरे सबसे छोटे का नाम था शूफ़िल फ़िल्यूष्का।

एक दिन तीनों भाई जंगल गये। वहाँ एक पहरेदार रहता था जो उनका असली बाबा था। रैम और गोट ने अपने सबसे छोटे भाई शूफ़िल को बाबा के पास छोड़ा और वे जंगल में शिकार करने चले गये। फ़िल्यूशा अब अकेला रह गया सो अब वह अपनी मरजी का मालिक था।

उसका बाबा बहुत बूढ़ा था और कुछ बेवकूफ था। फ़िल्यूष्का बहुत ही दयावान बच्चा था। वह एक सेब खाना चाहता था। सो वह अपने बाबा की आँख बचा कर एक बागीचे में घुस गया और एक सेब के पेड़ पर चढ़ गया।

अचानक ही, भगवान जाने कहाँ से, वहाँ कौन आ गया? यागा बूरा[83]। अपने हाथ में लोहे का मूसल लिये हुए लोहे की ओखली में बैठी हुई वह

[82] Chufil Filyushka – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916. This book is available at : https://books.google.ca/books?id=QssdAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false
This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales

[83] Yaga Bura is equivalent to Baba Yaga. See Baba Yaga's picture above.

सेब के पेड़ पर ऊपर तक चढ़ आयी और बोली — "कैसे हो फ़िल्यूष्का? यहाँ तुम किसलिये आये हो?"

फ़िल्यूष्का बोला — "बस एक सेब तोड़ने के लिये।"

यागा बूरा बोली — "तब एक कौर मेरे सेब का भी खा लो।"

"नहीं वह तो सड़ा हुआ है।"

यागा बूरा फिर बोली — "तो यह लो यह दूसरा खा लो।"

"इसमें तो कीड़े पड़े हैं।"

यागा बूरा बोली — "नखरे मत करो। मेरे हाथ से यह सेब लो और खा लो।"

सो उसने अपना हाथ बढ़ाया तो यागा बूरा ने उसका हाथ कस कर पकड़ लिया और उसको अपनी ओखली में उठा कर रख लिया। पहाड़ियों जंगलों मैदानों के ऊपर से कूदती हुई वह अपनी ओखली मूसल से चलाती हुई तुरन्त ही उड़ चली।

तब फिल्यूष्का को होश आया तो वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगा और चीख चीख कर अपने भाइयों को पुकारने लगा — "ओ गोट ओ रैम जल्दी आओ। यागा मुझे ऊँचे ढालू पहाड़ों और काले घने अँधेरे जंगलों और घास के मैदानों के ऊपर से जहाँ बतखें घूमती हैं हो कर लिये जा रही है।"

इत्तफाक से रैम और गोट तब आराम कर रहे थे। एक जमीन पर लेटा हुआ था और उसने यह चिल्लाने की आवाज सुनी तो उसने दूसरे से कहा — "ज़रा यहाँ आ कर लेटो और सुनो।"

उसने वैसा ही किया तो वह बोला — "अरे यह तो अपना फ़िल्यूष्का है।"

वे तुरन्त ही उठे और आवाज के पीछे पीछे दौड़ने लगे। भाग भाग कर उन्होंने यागा बूरा को नीचे उतार लिया फ़िल्यूष्का को बचा लिया और बाबा के पास वापस लौट आये। यह सब देख कर उनके बाबा का तो डर के मारे दिमाग ही घूम गया था।

उन्होंने फिर से फ़िल्यूष्का को बाबा को सौंपा और फिर से शिकार पर चल दिये।

फ़िल्यूष्का तो वाकई एक बच्चा ही था। उसको अपने भाइयों के जाने के बाद जैसे ही पहला मौका मिला वह फिर से सेब के पेड़ की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर वह फिर से पेड़ पर चढ़ गया पर वहॉ तो फिर से यागा बूरा थी और उसको सेब दे रही थी।

फ़िल्यूष्का बोला — "इस बार तू मुझे नहीं पकड़ सकती ओ बूढ़ी जानवर।"

यागा बूरा बोली — "अरे तू इतना बेरहम न बन। तू मुझसे एक सेब ले ले। मैं तुझे यह फेंक कर दे दूँगी।"

"ठीक है तो तू इसे नीचे फेंक दे।"

सो यागा बूरा ने वह सेब नीचे फेंक दिया। फिल्यूष्का ने उसे लेने के लिये अपना हाथ बढ़ाया तो तुरन्त ही यागा बूरा ने उसको पकड़ लिया और उसको ले कर उड़ चली – पहाड़ियों मैदानों अँधेरे

जंगलों के ऊपर। वह इतनी तेज़ उड़ रही थी कि उसको ऐसा लगा कि बस वह तो पलक झपकते ही उसके घर पहुँच गया।

वहाँ ले जा कर उसने उसको नहलाया धुलाया और एक बक्से में बन्द कर के चली गयी।

सुबह को वह फिर बाहर जाने को तैयार हुई तो उसने अपनी बेटी से कहा — "सुन ओवन को ठीक से गरम करना और शूफ़िल फ़िल्यूष्का को उसमें मेरे रात के खाने के लिये ठीक से भून कर रखना।" यह कह कर वह कोई और शिकार लाने के लिये चल दी।

उसकी बेटी गयी और ओवन को ठीक से गर्म किया। फ़िल्यूष्का को बाहर निकाला बाँधा और फावड़े पर रख कर वह उसको ओवन में डालने ही जा रही थी कि फ़िल्यूष्का ने अपने पैर से अपने माथे पर मारा।

यागा बूरा बोली — "फ़िल्यूष्का इस तरह से नहीं।"

वह बोला — "तो फिर किस तरह से। मैं समझा नहीं।"

"इधर देखो। बस इसको ऐसे ही जाने दो। मैं बताती हूँ तुमको।" वह गयी और फावड़े पर जैसे लेटा जाना चाहिये वैसे ही लेट गयी।

हालाँकि शूफ़िल छोटा था पर बेवकूफ नहीं था। उसने तुरन्त ही वह फावड़ा ओवन के अन्दर खिसका दिया और उसका दरवाजा एक झटके के साथ बन्द कर दिया।

दो तीन घंटे के बाद फ़िल्यूष्का को भुने हुए मॉस की सौंधी सौंधी खुशबू आयी तो उसने ओवन का दरवाजा खोला और उस यागा बूरा की भुनी हुई लड़की को बाहर निकाल लिया। उस पर मक्खन लगाया उसको एक कढ़ाई में रखा तौलिये से ढका और उसी बक्से में बन्द कर दिया जिसमें वह खुद बन्द था।

फिर वह छत वाले पेड़ पर चढ़ गया और यागा बूरा की ओखली और मूसल ले कर वहॉ से चल दिया।

शाम को यागा बूरा आयी तो सीधी उस बक्से के पास गयी और उसमें से भुना हुआ मॉस निकाल कर खाने लगी। सारा मॉस खा लेने के बाद उसने उसकी हड्डियॉ इकट्ठी कीं और उनको बागीचे में जा कर एक लाइन में रख दिया। फिर वह उन पर लोटने लगी।

पर किसी वजह से उसको अपनी बेटी नहीं मिली। उसने सोचा कि शायद वह पड़ोस की किसी झोंपड़ी में गयी होगी। पर जब वह उन हड्डियों पर लोट रही थी कि अचानक उसके मुँह से निकला — "ओह मेरी प्यारी बेटी तू आ और फ़िल्यूष्का की हड्डियों को लपेटने में मेरी सहायता कर।"

फ़िल्यूष्का दूर से चिल्लाया — "मॉ जी। आप लोटती रहें और फिर अपनी बेटी की हड्डियों पर खड़ी हो जायें।"

यह सुन कर यागा बूरा चिल्लायी — "अरे चोर तू अभी यहीं है। तू ज़रा रुक तो मैं अभी आती हूँ।"

पर छोटा शूफ़िल यागा बूरा की इस बात से बिल्कुल नहीं डरा। और जब यागा बूरा अपने दाँत किटकिटाते हुए जमीन पर धम धम चलते हुए छत पर पहुँची इसने बड़े ज़ोर से उसका मूसल लिया और पूरी ताकत से उसके माथे पर मार दिया। वह उसकी मार सह न सकी और नीचे गिर गयी।

फ़िल्यूष्का अब छत पर आ गया। वहाँ उसने कुछ बतखें उड़ती हुई देखीं तो उन्हें अपने पास बुलाया और कहा — "मुझे अपने पंख उधार दे दो। मुझे तुम्हारे ये पंख अपने घर जाने के लिये चाहिये।"

उन्होंने उसको अपने पंख दे दिये और वह उनके पंख लगा कर अपने घर चला गया।

पर उसके माता पिता तो बहुत देर से उसके घर वापस आने के लिये प्रार्थना कर रहे थे तो जब वह घर पहुँचा तो वे कितने खुश थे। उन्होंने भगवान की प्रार्थना की। बहुत दिनों तक खुशी खुशी ज़िन्दा रहे।

Some Books of Russian Folktales in English

1873 **Russian Folktales.** By William Ralston Shedden Ralston. 1873. 51 tales. Available at : https://archive.org/details/russianfolktales00ralsrich/page/n6/mode/1up

1946 **The Runaway Soldier and Other Tales.** By Fruma Gottschalk. 1946.

1980 **Russian Folk-tales.** Translated by Robert Chandler. Random House. 1980.

2000 **Russian Folk-tales.** Translated by James Riordan. OUP. 2000.

2018 **Vasilisa, the Terrible: a Baba Yaga story.** By April A Taylor.

Some Books of Russian Folktales in Hindi

1 Roos Ki Lok Kathayen-1 / by Sushma Gupta

2 Roos Ki Lok Kathayen-2 / by Sushma Gupta

3 Roosi Lok Katha Mala / by Sushma Gupta

4 Roosi Lok Kathayen. New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited. Hindi Translation Pragati Prakashan, 1960. 160 p. Available at the Web Site : https://www.scribd.com/doc/110410668/roosi-lok-kathayein-Russian-Folk-Tales-Hindi

5 Heere Moti – Soviet Bhoomi Ki Jatiyon Ki Lok Kathayen. New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited. 2010. 143 p. Available at the Web Site : https://archive.org/details/HeereMoti-Hindi-CollationOfSovietFolkTales

6 Roosi Lok Kathayen. By Hans Raj Rahbar. Prav Prakashan. 2016

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2021

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022